श्री गांधी-चरित-मानस

[महामना गोस्वामी तुलसीदासजी की अमर कृति श्री रामचरितमानस
के ढंग पर दोहा चौपाइयों के रूप में विश्ववन्द्य प्रातःस्मरणीय
राष्ट्रपिता महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधी की
अलौकिक तथा परमपुनीत जीवनी का काव्यमय
भाषा में विशद वर्णन]

लेखक

स्व० विद्याधर महाजन
एम. ए., पी. ई. एस.
पञ्जाब युनिवर्सिटी कालिज,
होशियारपुर

उत्तराधिकारिणी
श्रीमती विद्यावती महाजन
लक्ष्मी विला
सिविल लाइन्स
होशियारपुर

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

जालंधर और इलाहाबाद

जून १९५४] [मूल्य ५।।=)

प्रकाशक—
इंद्रचंद्र नारंग
हिन्दी-भवन
३१२ रानी मंडी
इलाहाबाद ३

प्रथम मुद्रण

मुद्रक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
कमल मुद्रणालय
३१२ रानी मंडी
इलाहाबाद ३

बापू के चरणों में

विनीत

विद्याधर

श्री गांधीचरित दिग्दर्शनः—

जनमे प्रथम गांधि सुखभौना, दूजे कीन अफ्रिक प्रति गौना।
तीजे चारु चरित्रबिकासा, चौथे सत्यप्रभाव प्रकासा॥
पञ्चम असहयोग कर साधन, छठे 'सुराज-देव' आराधन।
सप्तम सुभ सुतन्त्रता-लाहू, पै पुनि गांधीनिधनकृत दाहू॥
अस्टम गांधि-चरित-उपदेसू, बरनन कीन 'प्रसाद' बिसेसू।
गांधिचरित कर अस्ट सुपाना, अमरजियन सुभसरनि समाना॥

अमरजियन कर अस्टअस, मानव चढ़ि सोपान।
जीवत जग गौरव लहै, अन्तकाल निरवान॥

महात्मा गांधी

दांडी यात्रा से ठीक पहले की संध्या को

श्री जयचन्द्र विद्यालंकार के सौजन्य से उनकी पुस्तक

'इतिहास प्रवेश' से उद्धृत

प्रकाशक की सफाई

षष्ठ सोपान का १५वाँ दोहा कवि की पांडुलिपि के अनुसार ही छपा है। परन्तु पांडुलिपि भेज देने के बाद कवि ने मुझे लिखा था कि इस दोहे को बदल कर इस प्रकार छापा जाय—

उनिस सौ उनतीस सन, तिथि एकोत्तर तीस।
बरस अन्त स्वातन्त्रपन, लीनो कोटि बतीस॥

परन्तु मेरे प्रमाद से यह संशोधन न हो सका। इसके लिए मैं कवि तथा पाठकों के समक्ष क्षमाप्रार्थी हूँ। पाठकों से मेरी प्रार्थना है कि पुस्तक पढ़ना आरंभ करने से पहले उक्त संशोधन कर लें।

अगस्त १९५३ के अंत में पुस्तक के अन्तिम प्रूफ देख चुकने के बाद कवि ने श्रीयुत जयचन्द्र विद्यालंकार से 'इतिहास-प्रवेश' में छपा गांधीजी का डांडी-यात्रा का चित्र श्रीगांधीचरितमानस में उद्धृत करने की अनुमति माँगी तथा उनसे पूछा कि पुस्तक की प्रस्तावना लिखने के लिए किस विद्वान् से प्रार्थना की जाय। विद्यालंकार जी ने चित्र उद्धृत करने की अनुमति देते हुए प्रस्तावना लिखवाने के लिए श्रीयुत काका साहब कालेलकर का नाम सुझाया।

इस पर कवि ने ११ सितंबर को ऋषिकेश से मुझे लिखा—

"...प्रस्तावना-लेखक संबंधी उनका (विद्यालंकार जी का) सुझाव मुझे सर्वथा मान्य है और मैं समझता हूँ कि आपको भी ठीक जँचेगा। आप सीधे ही वि० अ० जी को अथवा काका साहब को छपी पोथी के फार्म भेजने का कष्ट स्वीकार करें तो मेरे विचार में अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि इससे समय की बहुत बचत हो जायगी।

मैं १४ सितम्बर को प्रातः यहाँ से चल कर हरद्वार में एक-दो दिन ठहर कर १६ के लगभग होशियारपुर पहुँच जाऊँगा। आप इस पत्र का उत्तर यहाँ न भेज कर होशियारपुर के पते पर भेजें।"

पत्र पाते ही मैंने छपी-पोथी के फर्मे काका साहब की सेवा में भेज दिये और कवि को होशियारपुर के पते पर पत्र लिखा कि काका साहब को

पत्र लिखें। उसके बाद और भी दो-तीन पत्र मैंने उन्हें लिखे, पर उत्तर न मिला। उनकी इस चुप्पी पर मैं हैरान था। ५ अक्टूबर को मुझे जालंधर से सूचना मिली कि 'महाजनजी का अचानक हृद्गति रुक जाने से देहान्त हो गया है। स्वर्गवास तो उनका कई दिन हुए हो चुका है, पर मुझे आज ही मालूम हुआ है।' और तब मैं समझ पाया कि '११ सितम्बर का पत्र कवि का अन्तिम पत्र था।

कवि के जीवनकाल में उनकी पुस्तक प्रकाशित न हो पाई, इसका मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। परन्तु कवि की इच्छा के अनुसार मैंने काका साहब से पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की प्रार्थना की। विद्यालंकारजी ने भी काका साहब से अनुरोध किया। विद्यालंकारजी के बहुत दबाव डालने पर काका साहब ने प्रस्तावना लिखना स्वीकार भी कर लिया। परन्तु आज तक वे इस काम के लिए समय न निकाल सके। अंत में मुझे उनके मंत्री का निम्नलिखित पत्र मिला—

'पूज्य श्री काका साहेब को बड़ा अफसोस है कि डिसेम्बर के अंत तक तो वे 'गांधीचरितमानस' की प्रस्तावना नहीं लिख सकेंगे क्योंकि पिछड़े वर्ग कमिशन के काम में वे बिलकुल फंसे हुए हैं। इस लिए पुस्तक का प्रकाशन अभी रोकना ठीक नहीं होगा।'

काका साहब देश की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्या—पिछड़े वर्ग की समस्या—को सुलझाने में व्यस्त हैं। उनके सुझाव के अनुसार इस समय पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। पर जब भी वे फुरसत पा कर इस पुस्तक पर अपने विचार प्रकट करेंगे, उनको पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जायगा।

पुस्तक में व्यक्त हुए भाव और विचार कवि के हैं, प्रकाशक का उनसे सर्वत्र सहमत होना अनिवार्य नहीं।

२२-५-५४

इंद्रचंद्र नारंग

विषय-सूची

पूना-समझौता, २६ सितम्बर को उपवास समाप्त, मई १६३३ में रिहाई। सेवाग्राम आश्रम की स्थापना। १६३७ में कांग्रेस का पद-ग्रहण, प्रान्तों में कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों की स्थापना, महात्मागांधी का जिन्ना से मिल कर कांग्रेस के प्रति सद्भावना उत्पन्न करने का निष्फल प्रयत्न, कांग्रेस के सभापतिपद के निर्वाचन में बाबू सुभाषचन्द्र तथा पट्टाभि सीतारमैया में प्रतिद्वन्द्विता, सुभाष की प्रधानपद-प्राप्ति, फिर पद-त्याग तथा अग्रगामी दल (Forward Bloc) की स्थापना, राजकोट में महात्मा जी का आमरण अनशन, वायसराय के हस्ताक्षेप से ४ दिन बाद समाप्त, ८ नवम्बर १६३६ को कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों द्वारा पद-त्याग।

३ सितम्बर १६३६ को द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ, जर्मनी के तानाशाह हिटलर की विजय-परम्परा से अंग्रेजों की व्याकुलता, भारत-सरकार की युद्धसामग्री तथा सैन्य-संग्रह के लिए उद्विग्नता, कांग्रेस का जनमत के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने से इनकार, महात्मा जी का जिन्ना से मिल कर कांग्रेस-लीग समझौते के लिए निष्फल प्रयत्न। १६४०—लाहौर में लीग-अधिवेशन-पाकिस्तान प्रस्ताव पास। १६४१—जर्मनी-इटली-जापान संघ की युद्ध में विलक्षण प्रगति। चर्चिल-रुजवेल्ट-संधि। १६४२ कांग्रेस का फिर से महात्मा जी द्वारा नेतृत्व क्रिप्स मिशन तथा उसकी असफलता, ८ अगस्त को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास, कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी, आगाखाँ के महल में म० गांधी, कस्तूराबाई व महादेव देसाई को कारावास, देश भर में सरकार की प्रचण्ड दमन नीति के विरुद्ध आन्दोलन, समाजवादी नेता बाबू जयप्रकाश नारायण, अरुणा

आसफअली अच्युत पटवर्धन आदि का हिंसामय आन्दोलन। अग्रगामी दल के नेता सुभाष बाबू का वेष बदल कर अंग्रेजों की कैद से निकल कर जर्मनी पहुँचना और वहाँ आज़ाद हिन्द फौज तैयार करना, जापानियों का सिंगापुर पर अधिकार तथा वर्मा-विजय, सुभाष बाबू की उनसे सन्धि तथा भारत-विजय का प्रयत्न, आज़ाद हिन्द सेना का पुनः निर्माण वा संगठन, रूस तथा अफ्रीका में जर्मन सेनाओं के भाग्य का पासा पलटा, मित्र राष्ट्रों—अमरीका वा इंगलैंड—के लिये निराशा में आशा का प्रादुर्भाव, आज़ाद हिन्द फौज की पराजय, नेता जी सुभाष की मृत्यु, आ० हि० फौ० के अफसरों को कारावास। १९४४—फरवरी २२ को माता कस्तूराबाई का देहान्त, बंगाल में भीषण अकाल, श्री राजगोपालाचार्य की जिन्ना से भेंट तथा समझौते का निष्फल प्रयत्न, ६ मई को म० गाँधी की कारागृह से मुक्ति, गाँधी-जिन्ना वार्तालाप। १९४५—लार्ड वेवल की अभिभावकता में शिमला कान्फ्रैंस, साम्प्रदायिक दलों के नेताओं के मतभेद के कारण असफलता, पहले जर्मनी और फिर जापान का पराजय, इङ्गलैंड में चर्चिल मंत्रि-मंडल का पराजय तथा समाजवादी एटली के मन्त्रि-मण्डल की स्थापना। १९४६—कैबिनट (Cabinet) मिशन—सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स, मिस्टर एलैग्जैण्डर और पैथिक लारैन्स नामक ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के तीन सदस्यों का भारत में आगमन, देहली कान्फ्रैंस—कैबिनट मिशन की स्कीम—उसकी असफलता, पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अन्तरिम शासन की स्थापना—मुसलिम लीग द्वारा उसका बहिष्कार, १६ अगस्त को मुसलिम लीग द्वारा 'सीधी कार्यवाही' (Direct Action) दिन का मनाया जाना,

देशभर में साम्प्रदायिक दंगे, बंगाल में हिन्दुओं पर मुसलमानों के भीषण अत्याचार—म० गांधी का नवाखाली (पूर्वी बंगाल का एक जनपद) का दौरा, भ्रातृ-भाव की शिक्षा ; अखिल-एशियाई-देशों की देहली में कान्फ्रैंस, नेहरू-लियाकत मन्त्रिमण्डल का अन्तरिम शासन—१५ अगस्त, १६४७ को स्वतन्त्रता दिवस समारोह, लार्ड माऊंटबैटन की गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति, बाबू राजेन्द्रप्रसाद का राष्ट्र-अधिप होना तथा पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में सर्वदल सम्मिलित मन्त्रिमण्डल की स्थापना, स्वतन्त्रता-समारोह के उल्लासजनक अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की नवाखाली में पैदल यात्रा तथा सत्य वा अहिंसा के पवित्र मंत्र का प्रचार, स्वतन्त्रता-उत्सव के रंग में भंग, पञ्जाब तथा बंगाल के विभाजन के भीषण परिणाम, बंगाल (विशेषतः कलकत्ता) में महात्माजी की विद्यमानता तथा उनके प्रेम-सन्देश का अलौकिक प्रभाव—हिन्दु-मुसलमानों ने मिल कर ईद का उत्सव मनाया, १३ जनवरी १६४८ को देहली में अनशन व्रत—शांति-समिति द्वारा आश्वासन दिये जाने पर ५ दिन के पश्चात् व्रत की समाप्ति, एक पञ्जाबी शरणार्थी युवक का बिरलाभवन में बम फैंकना, सरदार पटेल का महात्माजी से अंगरक्षक-नियुक्ति के लिये अनुरोध, महात्माजी की अस्वीकृति, ३० जनवरी को नाथूराम विनायकराव नामक हत्यारे के हाथों राष्ट्र-पिता गांधी की अमरत्व-प्राप्ति, अन्त्येष्टि संस्कार, कांग्रेस नेताओं की व्याकुलता, श्रीराजगोपालाचार्य का इनको आश्वासन देना।

सार, देहली में प्रमुख कांग्रेस-नेताओं का समागम—गांधी-गुण-गौरव-गायन, कलि-काल वर्णन—वर्णाश्रम धर्म का उल्लंघन; सामाजिक, धार्मिक व नैतिक मर्यादा की हानि; अधर्म, अनीति तथा पाप का प्रसार, महात्मा गांधी के द्वारा धर्म का पुनरुद्धार, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, अन्य नेताओं की प्रार्थना पर, महात्मा गांधी के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शिक्षा सम्बन्धी तथा अन्य सार्वजनिक-हित-संबन्धी सिद्धान्तों की विशद व्याख्या करते हैं। गांधी-अनुमोदित वर्ण-व्यवस्था के सम्बन्ध में पण्डित नेहरू की शंका, राजन बाबू द्वारा उसका समाधान, श्रीमती अमृतकौर का महात्माजी की महिला-सुधार-मूलक कार्य शैली के सम्बन्ध में प्रश्न, राजन बाबू का उत्तर, महात्माजी के श्रमिक जन-उद्धार के कार्यक्रम के सम्बन्ध में जगजीवनरामजी का प्रश्न तथा उसका उत्तर, मौलाना अबुलकलाम का महात्माजी की शिक्षा-पद्धति के सम्बन्ध में प्रश्न और उसका उत्तर, सरदार बल्लभभाई पटेल का महात्माजी की धर्मनीति के सम्बन्ध में प्रश्न तथा राजन बाबू का उत्तर, महात्मा गांधी के रामराज्य-सम्बन्धी विचारों के सम्बन्ध में श्री राजगोपालार्य का प्रश्न तथा उसका उत्तर ; सब नेता मिल कर राजेन्द्रप्रसादजी, का धन्यवाद करते हैं और महात्मा गांधी के चरण-चिह्नों पर चलने का प्रण करते हैं।

महात्मा गांधी के सिद्धान्तों तथा उनके पावन चरित्र से प्राप्त होने वाली शिक्षाओं का संक्षेप से संग्रह।

॥ इति ॥

ॐ

मंगलाचरण ।

ईशवन्दना :—

व्यापक ब्रह्म एक अबिनासी, बिनु ब्रन स्नायु अतनु सुखरासी ।
पापरहित सुचि परम कबीसा, अज अबिकार बिभू जगदीसा ॥
नियमवान सिरजै जग सारा, सकल पदारथ सुबिधि सँवारा ।
सत चित अरु आनन्द सुहावा, जा कर भेद काहु नहिं पावा ॥
न्यायसील अरु परमदयाला, प्रनतपाल पातक जिन घाला ।
दुखनासक सुखदायक स्वामी, पापतापहर अन्तरजामी ॥
पुन्य - प्रभाउ ईस जगराया, सब जग मोह रही तुव माया ।
बिरचि जगत पालै अरु घालै, साजन-हित दानव-हिय सालै ॥

तेजपुंज परमेस्वर, पूरन परमानन्द ।
तुव प्रसाद पावहुँ प्रभो, कविता सक्ति अमन्द ॥१॥

तुव प्रसाद निरधन नृप होई, भूप अधन संपति सब खोई ।
तुव प्रसाद मृग केहरि मारै, छुद्र मसक गजराज पछारै ॥
तुव प्रसाद लोचन लहि अंधा, लखत समोद सकल जगधंधा ।
तुव प्रसाद गिरि-सेखर पंगू, धावहि तुरत रहत जग दंगू ॥
तुव प्रसाद पावत गिर मूका, पेखत भानु-प्रभा जड़ घूका ।
'गांधि'-बिमलजसजलधि अपारा, हौं प्रभु लघु इक मीन बिचारा ॥
चरित अथाह थाह किमि पावौं, मूढ़ जथामति गुनगन गावौं ।
अस करि कृपा देहु बरदाना, कारज सफल होय भगवाना ॥

'विद्याधर' मतिमंद हौं, 'गांधि'-चरन-रस-लीन ।
तुव प्रसाद बल पाय कै, 'चरित'-रचन चित दीन ॥२॥

गुरु-स्तुति :—

बंदौं गुरु-पद-पदम-परागा, जाके परस मोह-तम भागा।
ग्यान-प्रकास भयो मन माहीं, जा बल सकल बिकार नसाहीं॥
जिमि रवि-उदय तत्त्व प्रकटाहीं, सकल पदारथ सहज लखाहीं।
ग्यान-बिकास बिसद बुधि सोहै, राग-बिराग-नास मन मोहै॥
ग्यान-प्रभाकर तेज पसारी, मोह-मेघ सब देतु बिडारी।
आतम-बोध खडग कर लीने, अरि सटबरग मरदि तिन दीने॥
भवसागर अति अगम अगाधा, भय-संकुल पूरन बहु बाधा।
गुरुप्रसाद बोहित जिन कीना, सुख सन भवसागर तरि लीना॥

स्री गुरु पारस रूप सुभ, मम मानस त्रपु तूल।
कंचन सम निरमल करैं, काटि सकल भ्रम-मूल॥३॥

गुरुवर-तोस ग्यान-रवि जागे, मोहनिसाचर सत्वर भागे।
धरम-जलज कर होत बिकासा, सुजन-मधुप कर पूजत आसा॥
बिमल बिबेक सम्भु तनुधारी, मदन-सत्रु कहँ देत पजारी।
माधव-रूप सत्य पुनि धारै, मोह-रूप सिसुपाल पछारै॥
परसुराम-सम मन्यु उदारा, चाहत-कोप सहसभुज मारा।
बामन-रूप धारि संतोसा, छीनत सकल लोभ-बलि-कोसा॥
बिनय धारि रघुनायक-रूपा, मदमय हनत लंकपुरि-भूपा।
पुनि बिराग अरजुन-तनु धारै, अहमिति-रूप जयद्रथ मारै॥

चित्तनगर महँ चलत नित, देव-दनुज संग्राम।
दिवस-निसा अतिसै बिसम, बिजय देहिं स्रीराम॥४॥

ईशकृपामाहात्म्य :—

रामकृपा मुदमंगलमूला, छिन महँ हरत सकल भवसूला।
रामकृपा पावक सुखमूला, जारत पाप अनल जिमि तूला॥
रामकृपा सूरज - उजियारा, संसय-तिमिर सकल कर छारा।
रामकृपा ममता-निसि बीते, दुखमय सुपन नसहिं नर ही ते॥
रामकृपा सुभ मन्तर फूँका, नासत निखिल दरिद्-दंदसूका।
रामकृपामय बिमल मयंका, हरत बिसय-तस्कर-कृत संका॥
रामकृपा केहरि बलधारी, बृजिन-नाग कहँ देत पछारी।
रामकृपा - सुरसरि सुखदाई, नासत सकल पाप-समुदाई॥
जिमि पावक तृन जारई, भानु करत तम-नास।
सकल पाप-संताप तिमि, नासत रमा-बिलास॥५॥

कवि कामना :—

माँगहुँ सुभ असीस जगराया, समरथ देहु मोहि करि दाया।
गांधि-चरित सुभ चहहुँ बखाना, जा कहँ सुनि मोदहिं मतिमाना॥
सन्तजनन कर गुनगन गाई, मानस मोर मोद अति पाई।
सन्तचरित सुभ-सुमन-समाना, निज सुबास बासत हिय नाना॥
सन्तचरित जनु पीयुसधारा, मानस-मृत नवजीवन डारा।
सन्तचरित सूरज - सम सोहा, नासत तिमिर लोभमदमोहा॥
सन्तचरित भेसज सुखकारी, खलजनउरग-जनित -बिसहारी।
सन्तचरित कलिकिलबिखहारी, दुरित बिनासि देय फल चारी॥
सन्तचरित जनु बज्र सम, अघ-परबत कर नास।
सन्तचरित पुनि भानु-सम, साजन-नलिन-बिकास॥६॥

पूर्व कवि स्तुति :—

सतयुग ब्रह्म वेद उपजाया, ईस सुजस मन्त्रन महँ गाया।
त्रेता बालमीक मुनिराया, रामचरित रामायन गाया॥
द्वापर व्यास आय मुनिनाथा, रुचिर रची भारत कर गाथा।
कृस्नचरित - महिमा परकासी, सुरगनिसैनि पापतम - नासी॥
कलिजुग कालिदास मतिमाना, रामसुजस रघुबंस बखाना।
तुलसिदास उत्तम कविराया, रामचरित 'मानस' महँ गाया॥
'सागरसूर' सूर कवि कीना, केसवचरित सुधारस - भीना।
अवर अनेक सुकविजन आई, रामसुजस-महिमा सुभ गाई॥

तिन सों लहि सुभ प्रेरना, राम - चरन - रस-लीन।
रामभगत - गांधी - कथा, कहौं कुकवि मतिहीन॥७॥
प्रभुबरपुन्य - प्रसाद सों, सफल होय मम काम।
गांधी-जस-गाथा बिमल, लहै सुजन-उर धाम॥८॥

प्रथम सोपान

भारत देस निखिल-महि-मंडन , निज सुखमा नंदन-मद-खंडन ।
प्राकृत दृस्य इहाँ रमनीका , करहिं देस अवनी कर टीका ॥
सुन्दर सरि-सर-सैल सुहाये , रूप अनूप रसिक-मन भाये ।
बन उपबन मृदु साद्वल सोहैं , नयन-रुचिर दरसक मन मोहैं ॥
सुन्दर स्यामल रुचिर किदारा , करहिं कृसकमन हरख अपारा ।
पावस-सरद्-सिसिर-हिम-अन्ता , देयँ प्रमोद निदाघ-बसन्ता ॥
औसध-अन्न-फूल-फल-भारा , अस विधि प्रचुर न जाय सँभारा ।
कृत्रिम दृस्यहु परम सुहाये , रुचिर कला-चरमावधि पाये ॥

नभतलचुंबी सौध तहँ , देवालय अभिराम ।
राजपन्थ सुन्दर बिसद , उपबन ललित ललाम ॥१॥

कनक कलस सुर-मन्दिर सोहैं , धवल धाम दरसक मन मोहैं ।
अतिसै चहल पहल चहुँ ओरा , गाहक बनिक करहिं बहु सोरा ॥
सुन्दरबसन - अभूसन - धारी , फिरहिं बजार अभय पुरनारी ।
पुरजन सकल धरमब्रतधारी , चोर चकार न एक जुआरी ॥
तियसमाज पति-प्रेम-पुनीता , बिमलचरित जस गिरिजासीता ।
धरमनिरत भूसुर तहँ सोहैं , नरपति न्यायसील मन मोहैं ॥
बैस्य धरमजुत करहिं बिहारा , सेवाकरम सूद्र कहँ प्यारा ।
अस बिधि बसहिं सुखी पुरलोका , निज निज गेह त्यागि भय सोका ॥

सुरग-रूप तहँ प्रांत इक , गुर्जर नाम अनूप ।
सुखसंपति धनधान्य सों , देस-सिरोमनि-रूप ॥२॥

पुरबन्दर तहँ नगर सुहावा, सिन्धु समोद अंक तिहि लावा।
देस-बिदेस पोत बहु आये, भरि भरि बिबिध पदारथ लाये॥
हाटबाट बीथी पथ सारे, तोरन-केतु-बितान सँवारे।
परम प्रसन्न तहाँ नरनारी, पाय पदारथ मन-अनुसारी॥
'करमचन्द' तहँ सचिव सुहावा, 'गांधि'प्रमुख अति रुचिर सुभावा।
नगर प्रबंध सुबिधि तिन कीना, रिपुजनसीस चरन निज दीना॥
बनिक-बंस-अवतंससरूपा, परम उदार दानिकुलभूपा।
धरम-धुरन्धर परउपकारी, भूसुर-सुरभि-सन्त-हितकारी॥

सील-दया-संतोस-जुत, धरमसील गुनवन्त।
करमचन्द तियजुत लसै, सुखमा-सहित बसन्त॥३॥

रमनीरतन सकल गुनखानी, प्रेमप्रभाव कन्तहियरानी।
रतिसम रूप उमासम सीला, सुभग सची सम तेज रसीला॥
सारद सम प्रतिभा सुखदाई, ईस-प्रसाद अमित तिन पाई।
कमलासम सुभलच्छनवारी, ललनाप्रमुख भई बरनारी॥
निजगुनबस परिजन बस कीने, सेवा-बस बृद्धन मन छीने।
सखी जनन चित मोद बढ़ायो, तिन कहँ मुदित पेखि सुख पायो॥
मृदुल बिनीत उदार सुभाऊ, बसीकरन-मनि-तुल्य प्रभाऊ।
'पुतरिबाई' संग्या सुभ पाई, बिमल-प्रेम-प्रतिमा जग आई॥

करमचन्द कुल लच्छमी, सुन्दर तिय तनु धारि।
गुनपुतरि आई मनौ, तनमन सकल सँवारि॥४॥

करमचन्द निज भाग सराहैं, हरख-पयोधि सतत अवगाहैं।
समय पाय गृहतरु-फलफूला, संतति-रूप भये अनुकूला॥
करमचन्द-दम्पति दिन रूरे, बीतहिं सुख-वैभव सन पूरे।
निरखि तासु संपति दिनराती, मुदित मीत धरकत रिपुछाती॥

भोगहिं लौकिक भोग अनेका, पै नहिं तजहिं सुखद प्रभु टेका।
मानुस जे मतिमान सयाने, इन्द्रियदास न होयँ अयाने॥
नाविक जिमि ध्रुव पै टक बाँधे, थिर मन चलत चप्पु धरि कांधे।
तिमि साजन हरिचरनन माहीं, निसदिन निज अनुराज दृढ़ाहीं॥

प्रनतपाल जगदीसहू, तिन पै होय दयाल।
कायिक, बाचिक, मानसिक, सुख सों करै निहाल॥५॥

प्राकृतजन भौतिक सुख पाई, मानत मोद-प्रमोद अघाई।
लौकिक-सुखसम्पतिमदमाता, बिसरत सपदि ईस सुखदाता॥
पै हरि-भगत धरमरुचिवारे, रहत बिसय-करदम सों न्यारे।
हंस समान गहत गुन नीके, गनहिं जगत सुख संतत फीके॥
जिमि ध्रुव अटल गगनतल ठाढ़ा, तिन कर नेह ईस सन गाढ़ा।
निसठा अचल पेखि प्रभु वा की, राखत सीम न कछु ममता की॥
भगति-परायन तिन कहँ जानी, सुखसम्पति देवत मनमानी।
ता हित चित धरि दीनदयाला, नरतनु धरत प्रनत-प्रतिपाला॥

करमचन्द-पतनी परम धरमसील सतवन्त।
बिसय-बासना त्यागि कै, भजै भाव भगवन्त॥६॥

एक दिवस सुख-निद्रालीना, पुतरिबाई पतिप्रेमप्रबीना।
लखि इक मधुर नयनसुख सपना, अनुभव कीन मुदित मन अपना॥
हियमंडल महँ अमल प्रकासा, सरद-निसीथ-चन्द्रकर-हासा।
ता मधि नीलनलिनबपुधारी, सायुध सोहत प्रकट मुरारी॥
सस्मित कहत मृदुल अस बानी, भगतबछल करुनारसखानी।
लखि तुव संजमसील सुभाऊ, धरम-सनेह-भगतिजुत भाऊ॥
सीता-सम सुभ पति-पद-प्रेमा, बिसय-बिराग सुकृत-रतिनेमा।
अहहुँ मुदित बर-देवन कामा, मांगहु मनबांछित बर बामा॥

प्रभुपद-पंकज-जुगल महँ, नयन नलिन निज मेलि।
भावलीन रहि मौन तब, लाज न सकत सकेलि ॥७॥

करुनाकर बोले भगवाना, अभिमत तोर बच्छ मैं जाना।
लखि तुव भगति प्रीति मन मोरे, पूजहुँ सकल मनोरथ तोरे॥
इक तुव तनय होय मम रूपा, सुन्दर स्यामल मृदुल सरूपा।
सो मम भगत होय अति भारी, धरमनिरत संतत अघहारी॥
सत्य-अहिंसा-अटल-पुजारी, संजमसील धरमधुरधारी।
बिस्व-प्रेम कर परम उपासक, निगमतत्त्व कर बिसद प्रकासक॥
देस-समाज-धरमहितकारी, कुलदीपक होवहि असुरारी।
सत्यसंघ मरजादापालक, पापअनीतिअनृतकुल-घालक॥

बचन अमोघ सदैव मम, भगत-जनन-हितकारि।
सपदि होय तुव तनय सुभ, गो-द्विज-सुर-सुखकारि ॥८॥

अस कहि बचन मधुर रस साना, अंतरधान भये भगवाना।
पुतरिबाई निद्रा सों जागी, गनत आपु कहँ अति बड़भागी॥
मुदित चित्त भरता पहँ जाई, सुपन-कथा तिन सकल सुनाई।
करमचन्द सुनि तिय कर बानी, ईस-प्रसाद-मधुर-रस-सानी॥
मुदित भयो मानस महँ ऐसे, मुदित मयूर पयद लखि जैसे।
आपुन भाग सराहन लागा, तृसित पाय जस अमिय-तड़ागा॥
समय पाय सुभ अन्तरवतनी, रमनीरतन करमचँद-पतनी।
गूढ़ तेज सन सोहत कैसे, सीप लसत मुकतामय जैसे॥

छीनबदन सोहत परम, बनिता दोहद काल।
छीन छपाकर कर कला, जिमि सोहत सिव-भाल ॥९॥

लहि प्रसून बीरुध जस सोहै, निज सुखमा मानव-मन मोहै।
पुतरिबाई गोद लहि सूनू, सोभाधन पायो दिनदूनू॥

संवत* ऋतु कर निधि ओंकारा, सत्रह आस्विन सुभ सनि वारा।
करमचंद-पतनी सुत जायो, मानहु धरम देह धरि आयो॥
सुनि सुतजनम परम मनभावन, बाजे बिबिध बजाय बधावन।
मंगलगान करैं ललनागन, हरख प्रकास करैं बहु रागन॥
इस्टमित्र - परिजन - परिवारा, देयँ बधाई मुदित हिय द्वारा।
जाचक करमचंद गृह आये, सफल मनोरथ मुदित सिधाये॥

करमचंद निज सुकृत-फल, तनय-रूप सुभ पाय।
धन्यवाद दै ईस कहँ, दीनो दान अघाय॥१०॥

कुलगुरु कहँ संदेस पठावा, आगत निरखि चरन सिर नावा।
पाय निदेस जनम-संसकारा, कीने सकल बेद अनुसारा॥
जनमकाल ग्रहथिति निरधारी, जनमपत्र सिसु कर सुबिचारी।
कुलगुरु कहत सुनहु जजमाना, सिसु तव गुननिधि देव-समाना॥
सुचि संतोस-त्याग-तप-सीला, जानहि परम बिराग रसीला।
हिंसा - स्तेय - अनृत - परिहारी, अमित प्रभाउ सत्यब्रतधारी॥
निज गुन करम मनुज मन मोहै, जिमि मयंक राका-निसि सोहै।
मोहन नाम धरहु सिसु केरा, नाम जथागुन प्रभुवर प्रेरा॥

गुरुवर आयसु पाय कै, नामकरन सुभ कीन।
जगमोहन निज तनय कहँ, नाम सारथक दीन॥११॥

मृदुलमंच सोवत सिसु सोहै, आनन ललित मातु मन मोहै।
लखि लखि सूनुबदनजलजाता, अम्बहिये नहिं मोद समाता॥

---

* विक्रमी संवत् १९२६, महात्मा गांधी की जन्मतिथि (१७ आश्विन, १९२६) तदनुसार २ अक्तूबर १८६९ ई०। इस पुस्तक में महात्मा जी के जीवन काल की प्रसिद्ध घटनाओं के सम्बन्ध में अन्य सभी स्थलों में ईस्वी सन् का प्रयोग किया गया है।

जब सिसु नयन खोलि अवलोका, भयो मातु हिय निपट बिसोका।
अंक उठाय चूमि मुख माता, मधुर गिरा कह जीवहु ताता॥
बाढ़हिं बिधु लेखा इव अंगा, जननी हिय तिमि प्रेम-तरंगा।
घुटुरन चलत किलकि जब मोहन, तोतरि बात करत सुखदोहन॥
बाल-इन्दु-सम बदन निहारी, रूप अनूप मदन-मद-हारी।
इस्ट-जनन-मानस-मुदकारी, जननी-जनक जायँ बलिहारी॥

सिसु लीला करि मधुरतम, हरत बन्धु-जन-चित्त।
मुदित करत जननी हृदै, जिमि निरधन कहँ बित्त॥१२॥

बयस पाय सहचर लै साथा, मोहन करत केलि अरु गाथा।
पितु सन सुनि इतिहास-पुराना, आरज-धरम-मरम कछु जाना॥
मातपिता भूसुर करि जानौ, निज गुरुदेव देव-सम मानौ।
भाखहु साँच करहु सुभ-करमा, सार रूप अस मानव-धरमा॥
जनमभूमि भाखा अरु भेखा, इन सन प्रीति करहु सुबिसेखा।
तन-मन-धन-धरनी परिवारा, देस-धरम-हित चहियत वारा॥
राम प्रताप सिवा दसमेसा, सहे धरम हित कोटि कलेसा।
मातृभूमि जननी-सम जानी, ता हित प्रान देन कर ठानी॥

सप्त बरस बय पाय कै, 'गांधि' गयो चटसार।
निज गुन-गरिमा सों लसै, बिमल-चन्द्र-अनुहार॥१३॥

सात बरस साला महँ बीते, पाठन-पठन करत अति जी ते।
विद्या विविध पढ़हि मतिमाना, वस्तु अनेक तत्त्व तिन जाना॥
बरस चतुरदस बय जब पावा, मोहन-मातु-हृदै अस चावा।
ब्याहन जोग भयो मम मोहन, रूप अनूप सकल जगमोहन॥
पति सन आय कही मृदु बानी, पुत्रबधू इक सगुन सयानी।
रमनीरतन अमित गुनवारी, स्त्री-सम-रूप-बिलच्छन-धारी॥

आनहु गृहलच्छमि सम सोऊ, नारिप्रमुख गुनगन सन जोऊ।
ता छिन द्विजवर आय सुनावा, करन-सुधासम बच्न सुहावा॥

कसतूरी इक कन्यका, रूप-सील-गुन-वन्त।
जासु सुजस कसतूरि-सम, ब्यापै सकल दिगन्त॥१४॥

सुभलच्छन-जुत सरल सुभावा, नाम जथारथ जस जग छावा।
आनन निरखि अमल अकलंकू, होय सलज्ज ससंक मयंकू॥
रूपबिलास रुचिर तन छावा, रति-हिय डाह अमित उपजावा।
मोहन जोग सोऊ सुकुमारी, जोरि जुरै मनिकांचनवारी॥
करमचन्द जोरे जुग पानी, बिनय समेत कही मृदु बानी।
द्विजवर मान्य परम मत तोरा, मम हिय होत अनंद-बिभोरा॥
सपदि जाय जजमानहि प्रेरौ, कहहु दया करि मम प्रति हेरौ।
निज तनया-कर-दान-दया सों, करहु कृपा पावहुँ सुख जासौं॥

भूसुर-सम्मति पाय कै, कसतूरी के तात।
मोहन-हित मानी तुरत, सुतादान की बात॥१५॥

करमचन्द तब गनक बुलाये, पत्रा लखि तिन लगन सधाये
सुभ दिन सुभ घरि साजि बराता, समधी-सदन गयो मुदमाता॥
नृत्त गीत बाजे बिधि नाना, जनहिं प्रमोद न जात बखाना।
मंगलगीत - धुनी चहुँ ओरा, 'जयकुमार' 'जय दुलहिन' सोरा॥
देव असीस गगन सों करहीं, सुमन रूप 'मोहन' सिर परहीं।
इक तहँ मंडप परम सुहाना, अम्ब कदलिजुत रुचिर बिताना॥
ता मधि आसन सुबिधि सँवारे, बर-कन्या-हित सुन्दर डारे।
बंसपुरोहित सम्मुख बैठे, कन्याजनक बेदि महँ पैठे॥

अनलसाखि स्रुति-मंत्रजुत, परिनय-रीति असेस।
उभयपच्छ पूरन करी, पायो मोद बिसेस॥१६॥

गावहिं मधुर गीत कुलनारी, बर पै जाय सासु बलिहारी।
जननी धन्य तनय अस जाया, जिन निज बंस नाम उजराया॥
पुनि बरात कहँ भोज जिमाई, दुलहिन भूसन-बसन-सजाई।
बिभव-पदारथ बहु करि दाना, कन्या-मातु कहै मतिमाना॥
कसतुरि नाम परम सुकुमारी, दुहिता अहहि नाथ मम बारी।
मृदुल सुमनसम बिधुसम गोरी, परम सुसील बिसय-रस-भोरी॥
अब लगि नयनपुतरिसम राखी, साँच कहौं बिधि-हर-हरि साखी।
सो अब नाथ भई तुव थाती, रखहु सँभारि जथा नृप-पाती॥

समधि-जुगल अति प्रेम सों, मिलन परस्पर कीन।
धन्यबाद करि ईस को, सफल मनोरथ कीन॥१७॥

पुरबन्दर मुरि आई बराता, धाई तब पुलकित बर-माता।
सखिन-संग सुभ स्वागत कीना, बरबधु कहँ सुभ आसिस दीना॥
प्रेम-समेत गही बधु-पानी, बोली मधुर गिरा तियरानी।
धन्य घरी घर मोहन आयो, निरखि बधू लोचन-फल पायो॥
आउ सुता निज सदन सँभारो, होय मनोरथ सफल हमारो।
जनि कछु मानहु चित्त गलानी, निज पितुमातुसदनसम जानी॥
नरमनि ससुर जनक-सम तोरा, जननि-समान गनहु पद मोरा।
गुनसागर नागर मनमोहन, पूजा जोग देवसम मोहन॥

अचल होय अहिवात तव, कृपा करैं भगवान।
निजगुनगरिमा सों लसौ, रमनी-रतन-समान॥१८॥

समय पाय कसतुरि सुत जाया, जिमि रतनाकर ससि उपजाया।
रूप मनोहर पितुसमतूला, अंगविलास मदनमन भूला॥
भाल बिसाल धवल मन-मोहा, बिमल मयंक गगन जिमि सोहा।
लोचन लोल लसहिं रसपूरे, जल महँ सरहिं मीन बिय रूरे॥

बक्रनास सुक-तुंड सुहावा, करनलास कुण्डल मन-भावा।
आनन ललित जलज जिमि फूला, माता-मन-मधुकर लखि भूला॥
ललित ललाम सुतनु अति प्यारा, लखत बाल सुखमाकरसारा।
जननी जनक जायँ बलिहारी, सिसु चिरजीवि करैं त्रिपुरारी॥

पुरजन आय बधाय तब, करमचंद कहँ दीन।
मोदकमय निज कामना, हरखि हस्तगत कीन॥१९॥

संजमसील प्रेम-गुन-खानी, कसतुरि नारिरतन मृदु बानी।
सासु ससुर परिजन बस कीने, जननी जनक बन्धु सम चीने॥
प्रेम-प्रभाउ कन्त बस कीना, तासों अछल प्रेम बर लीना।
अस बिधि कतिपै बरस बिहाने, भोगत भोग सुखद मनमाने॥
काल कराल दीठि तब कीनी, करमचंद-आयुस हरि लीनी।
उठ्यो जठर इक सूल कराला, भभक उठी जिमि पावक ज्वाला॥
करहिं उपाय अनेक न लाहू, समन न होय बढ़त उर दाहू।
जा छिन मानुस आयुस छीजै, तहँ उपचार कवन विधि कीजै॥

ब्याधि-ताप तब पाय कै, करमचंद-तन छीन।
जग प्रपञ्च सों छूटि कै, भयो पंच तत लीन॥२०॥

हाहाकार मच्यो तहँ घोरा, निपट कठोर मीचु अस सोरा।
क्रन्दन करुन करहिं नरनारी, सोक प्रवाह न सकत सँभारी॥
आरजसुत भरता जियनाथा, अस कहि पतनि धुनत निज माथा।
पीटत उर खैंचत निज केसा, सोक-मलिन मन दूसित बेसा॥
खाय पछार परी छिति कैसे, बिटपपात मृदु बीरुध जैसे।
मोहन नयन बहत जलधारा, लोचनपन्थ द्रवत हियसारा॥
दारुन सोक-अनल हिय बाढ़ा, उस्न उसास धूम सम काढ़ा।
सोक-पयोधि तरंग बिसाला, चाहत धीरज-बोहित घाला॥

कुलगुरु अनुसासन कियो, ग्यान - बिराग - समेत।
सुखप्रद भेसज सम भयो, बिकल हृदै के हेत ॥२१॥

निगमागम इतिहास पुराना, हितकर रुचिर बिबिध उपखाना।
गीता जोग-बसिस्ठ सुनावा, धरम मरम बहु भाँति सुझावा॥
अमर जीव छिनभंगुर काया, बिस्व-प्रपंच प्रकट प्रभु-माया।
जिमि सैलूस रचत निज माया, खेल अलौकिक जनमनभाया॥
छिन दीखै छिन माँझ बिलाई, प्रभु लीला तिमि जानहु भाई।
जनम जीव जेते जग पावैं, समय पाय मीचू मुख जावैं॥
फल पाको जिमि भूतल आवै, तिमि तनु त्यागि मरन नर पावै।
बसन पुरातन तजि नव धारै, तिमि तजि प्रथम देह नव धारै* ॥

जनम - मरन -बंधनबिथा, लोभ - मोह - भय - ताप।
देह धरम सब जानि कै, नहिं बुध करहिं बिलाप ॥२२॥

करमचन्द-सुत प्रथम बुलाई, कुलगुरु बात कही समुझाई।
सुरपुर-गमन जनक तुव कीना, तो कहँ गृहपति-पद सुभ दीना।
सेवा करहु मातु कर ताता, सुत सम गनहु अनुज निज भ्राता।
निज कुलधरम करहु चित लाई, होय जथा परिवार भलाई॥
गुरु सन बचन कह्यो सुविनीता, रुचिकर हित तुव सीख पुनीता।
सादर सीस सदा निज धरिहौं, बचन प्रमान मातु कर करिहौं॥
सुत सम गनहुँ अनुज निज भ्राता, होवहुँ ताहि सदा सुखदाता।
गुरुवर सोउ मनुज बड़भागी, निज कुलधरमकरम-अनुरागी॥

इस्ट-बंधु-परिवार कहँ, जो देवत सुख-चैन।
सेवा महँ मानत सदा, हरख अमित दिन रैन ॥२३॥

---

* वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥ (गीता)

मोहन मोहि प्रानसम प्यारा, साँच कहहुँ मम लोचनतारा।
जा सन तासु परम हित होई, निसचै करम करौं द्रुत सोई॥
मातु हिये जस होय हुलासू, बचन प्रमान करौं तस तासू।
मात-पिता-परिजन-परिवारू, जासों लहहिं जगत सुख-सारू॥
जीवन सफल होय तिस केरा, अस बिधि धरम सास्त्र-स्रुति प्रेरा।
मम मन इक अभिलास उदारा, मोहन प्रेसिय सागर-पारा॥
जिमि लहि उच्च न्याय कर ग्याना, पूरन करहि सुजनमनभाना।
लहहि बिभव उन्नत पद पाई, बरधहि निज कुल मान बड़ाई॥

गुरु सों अनुमति पाय कै, कही अम्ब सों बात।
सिंधुपार मोहन-गमन, मो कहँ उचित लखात॥२४॥

तनयबियोग अकनि अकुलानी, जनु हिमपात नलिनि कुमलानी।
कहत सूनु सन आरत बानी, मृदुल प्रेमपूरन मधु-सानी॥
मो कहँ मोहन जीवनमूरी, मोहन बिनु जिमि सब जग धूरी।
बच्छबिहीन सुरभि जिमि दीना, नीर-बिहीन बिकल जिमि मीना॥
दिनकर बिनु नलिनी कुमलाई, बनिक बिकल जिमि बिभव गँवाई।
मोहनगमन बात सुनि काना, मानस मम सुत तिमि अकुलाना॥
मोहन मम सुकुमार सुभाऊ, कुटिल जगतगति जान न काऊ।
रहि बिदेस किमि करहि निबाहू, किमि प्रवास कर पावहि लाहू।

नंदन नगर समृद्ध अति, प्रचुर प्रलोभन पूर्न।
तहँ नरनारि बिलासरत, परहिं पाप-पथ तूर्न॥२५॥

नंदन नगर बिलास-प्रधाना, मिलहिं प्रलोभन पग पग नाना।
तहँ नरनारि बिसय-रसभोगी, पापनिरत अरु धरमबियोगी॥
मम सुत तात बिसय-सुख-भोरा, बचिहै किमि बिसयानल घोरा।
तब तिन बचन कहे कर जोरी, जननी बिनय सुनहु इक मोरी।

पापबिरोधि धरमरत मोहन, प्रतिभासील निगममतदोहन।
सो जनि संक करहु मन माहीं, तासु पतन इमि संभव नाहीं॥
जा कर ईस होय रखवारा, को नर ताहि मिटावनहारा*।
आसिस देहु बिदेस सिधाई, आवहि सीघ्र मनोरथ पाई॥

जननी कहँ समुझाय अस, मोहन-अग्रज धीर।
माता मन धरि तनय हित, सहहु बिरह की पीर॥२६॥

तब बुलाय मोहन महतारी, सूँघि सीस मृदु गिरा उचारी।
मोहन मम जीवनधन ताता, जाहु बिदेस चहत अस धाता॥
बाल बयस तनु अति सुकुमारा, गमन बिदेस कस्ट अति भारा।
नयन ओट कबहूँ नहिं कीना, गृह बाहिर कहुँ जान न दीना॥
अब किमि कहउँ जाव तुम ताता, मो कहँ सब बिधि बाम बिधाता।
पै हिय धारि तात हित तोरा, पठिहौं उर धरि उपल कठोरा॥
आसिस मोर पाय सुत जाहू, तुव प्रतिपाल करैं जगनाहू।
जाय बिदेस करहु निज काजा, आवहु लौटि कुसल मम राजा॥

कियो मात उपदेस तब, मोहन कहँ सुनु तात।
सदा चित्त महँ राखियो, तीन हमारी बात॥२७॥

छाँड़हु तात प्रथम मदपाना, मद्य पिये खर होत सयाना।
दूजे तजहु पिसित कर भोजन, मांस-अहार नरक-आयोजन॥
मातुसमान गनहु परनारी, तीजी सीख हृदै मम धारी।
तब तिन चरन गहे जननी के, बोल्यो मातु बचन तुव नीके॥
निज हियपटल रैनदिन धारौं, चलि तुव सासन चरित सुधारौं।
आयसु देहु मोहि अब माता, आसिस तुव मुदमंगल-दाता॥

---

* जा को राखै साइयाँ मारि सकै नहिं कोय।
बार न बाँको करि सकै जो जग बैरी होय॥ कबीर।

जाय बिदेस बिद्या गहि रूरी, रखिहौं सीस चरन जुग धूरी।
बचन बिनीत अकनि मृदु नीके, धीरज हृदय भयो जननी के॥
मोहन अस बिधि पाय कै, निज जननी-निरदेस।
सुभ बासर अरु सुभ घरी, गह्यो पन्थ परदेस॥२८॥
मोहन चलत बिकल अति जाया, उर उद्वेग न जात छुपाया।
हृदय हूक मन ब्याकुल भारी, सोक सरित नहिं जाय सँभारी॥
गदगद् कण्ठ, बचन नहिं आवा, धधकत उर-अन्तर दुख-दावा।
पीतम अंग धाय लपटानी, जिमि रसाल तरु बीरुध रानी॥
प्राननाथ तुम चलहु बिदेसा, मम हिय होवत अमित अँदेसा।
तुम सन बिछुरि रहौं पिय कैसे, नीर-बिहीन मीन मृत जैसे॥
पुनि तुव हित चित धरि जियनाथा, ईस-निदेस जानि नत-माथा।
पीतम तोर प्रेमरसराती, करिहौं ईस-बिनय दिनराती॥
बिस्वनाथ जगदीस्वर, दीनबन्धु भगवान।
करुना करि निस दिन करौ, प्रभु प्रीतम कल्यान॥२९॥
तब मोहन सुभ घरि अनुसारा, सागर तरि नंदन पगु धारा।
नंदन नगर* सुरग सम सोहा, निजबैभव सुर-नर-मन मोहा॥
नंदन नगर लसत जनु लङ्का, सुबरन-सदन धरत निज अङ्का।
नंदन नगर मांसमदभोजन, परतियगमन सतत आयोजन॥
नंदन नगर बंक नर-नारी, फिरहिं सुछन्द लाज तजि सारी।
नंदन नगर अनंग-अहेरी, संजम-हरिन हनत बिनु देरी॥
नंदन नगर लोभ कर पासा, रंककपोत फँसहि धरि आसा।
नंदन नगर मोह-मद-माया, चहुँदिसि कोप कपट छल छाया॥

---

* इङ्गलैण्ड की राजधानी लण्डन।

नगर सुघर नंदन लसै, धन-बैभव-सुख-धाम ।
धरमसील मोहन सिद्ध, पत राखैं स्रीराम ॥३०॥
बरस तीन नंदन करि बासा, प्रतिभा-तेज बिमल परकासा ।
चारु-चरित गुरुवर तिन मोहे, छात्रन माहिं सिरोमनि सोहे ॥
अमित प्रलोभन पथ महँ आये, सत्यसंध नहिं जायँ डिगाये ।
*लघुद्रुमपाटनकुसल प्रभञ्जन, किमि करि सकत हिमाचलभञ्जन॥
जब जब परख काल तहँ आवा, गांधिबिमलजस उन्नति पावा ।
हेम-सकल जिमि पावक डारा, कुन्दन होय छाँड़ि मल सारा ॥
निज सुबास मानव-मन-नन्दन, घसि घसि महक लहै अति चंदन ।
मातु असीस रच्छक तिस केरी, आपतकाल कबच सम हेरी ॥
गुरुजन अभिवादन सदा, सुख-संपति-जस-देन ।
गुरु असीस जानहु सदा, पारससम सुख-ऐन ॥३१॥
बहुरि 'बार्ट' डिगरी तिन पाई, सफल प्रयास भयो सुखदाई ।
ईस-प्रसाद पाय फल धीरा, बिसरत तुरत सकल स्रम-पीरा ॥
जिमि बहु काल क्रुसक स्रम करई, लहि कै सस्य मोद मन भरई ।
गुरुजन कर पुनि आयसु पाई, चल्यो सुदेस हिये हुलसाई ॥
सागर-उर जावत जलजाना, भाव उठत मोहन मन नाना ।
आवन गृह प्रति सुनि मम माता, मानस मुदित पुलकजुत गाता ॥
धावहि मोहि मिलन हित कैसे, सुरभि सप्रेम बच्छ प्रति जैसे ।
अग्रज मम हितकर जस ताता, होवहि मुदित अछत लखि गाता ॥
पुरबन्दर सुभ जलधि तट, पहुँच्यो जब जलजान ।
मोहनहिय जननीमिलन ललक उठी सुमहान ॥३२॥

---

* न पादपोन्मूलनशक्ति रंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य ।
(कालिदास—रघुवंश)

इस्ट - मित्र - परिजन-परिवारा, पुर-नर-नारि-समाज उदारा।
स्वागत हित तहँ सकल पधारे, प्रेम-सुमन मोहन गर डारे॥
देय बधाय कहत मृदु बानी, बात रुचिर अबितथ हम जानी।
धन्य जनक जननी सुत जासू, हरत सोक हिय करत हुलासू॥
धन्य बंस नरमनि जहँ जाया, बिमल कीन कुलकीरतिकाया।
धन्य पुनीत धरा जहँ आई, आरजधरमरीत दरसाई॥
मोहन प्रेमसहित मृदु बानी, उचरी भावभरित रससानी।
इस्ट - मित्र - परिजन - परिवारा, धन्यबाद सब गहहु हमारा॥

लहि तुमरी सुभ कामना, जगपति आसिस पाय।
पुर-परिजन-परिवार कर, सेवा करहुँ अघाय॥३३॥

तब निज सदन जाय पगु धारा, मातु मिलन हित चाव अपारा।
अग्रज-पूत-चरन तट जाई, प्रेम सहित निज मस्तक नाई॥
करि अभिवादन आसिस पाई, सुरपतिवरसम अति सुखदाई।
मोहन कहत पूज्य मम भ्राता, झटिति बतावहु कित मम माता॥
नेह-सलिल-रतनाकर भारी, ममता - रूप - सुधारस - धारी।
सो मम अम्ब कहहु कित नाथा, बिनु दरसन ठनकत मम माथा॥
लोचननलिन बारि भरि आवा, गदगद कण्ठ उतरु नहिं पावा।
मोहन बुद्धिमान गहि भावा, अनुभव कीन कठिन दुखदावा॥

हे जननी हे अम्ब इति, प्रेम-स्रोत हे मात।
अवरु बचन नहिं कहि सकै, सोकसिथिल हियगात॥३४॥

सूखत कण्ठ जलन हिय बाढ़ी, बिकल मीन जिमि जलसन काढ़ी।
मातुबियोग दुखित अति गांधी, हिय महँ उठत प्रबल दुखआंधी॥
सोक-प्रवाह उमड़ि अस आवा, पावस गिरिसरिजल जिमि धावा।
होय अचेत परचो छिति कैसे, असनिपात पादपवर जैसे॥

होय सचेत बहुरि कहि बाता, मो कहँ छाँड़ि गई कित माता।
मातुसमान अछल हितकारी, अवर न होय त्रिलोक मँझारी॥
भ्राता-भगिनि-जनक-सुत-दारा, दुहिता-बन्धु-सुजन-परिवारा।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती, अटल लखी अस लौकिक रीती॥

स्वारथमय सिगरे करैं, प्रेम जगत नरनार।
स्वारथ बिनु इक अम्ब को, बिमल प्रेम-बिवहार॥३५॥

स्वारथहीन सहज सुभ सोहा, जननी-नेह भुवन-मन मोहा।
बिनु स्वारथ निजसुतहितकारी, सुरभि-समान परम उपकारी॥
करहि प्रसार मधुर पय द्वारा, संतति-चित्त प्रेमरस-सारा।
डसत मनुज कहँ उरग कराला, जीवन-मूरि देय ततकाला॥
जननी प्रेम-सुधा कर दारू, सोक-समूह-गरल कहँ मारू।
करुन बिलाप करत अस गांधी, सोक सबेग प्रबल जनु आंधी॥
धीरज-द्रुम तिन तोरि गिरावा, बुद्धि-बिबेक-पखेरु उड़ावा।
संजमरूप गिरहिं फल कैसे, बिटप हिलाय बदरि फल जैसे॥

मोह करी मदमत्त जनु, संजम भञ्जि अलान।
सुमति-महावत निदरि कै, उरपुर कीन मसान॥३६॥

अग्रज ताहि अङ्क निज लावा, सीख अनेक देय समुझावा।
जनमहिं जीव जगत महँ जेते, मरिहैं अवसि समय लहि तेते॥
अटल ईस-सासन अस जानी, जनि तुम तात करहु मन ग्लानी।
मानस बिकल भयो थिर कैसे, बरसा पाय तपत छिति जैसे॥
पावस घन सन लहि जलधारा, नव किसलय उपजत तरु-डारा।
तिमि सिख वारि पाय अनुकूला, मोहन मन बिबेकद्रुम फूला॥
तब तिन निज करतब निरधारा, धन-संग्रह-हित कीन्ह बिचारा।
अग्रज कहत सुनहु अब ताता, काज वकालत अति मन-भाता॥

न्याय-बिसारद होय तुम, करहु ग्यान-उपजोग।
बित्त कमावहु बुद्धिबल, करहु बिभव-उपभोग ॥३७॥

मोहन पुनि प्रवेस तब कीना, अन्तर-गृह जहँ सोकमलीना।
जाया धरमसील सतवन्ती, ठाढ़ी प्रेम-निरत पतवन्ती॥
आवत देखि दयित निजधामा, मुदित भई अति मोहन-रामा।
चातक तृसित जलदजल पावा, बित्त अकिञ्चन-जन जनु पावा॥
सासु-मरन-दुख दाहक दावा, नाथ-मिलन-सुख-पावस पावा।
उर कर ताप गयो नसि कैसे, तिमिरतोम रवि-आगम जैसे॥
भेंटि सप्रेम कुसल पुनि पूछी, तब तनु प्रिय कत भूखन-छूछी।
प्रेमसलिल लोचन भरि बोली, बानी मधुर सुधारस घोली॥

स्वामिसंग सोहत सदा, प्रमदा केर सुहाग।
नाथ बिना सोहै नहीं, आभूसन तनराग ॥३८॥

नाथबिहीन न मंडन नीका, विधवा सिर जिमि सेंदुर टीका।
नाथविहीन तरुनि नहिं सोहै, रविबिनु नलिनि न जनमन मोहै॥
नाथबिहीन बिकल अति नारी, नीररहित जिमि मीन बिचारी।
नाथबिहीन नारि छबि-हीना, बिधुबिनु जामिनि निपट मलीना॥
नाथबिहीन जियन जग फीका, फलबिनुद्रुम किमि लागहि नीका।
नाथबिहीन नारि-छबि रूखी, पय बिनु दुखद जथा सरि सूखी॥
नाथबिहीन रमनि अस दीना, जीव-रहित जिमि देह मलीना।
नाथबिहीन बृथा जग नारी, कूप न सोह जथा बिनु बारी॥

निज सुत तिन पुनि ल्याय कै, दियो कंत के अंक।
आनन-बिधु लखि मुदित भो, बिभव पाय जिमि रंक ॥३९॥

निज परिवार संग सुख पाई, मोहन मन अति मोद-बधाई।
पुनि बिचारि अग्रज कर बानी, करन बकालत निज मन ठानी॥

राजकोट महँ कीन ठिकाना, मरम बकालत चाहत जाना।
तहँ इक कटु अनुभव तिन पावा, करम बकालत नहिं मन भावा ॥
न्यायबिसारद तरक - प्रबीना, अहहिं बकील अरथचयलीना।
धरम करम सन नहिं कछु नाता, स्वारथ निरखि करहिं सब बाता ॥
न्यायसदन जनु सागर भारा, अहहिं बकील मकर-परिवारा।
बादि निरीह मीन लघु सोई, ता कर भखन करैं पत खोई ॥

दयासील मोहन परम, सदा बादि-हितकारि।
पापिन महँ किमि रहि सकै, न्यायसील बृजिनारि ॥४०॥

मोहन धरम - प्रेम - मतवारा, ठगन मध्य जनु बाल बिचारा।
अहहिं बकील निपट गतमाना, सहहिं अरथ हित बहु अपमाना ॥
अस तिन निज अनुभव सन जाना, उर अंतर अतिसै दुख माना।
आंगल तहँ इक न्याय-अधीसा, तिनअसनियमकियोअतिखीसा ॥
भारतीय मम निकट जु आवै, सीस पगा धरि आन न पावै।
बिगतमान अस करहिं बकीला, करहिं कदापि न हुज्जत-हीला ॥
अनुचित बात न मोहन मानी, निज अपमान दुसह दुख जानी।
आंगल लखि निज सासनभंगा, अरुन भयो जिमि बालपतंगा ॥

आंगल तब अति कोप सों, लोचन कीने लाल।
परुस बचन मुख सों कढ़े, जिमि भीसन बहु ब्याल ॥४१॥

अंटसंट कीनी बकवासा, मोहन उर उपजावन त्रासा।
परुस बचन निसफल भे कैसे, गिरि सेखर बरखाकन जैसे ॥
जे जन मानधनी जग होवैं, मरन सहैं बरु मान न खोवैं।
मोहन कहँ अग्रज समुझावा, अस बिवहार न मम मन भावा ॥
आंगल कोप तोर हित-हानी, सुनहु अनुज निसचित हौं जानी।
मानव नीति-कुसल मतिमाना, करिनिजहितअनहितपहिचाना ॥

विसमकाल* निज हित उर धारी, सहत प्रहार कमठसम भारी।
लखि पुनि काल निपट अनुकूला, सीस उठायँ कालफनितूला॥
तासों अब गहि मौन तुम, आंगल सासन मानि।
निज कारज साधहु सकल, नतरु होय हित-हानि॥४२॥
अग्रज बचन नीतिजुत पूरे, मोहन चित्त लगे नहिं रूरे।
विनय समेत कही अस बानी, भ्राता तोर बात नयसानी।
पै मम मन नहिं भावत नेकू, जाकर देस-धरम-हित टेकू।
आंगल करन चहत अपमाना, भारत जन कर नित मनमाना॥
आरज-कुल-मरजाद-निरादर-करनहार किमि पावहि आदर।
किमि सहि सकहुँ देस अपमाना, देस-निरादर मरनसमाना॥
जे जन देस-धरम कर हानी, सुखप्रियसहहिंसकलतजिग्लानी।
तिन कहँ जानहु मृतक समाना, भोगहिं भोग निरर्थक नाना॥
सांत-अनल कर भसम सम, होय मनुज गतमान।
लघुपिपील-सम जनन सों, पावत बहु अपमान॥४३॥
तेजहीन मानवअपमाना, दुरजन मनुज करहिं विधि नाना।
तेजवन्त नर सों भय मानैं, संकित हिय गुन तासु बखानैं॥
निसित दाढ़-नख आयुधवारा, नाहर सहज मृगन सरदारा॥
बिधिवस दाढ़नखायुध खोई, सहत निरादर सस सन सोई॥
मानसमेत निधन अति नीका, मानबिहीन जियन अति फीका।
मधुर रसायन मानबिहीना, विरस असन जिमि सैन्धवहीना॥
नीरस असन मानजुतभावा, मधुरभाव वा महँ सरसावा।
होय अहार-कीट नहिं मानव, उदरपरायन नर जस दानव॥

---

* कौर्मं संकोचमास्थाय, प्रहारानपि मर्षयेत्।
प्राप्तकालस्तु मतिमान्, उत्तिष्ठेत् कृष्णसर्पवत्॥ (पंचतन्त्र)

मान रहित नर करहिं जे , जीवन हेत उपाय ।
धरमकरम अरु कीरती , तिन कर सकल बिलाय ॥४४॥

मोहन मन निसचय अस कीना , मानप्रमान चहिय अब दीना ।
कचहरि बीच कीन हरिनादा , तजहुँ न देस-धरम-मरजादा ॥
सीस पगरि धरि कचहरि आवौं , नातरु राजकोट तजि जावौं ।
मानधनी नर सहि अपमाना , भोगन चहत भोग नहिं नाना ॥
संभावित* नर कर अपमाना , होय दुखद सत मरन समाना ।
मानधनी नर सिंह समाना , नहिं सहि सकत बिसम अपमाना ॥
जाय बिदेस देस बरु त्यागी , होय न मान-हीन धन-रागी ।
होय सकल मानवगनईसा , अथवा होय बिपिन-अवनीसा ॥

मानधनी मोहन तबै , आंगल कहँ अस टेरि ।
न्यायसदन तजि चलि गयो , लौटि न आयो फेरि ॥४५॥

जे नर पढ़हिं पुनीत , मंगलमय मोहन चरित ।
सकल सुखद हरि प्रीत , तिनके मन मंदिर बसै ॥१॥
रुचिर आत्मसम्मान , सत्य-अहिंसा -प्रेमजुत ।
करै सतत कल्यान , तिन के उर बढ़ि रैन दिन ॥२॥

---

* संभावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते । (गीता)

द्वितीय सोपान

सत्य-समान धरम नहिं दूजा, सत्य समान अवर नहिं पूजा।
सत्य-समान छेम जग माहीं, नेमहु सत्य इतर कछु नाहीं॥
सत्य-समान सुरग-सोपाना, दान-दया तप अवर न जाना।
सत्यरूप दीपक कर लीने, गुप्त भेद मानुस सब चीने॥
सत्यरूप लकुटी कर धारी, बृजिन स्वान नर देत पछारी।
सत्य-समान ग्यान कर दाता, अवर न कोय मोहतमघाता॥
सत्य-समान रच्छक नहिं कोऊ, पाप-उरग-भच्छक खग जोऊ।
सत्य-समान जगत-हितकारी, नहिं गुन अवर मनुज-उपकारी॥

जप-तप-जग्य रु दान सब, सुभ गुन होयँ असार।
सत्यरहित जिमि प्रानबिनु, मनुज देह जस छार॥१॥

सत्यसन्ध मोहनमन चावा, न्याय-सहित चहियत धन पावा।
असनबसन बिनु जीवन नीका, न्याय-बिहीन आय सन फीका॥
न्याय-रहित धन-भोग-बिलासा, होयँ सकल जीवन-उपहासा।
चरित उदार जदपि नर रंका, ता सम होय न नृप गति-बंका॥
अग्रज कहत ताहि समुझाई, सहज बिरति कचहरि सन भाई।
राजकोट महँ अधम वकीला, अहहिं न न्यायकुसल नयसीला॥
न्यायसदन मुम्बापुरि भारी, तहाँ बकील न्याय-धुरधारी।
न्यायाधिप पुनि न्यायपरायन, हंस-समान बिबेक-गुनायन॥

मोहन तुम तहँ जाय कै, करहु बकालत जारि।
अलप काल निज सुमति बल, जस पावहु दिसि चारि ॥२॥

करम नीच भ्राता नहिं कोऊ, ऊँच-नीच करताबस सोऊ।
बिमल बिहार करत रविदासा, चरमकार जग सुजस प्रकासा॥
नरपति बेन बृजिन-चितधारी, भयउ स्वपदपातन-अधिकारी।
कथन तासु मोहन परमाना, मुम्बापुरि महँ कीन ठिकाना॥
सरल न्यायजुत परम उदारा, करहुँ बिहार हृदै अस धारा।
पै नहिं सरल सत्य पथ हेरा, पग-पग कस्ट प्रलोभन केरा॥
अनृत-बिहार बादि चह कीना, मोहन सोउ उचित नहिं चीना।
अरथलोभ तजि सत्यपरायन, चलत न्यायपथ गांधि गुनायन॥

सत्यपरायन नर चलैं, सदा न्याय-पथ माहिं।
जगत प्रलोभन बिसम नहिं, तिन कहँ कबहुँ डिगाहिं ॥३॥

मोहन न्याय-सदन थिति देखी, मानेउ मन महँ सोक बिसेखी।
न्यायसदन सूना-सम जाना, न्याय-अधीस बधिक सम माना॥
अहहिं बकील बधिक कर दासा, करहिं न्यायमृगजीवननासा।
तस्कर पाय बिपुल धनरासी, होय मुदित हिय आस बिकासी॥
लखि तिमि बादि गरे महँ फाँसी, लहत बकील अमित सुखरासी।
होय बकील मनुज अति धूरत, असुर सुभाउ प्रकट सुरमूरत॥
स्येन सुभाउ चटक सम भोला, हियमहँ गरल अमियमुखबोला।
सुरभिरूप सुसुल्क सुभावा, भूसुर-रूप ब्याध धरि आवा॥

मीनबधिक बगुला जथा, धरत ध्यान सरि-तीर।
तिमि बकील बादी-बधिक, दीसै परम गँभीर ॥४॥

काम बकालत प्रति अस ग्लानी, गांधि बिमल मन आय समानी।
जे नर धरमधुरन्धर धीरा, चलत धरम-पथ ते सहि पीरा॥

*पाप-पन्थ पग कबहुँ न धारैं, निज तनु-प्रान धरम-हित वारैं।
दुरबल-देह बिगत-जिय आसा, नाहर तदपि भखत नहिं घासा॥
कारज अवर करहुँ चित लाई, धरम-संग जस मिलत बड़ाई।
अरथ-समागम कुलजस बाढ़ै, बिसम बृजिन-करदम सन काढ़ै॥
अस बिधि करम होय सुखदाता, अरिनासक सज्जनगनत्राता।
मोहन अस बिचार महँ लीना, चिन्तितचितअतिबदनमलीना॥

चिंता सों सुलझै नहीं, बिसम समस्या जोउ।
ईस कृपा सों सहज ही, नर सुलझावै सोउ॥५॥

असफल होय नसत नर-आसा, मेघपटल जिमि भानु-प्रकासा।
ईस-प्रसाद तेज पुनि पावै, आसाकिरन दमक दरसावै॥
†नरहित प्रभु मीलत इक द्वारा, खोलत अवर कृपा-सुख-सारा।
चिंतातुर अति व्याकुल गांधी, उर महँ उठत बिकलता-आंधी।
ता छिन संदेसा इक आवा, अबदुल मेमन सेठ पठावा।
आफ्रिक देस आव तुम गांधी, पुस्कल बेतन देवहुँ बांधी॥
रहहु इहाँ बत्सर इक आई, सारध-सहस-रूप धन पाई।
विस्तृत अहहि प्रचुर मम काजा, करम करहिं बहु मनुज-समाजा॥

गांधि इहाँ तुम आय कै, तिन कहँ देहु सलाह।
जासौं मम कारज सरै, होय दुगुनतर लाह॥६॥

---

* वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षाः
बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति।
एवं कुलीनाः व्यसनाभिभूताः
न नीतिमार्गं परिलंघयन्ति॥ (पचतन्त्र)

† खुदा गर बहिकमत बबन्दद दरे,
कुशायद बफज़लो करम दीगरे। (बोस्ताँ-शेखसादी)

तैयब नाम बिरोधि हमारा, मो सन मोल लियो तिन रारा।
तिस सन चलत मुक़द्मा भारा, दावा चालिस पौंड हज़ारा॥
आय सहाय करहु मम भाई, ईस-कृपा मम आस पुजाई।
पाय सँदेस गांधि अस सोचा, चाकरि करहिं मनुज मति-पोचा॥
*स्वानवृत्ति सेवा जिन भाखी, उचित वचन-सीमा नहिं राखी।
स्वान सुछन्द फिरत चहुँ ओरा, दास दिवसनिसि स्वामिनिहोरा॥
काम बकालत मम प्रतिकूला, अनमन करम न फल अनुकूला।
जाय बिदेस करम कछु आना, खोजहुँ लाभकारि मनमाना॥

करुनाकर करि कै कृपा, मो कहँ दीन सुजोग।
मारग सोउ सुझावही, कस्ट-निवारन-जोग॥७॥

अग्रज सन लहि आयसु गांधी, कमर बिदेस-गमन प्रति बाँधी।
जाया कहँ बोल्यो समुझाई, प्रभुलीला बरनी नहिं जाई॥
मम-हित अवसि बिदेस पयाना, प्रेरत जगपति ईस सयाना।
रहि निज देस आय कछु नाहीं, बित्तबिहीन चित्त थिर नाहीं॥
धनसंचय करि लौटि सुदेसू, बसिहौं सुख सन बिगत-अँदेसू।
अस बिचारि प्रिय जावन देहू, जीवन-लाभ उभय कर एहू॥
बचन मृदुल बोली तियरानी, मम हियदसा नाथ तुम जानी।
जा बिधि लाभ होय प्रभु तोरा, ता बिधि अवसि होय हित मोरा॥

तब मोहन अति प्रेम सों, तिय-आलिंगन कीन।
तनय-प्रेम-प्रेरित बहुरि, सुतमुख-चुम्बन दीन॥८॥

पुनि हिय सुमिरि राम भगवाना, मोहन चरन धरयो जलजाना।
उदधि अपार पार पुनि कीना, डरबन नगर जाय पगु दीना॥

---

* सेवा श्ववृत्तिराख्याता यैस्तैर्मिथ्या प्रजल्पितं।
स्वच्छन्दं चरति श्वात्र सेवकः परशासनात्॥ (हितोपदेश)

अबदुल सेठ सखा संग आये, सहित सनेह गेह निज ल्याये।
निज अभियोग-भेद पुनि सारे, इक इक बरनि सकल कहि डारे॥
अहहि तयब मम परम बिरोधी, मारग मोर रह्यो अवरोधी।
खल धूरत अति क्रूर कुचाली, पातकउपबन कर जनु माली॥
ट्रानसबाल मीत तुम जाहू, करहु काज जिमि होवहि लाहू।
धूम-जान चढ़ि फसट कलासा, ट्रानसबाल चल्यो धृत-आसा॥

मोहन कहँ गारड तहाँ, अरधचन्द दै दीन।
दारुन अति अपमान करि, बहिर जान तें कीन॥९॥

परुस गिरा मोहन सन भाखी, आंगल हित रिजर्व करि राखी।
कृस्न-काय सुनु फसट कलासा, ता महँ तजहु चढ़न की आसा॥
नाहर-भाग स्यार किमि खावै, पुरोडास किमि रासभ पावै।
अकनि तासु स्त्रुति-दाहक बानी, निजअधिकाररखनहित मानी॥
धरना दीन अटल तहँ कैसे, डटत अचल झंझा महँ जैसे॥
दुरजन मन प्रभाव नहिं कैसे, ऊसर पयद परे फल जैसे॥
बिबिध प्रकार कस्ट तिन पाये, अनुभव-पथ प्रति-दिन जे आये।
बरन-भेद ज्वाला अति घोरा, आफ्रिक देस लखी चहुँ ओरा।

करहिं करम दारुन परम, नीति-धरम सब त्यागि।
भारत-मनुज सतावहीं, हिंस्र-बृत्ति-अनुरागि॥१०॥

गौर-बरन आंगलजन जोऊ, राजसक्तिमदिरारत सोऊ।
भारत-जन प्रति कुटिल बिहारा, करहिं दिवसनिसिअनय-अचारा॥
बधिक-पासगत कुरग बिचारा, करत दुखित हिय करुन पुकारा।
भारत-जन कर आरत बानी, सुनि तिमि मोहन अस हिय ठानी॥
तनमनधन निज अरपन करिहौं, देस-प्रेम इन कर हिय भरिहौं।
इन महँ प्रीति परसपर नाहीं, वैर-बिरोध ग्रसे दुख पाहीं॥

सँगठन महँ इन कर हित चीना, सँगठन करत सबल बलहीना।
पयकन छुद्र मेल जब कीना, पावस रूप जलधि कर लीना॥
बलदायक अति संगठन, करहि अबल बलवान।
रबिकर लघु मिलि कै लखौ, करहिं निबिड़ तम हान॥११॥
लघु* तृन जोरि रसरि जब कीनी, मत्तमतंगज-गति तिन छीनी।
छुद्र पिपीलि सैन निज साजी, देयँ पछारि प्रबल गजराजी॥
अनल-अंस लघुरूप निहारा, पावक होय करत जग छारा।
मोहन पुर प्रिटोरिया जाई, तैयब सन अस बात चलाई॥
सुनहु सेठ तुम अस मत मोरा, जा बिधि होय परम हित तोरा।
अबदुल सन तुम करहु मिताई, रार किये नहिं होत भलाई॥
कचहरि जाय सुजस-धन-नासा, ब्याकुल चित्त नसत सुख-आसा।
कचहरि महँ जीते जन हारे, हारे मनुज गनौ जस मारे॥
बैठि परस्पर करहु तुम, निज बिबहार-बिचार।
कचहरि जावत मनुज जे, करैं अरथ-जस छार॥१२॥
कचहरि जाय मुकदमा छेरैं, जनु जमदण्ड स्वमुख प्रति फेरैं।
बादी-प्रतिबादी जब लरहीं, मोद बकील परम तब करहीं॥
नाहर-द्वीपि लरहिं जब भाई, सहज सृगाल हरिन कहँ खाईं।
सो तुम करहु न्याय निज भाई, अबदुल-देय देहु द्रुत जाई॥
भेंटहु प्रेमसहित पुनि ताही, अस बिधि बैरसकल मिटि जाही।
मोहन-मन्त्र प्रेम कर भारी, बैर-उरग कीलन करि डारी॥
मोहन-बचन तयबचित भावा, सन्धिकरनहित हिय महँ चावा।
मोहन-मुख तिन पठ्यो सँदेसा, अब्दुल मन जनि करहु अँदेसा॥

---

* बहूनामप्यसाराणां संहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥ (चाणक्यनीतिः)

प्रीति-निपुन गांधी परम, हमरी रार मिटाय।
भ्रातृभाव थापन करै, सुगम सतत सतिभाय ॥१३॥
गांधी तिनकर रार मिटाई, बिमल चतुर-दिक कीरति छाई।
भारत-जन अभिनंदन कीना, प्रेमदूत गनि बंदन कीना ॥
तब मोहन अस निज मन ठाना, हौं अब करहुँ सुदेस पयाना।
भेंटौं जाय तहाँ सुत-दारा, देखहुँ सम्रुद बन्धु-परिवारा ॥
जनमभूमि जननी-सम जानी, जासु अङ्क सुख पावत प्रानी।
जदपि बिदेस अरथ-सुख नाना, भोगबिलास मोद मनमाना ॥
होय सुदेस कस्ट अति भारा, गनिय तथापि सुरग सुखसारा।
सुखद बिदेस गरल इव जानौ, दुखद सुदेस अगद सम मानौ।
त्रिभुवन महँ भ्रमि देखहू, नहिं सुदेस सम थान।
लसत भूमितल आय कै, सुन्दर सुरग-समान ॥१४॥
करत मनोरथ मानव नाना, पै बिधि करत न इक परमाना।
गांधिगमन सुनि अबदुल काना, सोक अपार न चित्त समाना ॥
ब्याकुल होय गांधि प्रति धावा, बोलेउ गमन मीत कत भावा।
हमहिं सतावहिं बहु अंगरेजा, रच्छक-रूप तुमहिं प्रभु भेजा ॥
जावहु हमहिं छोरि तुम ताता, कवन हमार होय अब त्राता।
जनहित लागि रहौ तुम भाई, परहित लागि सुजन सुख पाई ॥
बचन मृदुल सुनि अबदुल केरे, परम सनेह-भगति सन प्रेरे।
मोहन कहेउ सुनहु मम भ्राता, देसगमन चाहत चित ताता ॥
पै तुम्हार हित करन हित, हौं अब रहउँ बिदेस।
जनहित सुख त्यागत सुजन, गनत न दुख-लवलेस ॥१५॥
तब पुनि करत तहाँ मनमोहन, प्रेमसहित निगमागम-दोहन।
ग्रन्थ अनेक पढ़त चित लाई, गहत बिचार पूत सुखदाई ॥

ईमरसन रसकिन मतिमाना, थोरो टाल्सटाय गुनखाना।
कहहिं मनुज कहँ सुखकर सोई, सुभ-विचारमय जीवन जोई॥
विमल-चित्त सुभचरित सुहाना, जीवन-सफल भेद अस जाना।
निगमागम इतिहास पुराना, गीता बैबल अवरु कुराना॥
*धरमसार बरनत मतिधीरा, परहित पुन्य पाप परपीरा।
सो निज सुख-विचार नर त्यागी, सेवानिरत होय बड़भागी॥

सेवा सन मेवा मिलै, जग अस बात प्रसिद्ध।
सेवा सन हरिहू मिलै, कहैं सन्त-मुनि-सिद्ध॥१६॥

प्लीमथ ब्रदर नाम सुखदाई, ईसाभगत सुजन - समुदाई।
तिन कर नायक गुनगन-धामा, बेकर-कोट्स-मरे सुभ नामा॥
आफ्रिक बसि करि धरम प्रसारा, जीवन सुफल करहिं सुखसारा।
मोहन कहँ भाखत समुझाई, आवहु ईसु-सरन तुम भाई॥
ईसा अहहि तनय प्रभुकेरा, पातक प्रबल जगत तिन हेरा।
प्रभु-सासन सन धरि अवतारा, निज बलिदान सकल जग तारा॥
सिमरन तासु परम सुखकारी, पाप-ताप देवत सब टारी।
ईसा नाम सुभग जलजाना, पाप-पयोधि-तरन-हित जाना॥

मोहन तिन कर कथन सुनि, बोलेउ बचन विनीत।
धन्यवाद अतिसै करौं, सुनि उपदेस सप्रीत॥१७॥

संसै छमहु मीत कछु मोरे, करहुँ प्रकास अनुग्रह तोरे।
ईसु तनय अहहि प्रभु केरो, करत प्रतीत न अस मन मेरो॥
अज-अविकार-अमर जगदीसा, तासु तनय किमि होवहि ईसा।
ईसा-रुधिर पाप धुलि जाहीं, अद्भुत बात तरकजुत नाहीं॥

---

* धर्मस्य तत्त्वं व्यासेन भारते परिकीर्तितम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥ (स्फुट)

ईसा-नाम सुमिरि गति पाहीं, नर अस मम मति मानत नाहीं।
मानहुँ सन्त महामुनि त्यागी, सिच्छक दिव्य ईसु बड़भागी॥
पै नहिं जगपति-सम तिहिं मानौं, जीव अलप किमि प्रभु-सम जानौं।
सत-चित-आनँदरूप महेसा, सहज निरंजन रहत हमेसा॥

सरब सक्तिजुत ईस्वर, जगव्यापक सरबग्य।
ता सम होवहि जीव किमि, अलप-सक्ति अलपग्य॥१८॥

ब्यापक सबल ग्यान-जुत ईसा, सो किमि सूलि चढ़त जिमि खीसा।
जासु सुघर कृति जगत सुहावा, सो किमि देहबंध महँ आवा॥
बसन मलीन अमल जल धोये, होयँ बिमल नहिं बिनु मल खोये।
तिमि मन लिप्त पापमल माहीं, बिनु सुभकरम बिगतमल नाहीं॥
निज निज करमधरम-अनुसारी, सुरपुर-नरक जायँ तनुधारी।
परकृत करम देयँ नहिं साथा, पावत मुकति मनुज निज हाथा॥
*करमप्रधान बिस्व प्रभु कीना, जस बिधि करम फलहु तस दीना।
धरमकरमफल मुकति उदारा, पातक-अंत निरय दुख भारा॥

हिन्दुधरम सिद्धान्त अस, न्यायपरक सुखसार।
तुमरो मत नहिं तरकजुत, देखहु चित्त बिचार॥१९॥

अस बिचारि जनि करहु प्रयासा, छाँड़हु मम सुधार कर आसा।
मानससलिल-सुधा करि पाना, लवनजलधिजल पियत अयाना॥
कामधेनु-पय-पीयुस त्यागी, को बुध होय खरी-पय-रागी।
सुभग महारघ रतन बिहाई, उपल-सकल पाछे जड़ धाई॥
मृदु-रसाल-फल-चाखनहारा, करत नाहिं कटु निम्ब-अहारा।
पावन सुरसरि नीर बिहाई, गोपद-पय जड़ पियत अघाई॥

---

* करम प्रधान बिस्व रचि राखा।
जो जस करइ सो तस फल चाखा॥ (तुलसी रामायण)

कुसुम-सुसोभित तजि फुलवारी, होय कवन कंटक-बनचारी।
गनहुँ धरम निज जिय सन प्यारा, लागत सरब मतन सन न्यारा॥
हिन्दुधरम जनु भानु सम, संसैतम कर नास।
अवर धरम नभ-जोत-सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥२०॥
हिन्दुधरम राकासम सोहा, ग्यानप्रकास भुवन-मनमोहा।
अन्य धरम लघु-दीप-समाना, करहिं प्रकास कछुक इक आना॥
हिन्दुधरम सुबरन समतूला, रूप-बरन-गुन मंगल-मूला।
इतर धरम सीसक सम जानौ, रूप न रंग न गुन पहिचानौ॥
*बिगुन धरम आपुन तउ नीका, अवर धरम गुनवानहु फीका।
उत्तम मरन धरम निज लागी, अन्य धरम भयदायक आगी॥
तासों प्रेमसहित निजधरमा, बुध अनुसरहिं करहिं सुभकरमा।
भव सुधारि परलोक सँवारैं, आपु तरहिं अरु अवरन तारैं॥
मम-तुव-भेद अजान नर, करहिं पाय कुबिचार।
बसुधा सब परिवार-सम, जानहिं सुजन उदार॥२१॥
रायचन्द कवि मोहन-मीता, बिमल-चरित अरु भाव-पुनीता।
जब तब लिखि लिखि उत्तम पाती, धरमभगति उन्नति कर दाती॥
मोहनमन सरधा दृढ़ कीनी, धरम-मरम-सिच्छा सुभ दीनी।
हिन्दु-धरम प्रभु कर वरदाना, रुचिर-बिचार-रतन-निधि जाना॥
निज तपत्याग रिसिन तिहि पाला, कलिजुग-दस्यु चहत तिहि घाला।
सन्तभगतगुरुजन पुनि आई, ता कर डूबत नाव बचाई॥
सुभ उपदेस पाय संजीवन, बिकल धरम पायो नवजीवन।
ता कर करहिं बहुरि खल हानी, मन महँ निपट निरास्रय जानी॥

---

* श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ (गीता)

करमचन्दसुत करहु तुम, धरमरीति - प्रतिपाल।
बनहिं प्रानपन सों सुजन, धरम-रीति रखवाल ॥२२॥

अस बिधि बसत जाय तहँ काला, भारत-जन कहँ करत निहाला।
मोहन सुभ-बिचार-धन देई, दछिनारूप समादर लेई॥
समाचार इक दिन तिन पावा, गोरन अति उतपात मचावा।
भारतीय मतबञ्चित कीने, सब अधिकार उचित तिन छीने॥
गांधि प्रचार प्रबल तब कीना, सँगठन-मन्त्र सबन कहँ दीना।
निज अधिकार प्रानसम प्यारा, चहियत ता पर तन-मन वारा॥
सँगठन महँ बल होवत भारी, निरबल मनुज होस बलधारी।
तब तिन मिलि बिरोध अतिकीना, निज-अधिकार-ग्रहन-व्रत लीना॥

गांधि संगठन अस कियो, जिमि रसरी-तृन-मेल।
अधिकारी जन हाथ सों, सत्ता पाई सहेल ॥२३॥

सत्याग्रह गांधी सिखरायो, सँगठनबल रिपु-सीस नवायो।
कांग्रस पुनि थापित तिन कीनी, सँगठन-नींव सुथिर करि दीनी॥
ता कर लच्छ गांधि अस धारा, भारतीय - जनता - हित - प्यारा।
ता कर सिद्धि कवन बिधि होई, बढ़त प्रेम बाढ़ै ध्रुव सोई॥
अहहि उचित मरजादा-पालन, बृजिन-असुर कर संतत घालन।
गहहु सदैव निजत्रन-भावा, आतम-ग्यान मनुज सुख पावा।
सेवा-करम करहु चित लाई, सेवा महँ निज अवर भलाई।
सब ते मुख्य सत्य कर पालन, सत्य-अधार चलहु सुभचालन॥

धरमजुद्ध करि गहहु तुम, भारतीय अधिकार।
दुर्जन कर भय त्यागहू, सत्याग्रह जिय धार ॥२४॥

तीन बरस अस आफ्रिक बीते, सुख-संजुत दुखदारिद-रीते।
मोहन-मान करहिं सब लोका, जानहिं ताहि सकल-गुन-ओका॥

भारत-जन-सँगठन करि गांधी, भारत-प्रति-लौटन-मति बाँधी।
कांग्रस सुभ अभिनंदन कीना, नेतारूप ताहि निज चीना॥
चल्यो देस प्रति अनुमति पाई, भयउ जगतपति तासु सहाई।
सकुसल पुरबन्दर जब आयो, तियसुत भेंटि परम सुख पायो॥
कसतूरीमन मोद बधावा, निज गत-विभव मनहु तिन पावा।
पुनि मोहन सुतचुम्बन कीना, तनयप्रनय-अनुभव-सुखलीना॥
प्राकृत जन संसार महँ, रहहिं बिसयरसलीन।
सेवाव्रत-धारन-कुसल, नर उपकार-प्रवीन॥२५॥
मोहन अस बिचारि मन लीना, रहि सुदेस चहियत कछु कीना।
आफ्रिकबासि अहहिं जे भाई, जा बिधि तिन कर होय भलाई॥
*रानाडे जज न्याय-प्रवीना, नरपुंगव महता नयलीना।
तैयब-तिलक-बनरजी नामा, नेता अहहिं सकल गुनधामा॥
गोखले नाम सिरोमनि तासू, छायो सुजस जगत महँ जासू।
तिन सन भेंट करी तब गांधी, देस-सुधार-आस हिय बाँधी॥
बिनती बहुरि करी कर जोरी, छमहु नाथ सिगरी मम खोरी।
आफ्रिकगत भ्राता मम भोरे, तिनहिं सतावहिं निरदय गोरे॥
भारत-देस-सिरोमनी, अहहु सकल गुनधाम।
सुरगुरुसम नीतिग्य सुभ, सफल करहु मम काम॥२६॥
राजनीतिपंडित सब आपू, सुत-दुख देखि मुदित किमि बापू।
पाय कलेस तकहिं मुख रौरा, ढाढ़स देहु तिनहिं करि दौरा॥

---

* महादेव गोविन्द रानाडे, सर फीरोज़शाह महता, बदरुद्दीन तैयबजी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, सर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी और गोपालकृष्ण गोखले—भारतीय राष्ट्रीय महासभा के सामयिक नेता।

तिन कर सार लेउ तुम जाई , जासों निज हिय समरथ पाई ।
लेवहिं धाय सत्रु सन लोहा , छाँड़ि सकल जीवन-धन-मोहा ॥
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई , बिकल भये नहिं होत भलाई ।
सहज किये कारज सुभ होई , सहज पकत मीठो फल सोई ॥
भारत महँ लहि प्रथम सुराजा , करहु अनन्तर आफ्रिक-काजा ।
सींचत जड़ तरु लहत बिकासा , मूल नसे किमि दलफल-आसा ॥

भारत-उन्नति-हेत तब , लग्यो करन सुभ-कार ।
दुख-दारिद-अग्यान-रुज , पायँ जथा परिहार ॥२७॥

मुम्बई प्लेग परचो अति भारी , फैलि गयो जनु बिपिन दवारी ।
मरहिं असंख्य अबस नरनारी , दरकत हिय कटु-दसा निहारी ॥
हाहाकार मच्यो चहुँ ओरा , त्राहि त्राहि करुनामय सोरा ।
मोहन मोह त्यागि तन केरा , निज मन जन-सेवा महँ प्रेरा ॥
रैन-दिवस सेवा महँ लीना , जम सन भिरत मनहु भयहीना ।
*सेवा-धरम कठिन जगजाना , जोगि-जनन कहँ दुरगम माना ॥
सेवा-धरम करहिं छलहीना , पावहिं सुख-फल परम प्रवीना ।
सेवा-रत स्वारथ निज त्यागी , ते नर होयँ सुखी बड़भागी ॥

सेवा उत्तम जानिये , जा महँ स्वारथ नाहिं ।
पर-दुख-दरद निवारि कै , सेवकजन सुख पाहिं ॥२८॥

सेवारत मोहन अस दीठा , गतस्वारथ सेवा-फल मीठा ।
सेवारहित जनम जग हीना , सेवा-हित नरतनु प्रभु दीना ॥
पर-उपकार करहिं चित लाई , मोदहिं नर मनवांछित पाई ।
सेवा कर अस उत्तम लाहू , निज मन मोद टरत पर-दाहू ॥

---

* सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः । (पंचतन्त्र)

सेवा-जनित प्रेम मन सोधै, करतब-ध्यान चित्त परबोधै।
†मो कहँ राज सुरग नहिं प्यारा, नहिं अपरबग परम सुखसारा॥
आरतजनसंकट अति भारा, सेवा सन चाहहुँ द्रुत टारा।
सेवा-सुफल सहज प्रभु दीना, प्लेगजनित संकट हरि लीना॥

सेवक कहँ सेवा सुखद, नहिं चाहत सुख और।
सुत-दारा-धन-मान सों, सेवा - सुख - सिरमौर॥२९॥

सेवा कर साजन-मन चाऊ, सेवा महँ स्वारथ नहिं काऊ।
सेवा-करम धरम निज जानै, सेवा करत परम सुख मानै॥
सेवक सकल मनुज सम जानै, सेवा करि मानस मुद मानै।
ता मन भाव न आपुन-दूजा, सेवा-धरम गनत हरि-पूजा॥
सेवा-धरम परम सुभ जाना, सकल सुखद संसृति महँ माना।
धरनी-बसन-अन्न-धन-दाना, सेवा-सम नहिं एकहु माना।
सेवा-करम-निपुन भगवाना, सेवक-हित-साधन मुद माना॥
सेवक-हित बैकुण्ठ बिहाई, नापित-करम कीन जदुराई॥

सेवा कर महिमा सुभग, जानहिं सन्त सुजान।
सेवा करि बस महँ करैं, अलख - रूप भगवान॥३०॥
पर - उपकार - प्रबीन, मोहन कर लखि कै चरित।
सेवाव्रत महँ लीन, होयँ मनुज आलस्य तजि॥३१॥

---

† न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥ (महाभारत)

तृतीय सोपान

पर-उपकार धरम सुभ जाना, निगमागम अति पूत बखाना।
पर-उपकार सार जग केरा, ता सम पुन्य अवर नहिं हेरा॥
पर-उपकार करहिं नित साजन, इह-परलोक होयँ सुख-भाजन।
पर-उपकार जगत-दुख-नासक, मानव-हिय सुभ-भाव-प्रकासक॥
पर-उपकार सकल गुनभूसन, टारत सकल मनुज-हिय-दूसन।
पर-उपकार धरम प्रभु केरा, होय बिकल सुनि आरत टेरा॥
पर-उपकार करन हित स्वामी, जग महँ प्रगटत अन्तरजामी।
पर-उपकार-करम करि साजन, होवहिं ईस-कृपा कर भाजन॥

सोक-सदन संसार महँ, दोउ पदारथ सार।
निज-जीवन-उद्धार अरु, परहित-करम उदार॥१॥

अबदुल पुनि संदेस पठावा, सहित सनेह-मृदुलतम-भावा।
आफ्रिक पुनि आवहु तुम गांधी, उठत इहाँ रौरव रन-आँधी॥
अति उतपात करहिं अँगरेज़ा, नहिं रन-हेत हमार करेजा।
आसा-गुन बाँधे तुव साथा, आफ्रिक तुमहिं बुलाय अनाथा॥
भारतीय ताकत तुव राहा, स्वागत-हित अति चित्त उमाहा।
तिन कहँ दरस देव द्रुत आई, पयद विलोकि केकि सुख पाई॥
कांग्रस जो तुम थापित कीनी, तासु दसा दारुन विधि कीनी।
सो तुम आय करहु रखवारी, बिनु माली बिनसत फुलवारी॥

खेती जिमि फूलै फलै, स्वामि-सुरच्छन पाय।
तुव प्रसाद सुभ पाय तिमि, कांग्रस बढ़ै अघाय॥२॥

जनवरि मास चलहि पुनि बाता, को जन होय सकत मत-दाता।
नियमसभा गोरन-हितकारी, सुनहि न बात कदापि हमारी॥
तासों तुम आवहु बिनु देरी, तुम बिनु धीर बँधत नहिं मेरी।
आय सपदि निज काज सँभारौ, निज-बन्धुन कर आपद टारौ॥
देवदूत सम तुम अब आई, आसामय संदेस सुनाई।
निबिड़-निरासा तम द्रुत टारौ, भयसरि मज्जत हमहिं उबारौ॥
बधिक-हस्तगत-सुरभि-समाना, जियन हमार कठिन अब जाना।
करुनामय-भगवान-समाना, रच्छक तुम बिनु अहहि न आना॥

अबदुल-पाती पाय कै, मोहन निसचय कीन।
बिनु बिलंब अब जाय हौं, ह्वै निज करतब लीन॥३॥

परामरस पतनी सन कीना, तिन बिचार परगट अस कीना।
मो कहँ करम उचित प्रभु सोई, जा महँ कंत तोर हित होई॥
आफ्रिक-गमन करहु जदि नाथा, मो कहँ लेय चलहु निज साथा।
चरन समीप स्वामि बसि तोरे, बीतहिं दिवस परम सुख मोरे॥
आनन-इन्दु निरखि प्रभु तोरा, टरहि प्रबास-ताप सब मोरा।
पुनि लहि तोर सरन सुख-मूला, बिसरौं नाथ सकल हिय-सूला॥
सवितासङ्ग बसत जस छाया, पुरुस-संग तिमि जानहु जाया।
पावक-संग जोत जिमि सोहै, मघवा-संग सची जग मोहै॥

बिमल-बरन जस कौमुदी, लसत सुधाकर संग।
प्रमदा तिमि सोहत सदा, बसत कंत के संग॥४॥

तब लहि संग तनय अरु जाया, मोहन जलपथ आफ्रिक धाया।
डरबन नगर पहुँचि जलजाना, करनटीन* महँ कीन ठिकाना॥

---

*Quarantine

सासक त्रास बहुत बिधि देईं , जात्रिन थल प्रति जान न देईं ।
रुद्ध रहे तहँ दिन त्रय-बीसा , पैठन देयँ न नगर खबीसा ॥
एसकम इक अंगरेज उदारा , मोहन-हित तिन कीन बिचारा ।
गुपतरूप संदेस पठावा , संध्यासमय चहिय गृह जावा ॥
तव रिपु अहहिं गांधि सठ गोरे , नीतिधरम सन सो मुख मोरे ।
अहहिं सकल तुव जीवन-गाहक , तिन महँ फँसहुँ जाय नहिं नाहक ॥

दैव अटल अस कहत हैं , धरम-ग्रन्थ अरु सन्त ।
दैव-बिबस सब जन अहैं , राजा - रङ्क - महन्त ॥५॥

लाटन नाम तहाँ इक गोरा , दनुज-रूप दीसै अति भोरा ।
मोहन सन बोल्यो मृदुबानी , मो सँग चलत न तव हितहानी ॥
गाड़ी महँ भेजहु सुत दारा , मो सँग चलहु आपु पग-द्वारा ।
मो सँग चलत बार तुव बाँका , जो करि सकै न सो नर आँका ॥
एसकम-बचन बिसरि तब गांधी , ता सन चलन हेत मति बाँधी ।
जा छिन बिपति आय सिर खेलै , मनुज-बिचार कुपथ महँ पेलै ॥
भेज्यो जान तुरत परिवारा , लाटन संग चल्यो पग-द्वारा ।
मानहु काल कुपथ तिहि प्रेरा , गोरन आय सपदि तिहि घेरा ॥

भावी-बस नाहर परचो , बधिक पास महँ जाय ।
बंध-बिबस तिहि निरखि कै, जम्बुक-बृन्द सताय ॥६॥

घायल लखि जिमि पन्नगराजा , छुद्र पिपीलि सजहिं रन-साजा ।
तिमि मोहन घेरचो तिन आई , तजहु देस अस डाँट बताई ॥
नातरु सरबनास अब तोरा , सकत बचाय न कोउ निहोरा ।
मोहन तिनहिं कहेउ समुझाई , तुम सन बैर न मम कछु भाई ॥
सेवक हौं निजबन्धुन केरा , सेवा धरम अहहि प्रन मेरा ।
भारतजन कहँ दुख जनि देऊ , प्रेम परस्पर करि सुख लेऊ ॥

सीतल-सिख नहिं भावत कैसे, ससिकर बिमल चोरचित जैसे।
मुस्टि-चपत अरु पादप्रहारा, करहिं क्रूर मिलि बारमबारा॥
लाटन अवसर पाय कै, खिसकि गयो निज-धाम।
छली सखा मीतहिं तजै, लखि वा को बिधि बाम॥७॥
परहिं प्रहार गांधि-सिर कैसे, धारासार जलद-जल जैसे।
मोहन अचल रह्यो तब कैसे, झंझा बहत महीधर जैसे॥
गांधि अकेल सत्रु-दल भारा, तिन सन सकत पाय किमि पारा।
होय अचेत परयो छिति कैसे, असनिपात पादपबर जैसे॥
नगरपाल-बनिता तहँ आई, लखि तिन गांधि दसा दुखदाई।
नगरपाल-प्रति दूत पठावा, सुभट समेत सोउ द्रुत आवा॥
ता कहँ निरखि नसे सब कैसे, नाहर निरखि नसहिं मृग जैसे।
मोहन तिन निज गेह पठायो, कुसल-बैद-उपचार करायो॥
अस गांधी-रच्छन कियो, प्रनतपाल जगदीस।
ईसभगत हानी कहा, करहिं कुटिलमति खीस॥८॥
एसकम समाचार सुनि आयो, घायल गांधि देखि दुख पायो।
मित्रभावजुत मंजुल बानी, बोल्यो मधुर नेह-रससानी॥
तोहि सचेत सखा हौं कीना, तुम मम बचन चित्त नहिं दीना।
तिस कर दुखपूरन परिनामा, तुम कहँ नियति देत अब बामा॥
हितचिन्तक कर बचन न मानैं, ते नर कूप मरन-हित खानैं।
*मीत-बचन अरु नछत-प्रकासा, बुझन-काल दीपक कर बासा॥
सुनहिं लखहिं नर सूँघहिं नाहीं, जा कर जियन-आस कछु नाहीं।
अब अस गांधि अहहि मत मोरा, चालै सबिधि मुकदमा तोरा॥

---

* दीपनिर्वाणगन्धञ्च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम्।
न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः॥ (हितोपदेश)

करहि खलन सासन सदा, अरु सुजनन सन हेव।
सुभग सुखद सुभ राज सो, जो नित न्याय-समेत ॥९॥

सठजन पकरि बन्दिगृह डारैं, तिन कहँ सुभट लकुट सन मारैं।
तुव पग पकरि छिमा जब जाचैं, न्याय-अधिप तिन पै तब राचैं॥
निज कृत सुमिरि करहिं पछतावा, मम चित अबसि मोद तब पावा।
मोहन ताहि कह्यो समुझाई, इक मम बात सुनहु तुम भाई॥
छिमा-समान धरम नहिं कोऊ, गुन नहिं अवर छिमा सम जोऊ।
छिमा-समान मनुजबसकारी, इतर उपाय न देखु बिचारी॥
छिमा-समान कोप कर नासक, छिमा-समान बैर कर सासक।
छिमा-समान दरप-मदहारी, गुन नहिं अवर मनुज मुदकारी॥

रुचिर सुगुनमनिमाल महँ, छिमा सुमेरु-समान।
छिमा रहित सोहैं नहीं, सबल-सगुन-मतिमान ॥१०॥

कोपकृसानु-दग्ध चित जोऊ, होय छिमा-जल सीतल सोऊ।
जे जन बैर गरल सन जरहीं, छिमा पियूस तासु दुख टरहीं॥
बैर-विरोध-दनुज खल केरा, छिमा-समान कुलिस नहिं हेरा।
ईर्खा - उरग - दमनबलसाली, छिमा-समान न भेसज आली॥
मत्सर-मुरछित कहँ नहिं होई, छिमा-समान सँजीवन कोई।
सठ-प्रभाव-पीड़ित नर जोऊ, छिमा-प्रभाव पाय सुख सोऊ॥
ईसा कहँ सूली जिन दीनी, तिन प्रति तिन सुभकामना कीनी।
छमव मीत :पातक इनकेरा, इनकर स्रेय छिमा महँ हेरा॥

*छिमाखडग कर जाहि के, ता कहँ रिपु भय नाहिं।
तृनबिहीन थल पै परयो, अनल बुझत छिन माहिं॥११॥

---

* क्षमाखड्गं करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेव प्रशाम्यति॥ (चाणक्यनीति)

*ईसा सैल-सिखर सिख दीनी, सरधासहित चहिय चित कीनी।
दच्छिनगाल चपत सठ देवै, बाम सुजन आगे करि लेवै॥
†दुरजन-सन तुम करहु न बैरा, केवल दुरगुन जानहु गैरा।
गौतम बुद्ध सिखावन एहा, रोससमन-साधन सुभ नेहा॥
निगमागम-मत एक समाना, छिमा-समान धरम नहिं आना।
जिन गोरन मो कहँ अब मारा, तिन सन बैर न हौं चित धारा॥
धरमबिहीन करम तिन कीना, निज ललाट मसि-टीका लीना।
मोर मरन महँ निज-हित चीना, तासों मम-मारन-प्रन कीना॥

समय पाय पछितायहैं, निज पातक पै दीन।
बैरभाव रखि ताहि सों, मन कत करौं मलीन॥१२॥

तजहु बिचार मुकद्मा केरा, मानि सखा तुम अस मत मेरा।
ता कहँ दंड दिये नहिं लाहा, अनुसय-अनल जासु उर दाहा॥
एसकम चकित भये तब कैसे, इन्द्रजालकौतुक लखि जैसे।
मोहन-मुख-मयंक चख गाड़े, चित्र-लिखित इव ता छिन ठाड़े॥
मानव अस उदार जग माहीं, ईस-कृपा कलिजुग महँ आहीं।
जे निज-स्वारथ सकल बिहाई, पर-उपकार करहिं सुखदाई॥
कोप-कृसानु-समन हित जोई, छिमा-नीरप्रद बारिद होई।
जे नर दुस्ट अहहिं अपकारी, तिन पै करहिं अनुग्रह भारी॥

जदपि सतावहिं सठ तऊ, सुजन सुफल तिहि देत।
मनुज उपल सन तरु हनैं, तदपि मधुर फल लेत॥१३॥

परहित-निरत सुजन दुख पाई, रिपुहित होय सतत सुखदाई।
पीड़न कठिन ईख सहि भाई, देय सुधासम रस सुखदाई॥

---

* Sermon on the Mount

† Hate the sin & not the sinner.

काटहि चंदन कठिन कुठारा, निज-परिमल बासत सित-धारा।
धन्य-धन्य गांधी मतिमाना, लखि तुव चरित मोद मन माना ॥
अब हौं निज-बन्धुन मति देऊँ, बैर-भाव तिन कर हरि लेऊँ।
गोरन जाय कह्यो तिन भाई, गांधी सन तुम करी बुराई ॥
परम उदार चरित तिस केरा, बैर भाव नहिं हौं कछु हेरा।
जो तुम माँगु छिमा अब जाई, पाप तुमार सकल धुलि जाई ॥

साजनहिय जनु कुलिससम, सहै विसम गिर-बान।
परदुख-आतप लहि द्रवै, मृदु नवनीत-समान ॥१४॥

गांधी निकट जाय तब गोरे, अनुसय-ताप-बिमल-चित भोरे।
बोले छमव दोस करि दाया, तुम कहँ नाहक बहुत सताया ॥
तुम कहँ निज बैरी हम जाना, तुव मारन निज करतब माना।
अनुसय-अनल जरहिं अब भाई, सुमिरि सुमिरि निज मूरखताई ॥
मोहन तिन कहँ ढाढ़स दीनी, कहि गिर मधुर प्रेम-रस-भीनी।
सोदर-सम तुम अहहु हमारे, भारतीय-बन्धुन-सम प्यारे ॥
सो करि प्रेम परस्पर जीवौ, भ्रातृभाव कर पीयुस पीवौ।
सहित सनेह करहु बिबहारा, तजि कै बैर-बिरोध-बिचारा ॥

मोहन प्रेम-प्रभाव सों, गोरन कहँ बस कीन।
जाति-बरन-अन्तर तजैं, गोरन अस ब्रत लीन ॥१५॥

कांग्रस पुनि मोहन थिर कीनी, *ट्रस्ट बनाय नींव दृढ़ कीनी।
सँगठन-बल निज अधिक बढ़ावा, उपज्यो निजभरोस कर भावा।
सुख सन भारतीय अब बसहीं, गोरे-नाग न तिन कहँ डसहीं।
दुरबल जीवन नरक-समाना, सबल तथैव सुरग-सम माना ॥

---

* Trust.

पुनि मोहन निज गृह प्रति हेरा, निजमनसिसु-सिच्छन प्रति प्रेरा।
अस बिचारि सिच्छा-गृह देखे, ईसा-सिख-संचालित लेखे॥
आपुन रहनसहन सिखरावैं, देय प्रलोभन सिसु फुसरावैं।
निजमतग्रन्थ पढ़ाय अनेका, करहिं सिथिल भारत-मत-टेका॥

सीख पराई ना दिहौं, मोहन निसचय कीन।
सिच्छा देउँ स्वगेह महँ, रखि बारक स्वाधीन॥१६॥

दर्पन-सम मानस सिसु केरा, गहत बिचार-बिम्ब बिनु देरा।
मातपिता-गुरुजन जस करहीं, बारक सहज-रूप अनुसरहीं॥
भाजन नवल चिह्न जिमि दीने, कबहुँ न टरहिं जतन सत कीने।
सिसु-हिय संसकार तिमि जामा, होय सुथिर जीवन-परिनामा॥
तासों सावधान मतिमाना, साधन सोचहिं सुन्दर नाना।
जा बिधि बाल गहहि करि नेमा, भाखा-भाव-भेख-निज-प्रेमा॥
निज-बिचार-भाखा-परिधाना, इन सन प्रीत करहिं मतिमाना।
इन कर उन्नति सन निज देसा, उन्नतिपथ महँ करहि प्रवेसा॥

सिच्छा-सरनि-सुधार सों, होय बाल ब्रतसील।
ब्रह्मचारि संजमनिरत, बुधि-बिबेक-गुनसील॥१७॥

सिच्छासरनि होय सुखदाई, जासों सिसु अनुसासन पाई।
सभ्य-सुसील-धरमरत होवै, पाय बिबेक कुमति सब खोवै॥
मातपिता-गुरु सुर-सम जानै, करतब मुख्य धरम निज मानै।
जीवन सरल भाव अति ऊँचे, जानत नय कर तत्त्व समूचे॥
लोकरीति-निगमागम-ग्याना, पाय मनुज पावत सुख नाना।
आपुन मन-तन-चरित सुधारै, निज सुधार करि अवर उधारै॥
सिच्छा सोइ अमित गुनवारी, इह-परलोक मनुज-हितकारी।
सत्व रु सात्व क करि सुभ जोगू, तन-मन कर सब टारत रोगू॥

सिच्छा सोइ सराहिये, जा महँ होय प्रवीन।
जगत देस अरु आपु हित, मनुज होय नित लीन ॥१८॥
करमसील साहसजुत जोऊ, सुख पावत जग महँ नर सोऊ।
जे पुनि कायर-अवर-अधीना, जीवन-अवधि रहहिं अति दीना॥
अस बिधि पाठ पढ़ावत जोई, सिच्छा गनहु लाभप्रद सोई।
करमवीर नर सतत बनावै, धरमतत्त्व सिगरो समुझावै॥
सेवारत मानव कहँ करई, पर-उपकार-भाव मन भरई।
जा कहँ लहि संजमजुत धीरा, स्वारथ-रहित हरहिं परपीरा॥
सेवा कहँ उत्तम कृति जानैं, पर-उपकार परम सुभ मानैं।
सौच-संतोस-सत्य सन प्रेमा, प्रभु कर भगति अहिंसा-नेमा॥
ब्रह्मचरज-स्वाध्याय-तप, अपरिग्रह - ऋजुभाव।
अस सद्‌गुन लहि मनुजवर, होय देव-अनुभाव ॥१९॥
सिच्छा-सार मनुज कर सेवा, सेवा सन पावत सुखमेवा।
सेवानिरत भयो नित गांधी, पर-उपकार कमर तिन बाँधी॥
एक दिवस आयो इक रोगी, निजकृत-पाप-करम-फल-भोगी।
गलित सरीर कुस्टसन वा का, सोनित स्रवत पूति ब्रन पाका॥
बुद्ध-समान जीव-हितकारी, सिवि-नृप-सम प्रनतारविहारी।
मोहन अहहि दयाब्रतधारी, स्वारथरहित परम उपकारी॥
सेवा दिवस-निसा करि वा की, करि उपचार बिथा हरि वाकी।
सेवाफल ताकहँ प्रभु दीना, आरत-ताप सकल हरि लीना॥
मोहन कहँ आसीस सुभ, आरत-नर तब दीन।
दीनदुखी-जन-तापहर, रहहु सदा सुखलीन ॥२०॥
मोहन सोच कीन मन माहीं, असबिधिमनुज दुखितबहुआहीं।
सो अब करहुँ प्रबन्ध उदारा, जा बिधि पायँ उचित उपचारा॥

औसधगृह तहँ एक बनायो, आरत-जन कहँ सुख पहुँचायो।
मोहन पुनि बिचार अस कीना, पर-उपकार-रहित धिग जीना॥
आरत-नर जग माहिं अनेका, सेवाकरम अहहि मम टेका।
तन-मन-धन सन सेवा कीने, मानव रहहिं सदा सुख-भीने॥
सेवक होय सतत उपकारी, संजमसील धरमब्रतधारी।
अरुज देह अरु चरित उदारा, सेवा-करम पुन्यब्रत धारा॥

मित अहार-बिवहार-गिर, ईस - भजन - सतसंग।
सेवकजन लच्छन अहै, सेवाकरम अभंग॥२१॥

अस तहँ बसत काल कछु बीता, सुखसमेत दुख-अनुभव-रीता।
मोहन जननायक-पद पावा, चरित उदार जगत-मनभावा॥
पुनि तहँ जुद्ध भयो अति घोरा, भिरे परस्पर ब्रिटिसरु बोरा।
समर-कुसल भट अति-बलधारी, जूझहिं कोपसहित ललकारी॥
भिरहिं परस्पर जनु मदमाते, जुग गजराज रोस-रँग-राते।
समरभूमि जिमि पावस-राती, तुपुक-तिमिर सन भीरु डराती॥
करहिं भुसुंडि भयंकर सोरा, पयदपटल जनु पविधुनि घोरा।
भट-तनु स्रवहिं रुधिर-परनारे, बरसहिं जलद जथा जलधारे॥

चमक रहे करवाल तहँ, जस चपला घन माहिं।
गरजहिं तरजहिं बीरभट, जस स्वापद बन माहिं॥२२॥

सस्त्र-प्रहार परहिं तहँ कैसे, बरखा-उपल खेत महँ जैसे।
घायल सुभट गिरहिं छिति कैसे, असनिपात गिरिसेखर जैसे॥
कायर नर रन-खेत पराईं, पथिक घनाहत गृह-प्रति धाईं।
बीर महारथि थिर तहँ कैसे, झंझा चलत हिमाचल जैसे॥
रुण्ड रु मुण्ड गिरहिं चहुँ ओरा, बरखाहत जिमि चटक-चकोरा।
हिनहिन-नाद तुरग तहँ करहीं, झींगुर झिल्लि सोर जनु करहीं॥

उत्सुक भट साजहिं रनसाजा, हियहुलास मुखमंडल राजा।
मीचुबधू-परिनय हित जाईं, लौहमुकुट-तनुत्रान सजाईं॥
बीरन कर उच्छव भयो, होरि खेलि रिपु संग।
पिचकारी जनु तोप हैं, सोनित कर सुभ रंग॥२३॥
सरल-चित्त-मानव-मन सोचू, अहहि समर कारज अति पोचू।
करत ह्रास धन-संपति केरा, जीवन-नास तथा बहु हेरा॥
बिधवा अरु अनाथ बहु होईं, निज अधार जीवन कर खोईं।
अन्न-अभाव कस्ट बहु होवै, भूखो नर गौरव निज खोवै॥
उन्नति सकल तुरत रुकि जाई, तजि इक सस्त्र-अस्त्र-अधिकाई।
अखिल कला साहित अरु गाना, होयँ थगित बाधा लहि नाना॥
कुमति भाव अति उन्नति पावैं, उत्तमभाव सिमिट सब जावैं।
बैरबिरोध करहिं चित डेरा, मानव सत्रु होय नर केरा॥
जुद्धभूमि महँ भिरहिं नर, जस स्वापद बन माहिं।
समरथली पसुता लसै, मानवता कहुँ नाहिं॥२४॥
मोहन खबर पाय रन केरी, बन्धु बुलाय सकल बिनु देरी।
परामरस पुनि तिन सन कीना, समरकाल करतब निज चीना॥
निज निज सम्मति देहिं सुजाना, उचित उपाय बतावहिं नाना।
तिन महँ अधिक कहहिं अस बाता, ब्रिटिस साथ जनि देवहु ताता॥
ब्रिटिस अहहिं हम कहँ दुखदायक, सालहिं मरम निसित जनु सायक।
गनहिं हमहिं आपुन कर दासा, इनते होय न कछु हित-आसा॥
सो हम रहि तटस्थ रन देखैं, सत्रु-गरव-मरदन सुभ लेखैं।
होय बिबस हम पहँ जब आवैं, निज सठकृति ऊपर पछतावैं॥
हम तब करहिं सहायता, मानहिं जब उपकार।
बचन देयँ पुनि बिजय लहि, देवहिं उचित सुधार॥२५॥

गांधि कह्यो तिन कहँ समुझाई, हम कहँ उचित नहिंन अस भाई।
उपकारी सन करत भलाई, कहहु पुन्य किमि मानव पाई॥
विनिमय ताहि गनहिं मतिमाना, पर-उपकार कोटि नहिं आना।
दुरजन सन हित जे नर करहीं, मनुजमौलि तिन कहँ बुध धरहीं॥
पर-उपकार गनहु तुम नीका, जासों मनुज होय जग-टीका।
सठ सन साठ्य करहु अस नीती, धरम-विरुद्ध न आरज-रीती॥
बल सन जोउ सत्रु बस आवै, अवसर लहि पुनि मारन धावै।
अरि पुनि प्रेम संग बस कीना, होय निरन्तर बैर-बिहीना॥

प्रेम-भाव सन करहु बस, निज अराति तुम मीत।
मधुर बीन धुनि उरग जस, मांदरि करहि सप्रीत॥२६॥

पुनि बिस-दसन काढ़ि तिस केरे, ताहि नचावत प्रति गृह फेरे।
बिसम-काल करि हित इन केरा, करहु अधीन इनहिं मत मेरा॥
उपकृति-भार-बिवस नर भाई, तजत अवसि निज सहज बुराई।
तिमि अंगरेज दुखित अब भारे, सुमिरि सुमिरि उपकार हमारे॥
आयतिकाल नहिन दुख देहीं, मम अधिकार नहिन हरि लेहीं।
मोहन वचन मधुर अति प्यारे, सब कहँ रुचहिं परम हितवारे॥
भाखहिं गांधि वचन तुव मानी, करिहैं तन-मन-धन-कुरबानी।
वल्लमटेर-चमू तब साजी, मोहन हाथ रही जस-बाजी॥

सेनापति पहँ जाय तब, मोहन दियो सँदेस।
घायल सेवाहित सजें, मम जन मिलै निदेस॥२७॥

सेनापति हरखित कह वा सों, करहु करम निज अवहित जासों।
जीवन-हानि निपट नहिं होवै, घायलजन-सेवा सुभ होवै॥
अति साहस सन जावहिं धीरा, समरथली जहँ जूझहिं बीरा।
घायल-जन सिबिका महँ डारी, नयहिं तुरन्त सरन सुखकारी॥

बरसहिं सीसगुलिक चहुँ ओरा, मनहु गगन सों कुलिस कठोरा।
पै नहिं धीरबीर भय मानैं, करतबनिस्ठ तुच्छ जम जानैं ॥
स्वारथहीन चरित लखि वा का, सेनापति बरनत जस थाका।
धन्य धन्य भारत कर बीरा, परहित कस्ट सहहु तुम धीरा ॥

निरखि तुमारी बीरता, मम हिय हरख अपार।
करहुँ जाय महिपाल सों, तुव महिमा-बिसतार ॥२८॥

संकट तब समान निज जानी, सदय भये गोरे अभिमानी।
भाखहिं भारतीय तुम भाई, मम-तुव भूप एक सुखदाई ॥
आवहु तजि सब बैर-बिरोधा, करैं परस्पर भायप-बोधा।
ईस-प्रसाद ब्रिटिस जय पाई, बाजी देस समस्त बधाई ॥
माननीय कछु गौर उदारा, तिन मोहन-स्तुति-वाक उचारा।
तब मोहन सोच्यो मन माहीं, आफ्रिक काम मोर अब नाहीं ॥
अब निज देस जाय कछु करिहौं, सेवा करि वा के दुख हरिहौं।
ग्यान-अभाव-रोग-दुसकाला, इन सन परयो देस कहँ पाला ॥

देस-हानिकर दोस सब, अहहिं सतत दुख-खान।
बाँधि कमर इन सन लरौं, होय न जस हित-हान ॥२९॥

भारतीय तब मिलि मत कीना, चहिय कछुक मोहन कहँ दीना।
इन उपकार कियो अति भारी, सांत कीन दुखदरिददवारी ॥
जे जन कृत उपकार न मानैं, निज हित पाप-गरत ते खानैं।
बेद सकल अघ-सोध बतावा, पै न कृतघ्न-सुधार उपावा ॥
अस बिचारि करि उच्छव भारा, प्रस्तुत कीन बिबिध उपहारा।
बिनय समेत कहहिं सुनु गांधी, तुम सन आस-रसरि हम बांधी ॥
कबहुँ न भूलि सकैं उपकारा, जब लगि गंगजमुनजलधारा।
गहहु नाथ लघु भेंट हमारी, होय कृपा हम पै अति भारी ॥

मोहन मृदु मुसकान सन, कह्यो रखहु उपहार।
सेवक कहँ सेवा करत, सेवा मृदु सुखसार ॥३०॥

तासों धन्यवाद करि ताता, तुव उपहार तुमहिं पलटाता।
कांग्रस कहँ देवहु सब दाना, जासों होय परम कलयाना॥
सेवक कहँ सेवा-फल-दाना, गरलसमान हानिकर जाना।
तब तिन बिनय कियो कर जोरी, छमहु नाथ हमरी सब खोरी॥
लखि तुव त्याग चकित जग सारा, अब इक लघु अनुरोध हमारा।
रतनहार हीरकजुत सुन्दर, सोहै रुचिर मातु-गल अन्दर॥
सो तुम ग्रहन करहु अब मोहन, होय कृपा अति-सै मनमोहन।
सेवक बचन स्वामि परमानै, सो अति मोद चित्त महँ मानै॥

मोहन-चित्त बिचार तब, उपज्यो सहज सुभाय।
कसतूरी कहँ परखिहौं, भेंट देय ललचाय ॥३१॥

पतनी कहँ बुलाय कह मोहन, बानी मधुर प्रेमरस-दोहन।
प्रेयसि भेंट बिबिध इन आनी, मम पग आय धरी मनमानी॥
कछु उपकार कियो इन केरा, देवहिं अब इनाम तिस केरा।
सेवा-प्रतिफल बिस-सम जानौं, भेंट ग्रहन अनुचित अस मानौं॥
सो हौं करि निसेध इन केरा, कांग्रस कहँ देवहु अस प्रेरा।
अब अनुरोध करहिं सब आई, देवहु भेंट प्रिया कहँ भाई॥
सो तुम मनइच्छित धन लेहू, संका कहँ जनि मन-पद देहू।
गांधिप्रिया बोली मृदुबानी, बिनय-सनेह-मधुर-रस-सानी॥

ग्रहन करन चाहौं नहीं, इन कर कछु उपहार।
चरनचिह्न चलि नाथ तुव, गनहुँ त्याग सुखसार ॥३२॥

पै मम हृदय नाथ अस इच्छा, तासों माँगहुँ अब इक भिच्छा।
कन्या इक सुसील अलबेली, ल्यावहि मम सुत ब्याहि नबेली॥

तब ता कहँ कछु मंडन देऊँ, निज हिय अमित सुरगसुख लेऊँ।
सो इक रतनहार हौं लेऊँ, सेस भेंट वापस करि देऊँ॥
करहु प्रमान मोर मत स्वामी, सुचि-मम-मानस-अन्तरजामी।
सुनि तिय-बचन गांधि समुझावा, सेवाधरम-मरम जतरावा॥
कसतूरि अस सेवक भावा, सेवा-प्रतिफल चहत न पावा।
कारज तासु करत प्रभु पूरे, सरनागत-सुखदायक रूरे॥

निज-भगतन चिन्ता हरै, कृपासिंधु जगदीस।
मनबांछित पूरन करै, बिनु मांगे खलु ईस॥३३॥

सुतबिवाह-उच्छव सुभ-काला, लेवहिं तुव सुधि दीनदयाला।
तुम कत सोच करहु प्रिय वाकी, सुधि लैहैं ईस्वर तब ताकी॥
कांग्रस-सचिव बोलि पुनि भाखा, कोस सुथिर चहियत धन राखा।
पर-उपकार काज करि वासों, पावहु लाभ देस हित जासों॥
जाया मानि वचन पति केरा, रतन-ढेर इक आँख न हेरा।
पतिव्रत धरम-मरम बस एहा, पति-अधीन मानसधन-देहा॥
पति निज धरम-करम-जस-दाता, इह-परलोक सकलसुखदाता।
जाया सीस-मुकुटमनि सोहै, प्रेम-पुनीत तासु मन मोहै॥

प्रमदा सो बड़भागिनी, जा पै दयित दयाल।
सेवा करि आदर लहै, सुख सन होय निहाल॥३४॥

ख्रिस्ट अवद उन्निससत एका, गयो सुदेस पूरन करि टेका।
राजकोट जाया-सुत छाँड़े, निज विचार सेवा महँ गाड़े॥
लोकसभा-उच्छव सुनि काना, मानस तासु न मोद समाना।
नेता सकल देस कर जोऊ, अवसि पधारहिं उच्छव सोऊ॥
तिन कर दरसलाभ हित मोरा, होवहि अवसि नहिन कछु थोरा।
देस-दसा सोधन-हित सारे, रहहिं सदा चिंतित अति भारे॥

ता के चरन-चिह्न पगु धारी, सेवा करहुँ सक्ति-अनुसारी।
उत्तम-जन जनु थंभ-प्रकासा, पन्थहीन लखि पावहिं आसा॥
दिनसा वाछा अहहिं तहँ, उच्छव कर अध्यच्छ।
महतादिक नेता जुरे, नीतिरूप परतच्छ॥३५॥
गोखल नाम तहाँ इक नेता, सासनतन्त्र - ग्यान - समवेता।
आरज-धरम-मरम कर ग्याता, दीन-दुखी-जन-आरति-त्राता॥
राजसभा तिन आदर पावा, धरत देस-सेवा-हित चावा।
ता कहँ दीन-दसा सब भाखी, कह्यो अफ्रिक-हित लेवहु राखी॥
सठ अंगरेज सतावहिं घोरा, निरखि कलेस द्रवत हिय मोरा।
पाय सहाय सबल अब तोरा, पूरन होय मनोरथ मोरा॥
भूपति सन भाखहु अस जाई, प्रजा बिकल किमि नृप सुख पाई।
सो कछु करहु उचित उपचारा, जा विधि टरइ प्रजा-दुख सारा॥
लोक सभा महँ गोखले, अस कीनो प्रसताव।
आफ्रिक दुख टारन करौ, लखौ आव नहिं ताव॥३६॥
बचन तासु सिर-आँखन लीना, प्रस्तुत बात समरथन कीना।
बोले बन्धु आफ्रिक महँ जोऊ, तिन कहँ होय कलेस न कोऊ॥
तुम पुनि जाव तहाँ अब मोहन, चिन्ता हरहु तासु मनमोहन।
करिहैं हम धन-संग्रह भारा, जासों तिन कहँ मिलहि सहारा॥
गोखल तार नृपति कहँ दीना, आफ्रिकजन-दुख-बरनन कीना।
एडवरड भूपति सुभ नामा, जनरंजन सुभगुन-गन-धामा॥
चैम्बरलेन सचिव निज प्रेरा, आफ्रिक जाव मीत बिनु देरा।
भारतजन - अंगरेज - बिबादू, मो हिय करत अपार बिसादू॥
अति कलेस अनुभवत हौं, सुनि निज परजा-भेद।
अस विधि कारज करहु तुम, मिटै जथा मम खेद॥३७॥

नृप-निदेस लहि सचिव सयाना, आफ्रिक प्रति द्रुत कीन पयाना।
भारतीय सुनि ता कर आवन, पठ्यो सँदेस मोहन मनभावन॥
आवहु तुरत काज सब त्यागी, जनहित-काज-परम-अनुरागी।
मोहन सुनि पुकार तिन केरी, आफ्रिक-गमन कियो बिनु देरी॥
पर-उपकार निरत जे सज्जन, स्वारथ-सलिल करहिं नहिं मज्जन।
पर-उपकार धरम निज जानी, सेवारत नित होयँ अमानी॥
चैम्बरलेन निकट पुनि जाई, भारतीयदुखगाथ सुनाई।
तिन तब गोरन कहँ समुझावा, भारतजन सन बैर न भावा॥

सोदर सम सहवासि कहँ, जानि सदा तुम मीत।
रहौ परस्पर प्रेम सों, सुजनन कर अस रीत॥३८॥

भारतीय सन पुनि तिन भाखा, तुव हित सतत हिये नृप राखा।
करहु न कछु मन माहिं गलानी, गोरन कहँ आपुन रिपु जानी॥
जन-रञ्जन एडवरड उदारा, हितचिन्तक जनता कर भारा।
वा के राज माहिं दुख कोई, निबल मनुज कहँ कबहुँ न होई॥
ब्रिटिश-राज-सासित परिवारा, ता के उभय अंग-समसारा।
सो करि मेल परस्पर दोऊ, राजसमृद्धिसहायक होऊ॥
चैम्बरलेनबचन सुखकारी, भारत-जन-हियबेदन टारी।
घायलजन घृतसेचन पावै, घावजनित पीरा बिसरावै॥

बिसरि गये दुख-दरद सब, दीन भारती लोग।
दुख भूलैं जिमि रंकजन, पाय बिपुल धन-जोग॥३९॥
साजन बिनहि प्रयास, गांधिचरित सों सीखिहैं।
अटल ईसबिसवास, छिमा-दया-सेवादि गुन॥४०॥

———

चतुर्थ सोपान

सत्याग्रह संतत सुखदाई, हरन करत द्रुत सकल बुराई।
सत्याग्रह कर धरम - अधारा, देय मनुज महँ सक्ति अपारा ।।
सत्याग्रह सुभ बृजिन-अराती, सत्यधरम कर ध्रुव पखपाती।
सत्याग्रह आतमबल-दाता, बिसम-काल मानव-परित्राता ।।
सत्याग्रह आयुध अति भारी, पातक-रिपु द्रुत देत पछारी।
सत्याग्रह निरबलबलकारी, तासु सकल दुख-दारिदहारी ।।
सत्याग्रह जिमि जीवन-मूरी, नव बल देत मनुज कहँ भूरी।
सत्याग्रह जिमि सुरसरिधारा, नासत छिन महँ दुरित अपारा ।।

सत्याग्रह सुभ धरम अस, करहु सत्रु सन नेह।
तिस के टारहु दोस सब, करि कै सत्य-सनेह ।।१।।

समय पाय गांधीपरिवारा, सोभित भयउ पाय सुत चारा।
धरम-अरथ-अपबरग रु कामा, बिलसत सतनु मनहु तिसु धामा ।।
हीरालाल प्रथम सुत जोऊ, हीरक इव उज्वल दुति सोऊ।
अवर सूनु मनिलाल सुनामा, बाल-सिरोमनि गुनगनधामा ।।
तीजा तनय राम कर दासा, मोचहि मात-पिता-दुखपासा।
सुत चतुर्थ देवी कर दासा, मातपिता कर मूरत आसा ।।
मानहु बेद चारि बपु धारे, गांधी-गेह समुद पगु धारे।
जननी - जनक - नेह - सुभवारी, पनपे पाय बिटप-सम चारी ।।

गांधि-सदन जनु सुरग-सम, बिगत - क्लेस - लवलेस।
करहिं कृपा करुनायतन, काटहिं सकल कलेस ।।२।।

अरथलाभ अरु अरुज सुखारी, बानी मृदु बसवरतिनि नारी।
पुत अधीन विद्या गुनकारी, जीवन-सुख बरनत मतिधारी॥
आतमबल ईस्वर-बिसवासा, आपत-काल माहिं सुभ आसा।
पर-उपकार सत्य सन प्रेमा, संजम-अभय-अहिंसा - नेमा॥
धीरज - सत्य - अलोभ - अमाया, सौच-बिबेक-छिमा अरु दाया।
गुन तिन सकल जनक सों पाये, चारुचरित अति बाल सुहाये॥
मोहन सीख तिनहिं अस दीनी, गहहु धरम-सरनी सुख-भीनी।
आतमबल जीवहु जग माहीं, पर-अधीन सपने सुख नाहीं॥

सकल सिरोमनि गुन अहै, तात आत्म-सम्मान।
जा के दुखद अभाव महँ, मानव मृतक - समान॥३॥

निजकर करहु निखिल निजकामा, निज-अवलंब अहहि सुखधामा।
आपुन आय अलप सुखदायी, चाकरि बहुवेतन दुखदायी॥
बसन सुदेसि सरल सुभ धारौ, सकल प्रदरसन तुम तजि डारौ।
संजमजुत नित करहु बिहारा, राखौ सरल उदार बिचारा॥
बैर-विरोध गरलसम जानौ, प्रेमभावहित घातक मानौ॥
मानव सकल अहहिं जस भ्राता, गुरु-लघु-भेद गनहु दुखदाता॥
जनक हमार अहै जगदीसा, ता के पूत सुजन अरु खीसा।
रहहु परसपर सहित सनेहा, निगमागमसिच्छातत एहा॥

भव-दुख-तारन-नाव-सम, जगपति महँ बिसवास।
सकल - ताप - बाधाहरन, टारन जम-कृत त्रास॥४॥

---

* अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या, षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥
(विदुर नीति)

अटल एक ईस्वर-बिसवासा, पूरत सकल मनुज कर आसा।
दैव-बिबस मनिलाल बिचारा, आरत भयो बिसम जुर द्वारा ॥
बैद अनेक करहिं उपचारा, पै जुर कठिन टरत नहिं टारा।
बैद बिचच्छन इक तहँ आवा, रोगहरन-हित अमित उपावा ॥
कीने लाभ करहि नहिं कोई, मरुथल बृस्टि बिफल जस होई।
मोहन कहँ तब तिन समुझावा, मोर निकट बस एक उपावा ॥
मुर्गा-मांस-जूस अब देऊ, रुजपरिहार सकल करि लेऊ।
मोहन तुरत वाहि निरवारा, करत पतित नर पिसित-अहारा ॥

जीव-दया पावन परम, पसुमारन अतिपाप।
मूक जीव जे मारहीं, सहहिं नरक-दव-ताप ॥५॥

निगमागम - इतिहास - पुराना, पिसित-अहार अधम करि जाना।
भूत-दया सुभ धरम बखाना, पसुमारन पातक अस माना ॥
भूत-दया जस सुरगनिसैनी, जीव-हनन किरिया दुख-दैनी।
आपुन प्रान जथा मम प्यारे, तिमि निज प्रान चहहिं जिय सारे॥
रसना-रस लगि जीवन मारैं, निजकृत पुन्न भसम करि डारैं।
गो-गज-बाजि-अन्न-धन-दाना, जग महँ दान अहहिं बिधिनाना ॥
जीवन अभयदान सम कोई, अवर दान उत्तम नहिं होई।
नर-तनु जानि छनिक तुम भ्राता, कहहु करहु कत प्रानिन घाता ॥

सागपात कहँ खाय कै, तृपत होय नर-देह।
मूक पसुन कहँ मारि कै, कत खावहिं नर खेह ॥६॥

भौतिक तनु द्रुत नासनहारा, धरम कलप लगि चालनहारा।
अमर धरम मतिमान बिहाई, छनिक देह पाछे कत धाई ॥
सो तुम जाव तोर धनबादा, हौं नहिं तजहुँ धरम-मरजादा।
अब गहि सरन सुखद प्रभु केरी, जल-उपचार करहुँ बिनु देरी ॥

विधि-अनुसार किये उपवासा, रोगहरन कर होवहि आसा।
बैद्-बचन सिगरे तब गांधी, निज सुत करन कहे हिय-बाँधी॥
बारक बीर तुरत कह ताता, जल-उपचार करहु मन-भाता।
अन्न-अभाव छुधित मरि जाऊँ, पै नहिं आमिस-भोजन खाऊँ॥

साहसजुत सुनि सुतबचन, गांधी मन अति मोद।
पावस ज्यों केकी सुखी, उनयो देखि पयोद॥७॥

ईस्वर-सरन गही तब गांधी, जल-उपचार करन मति बाँधी।
जुग-कर जोरि बिनय तिन कीनी, उचरी बाक भगति-रस-भीनी॥
अहहु ईस सरनागतपाला, करहु कृपा अब दीनदयाला।
नैया भँवर परी अब मोरी, निकसै कत बिनु किरपा तोरी॥
जनकसुता कर करुन पुकारा, सुनि रघुनाथ लंकपति मारा।
द्रुपदसुता कर संकटभारा, माधवरूप तुरत प्रभु टारा॥
लखि प्रहलाद दहत दुखदावा, नाथ कृपा करि कस्ट मिटावा।
नरनाहर-तनु तब तुम धारा, हिरनकसिपु छिन माँझ पछारा॥

नाव परी मंझधार महँ, करुनाकर भगवान।
करुना-चप्पु लगाय कै, करहु सकल दुखहान॥८॥

दीनदुखीजन करत पुकारा, द्रवत ताहि सुनि जगतअधारा।
भगतसहाय तुरत भगवाना, ता हित चरित करत बिधिनाना॥
अमियसमान सरन गहि वाकी, बिपद्-गरल-मुरछा थिर का की।
सुनि करतारि उड़हिं खग सारे, राम सुमिरि तिमि पातक भारे॥
रामनाम जस भानु-प्रकासा, मोह-तिमिर कर सत्वर नासा।
रामनाम जस कैठिन कुठारा, मोहबिपिन छिन माहिं उपारा॥
रामनाम जलजान-समाना, बिसय-जलधि-दुख टारत नाना।
रामनाम अमृतफल जानौ, बिसय-ब्याधि कर भेसज मानौ॥

जल-भेसज मोहन कियो, सुमिरि राम कर नाम।
ईस-कृपा ते तनयजुर, घटन लग्यो प्रति जाम ॥९॥
नाम-प्रभाव बिसम गद भारा, भानु-उदय हिमकन इव टारा।
नाम-प्रभाव चकित नरनारी, ईस-कृपा दुखटारन हारी॥
नाम-प्रभाव मन्त्रसम जानौ, रोस-उरग कर भेसज मानौ।
नाम-प्रभाव अंकुस इव छोटो, मदमातंग करत बस खोटो॥
नाम-प्रभाव प्रभाकर - रेखा, मोह-तिमिर-सिर गाड़त मेखा।
नाम-प्रभाव सँजीवनमूरी, करत काम-मुरछा कहँ दूरी॥
नाम-प्रभाव कुलिसकर सूची, काटत लोभ-बिलौर समूची।
नाम-प्रभाव लघु-सायक जानौ, अहभिति कवच-भेद-पटु मानौ॥
ईस-कृपा-वर पाय कै, मानव होय निहाल।
आधिव्याधिदुखनसतअस, गरुड़ पेखि जिमि ब्याल ॥१०॥
तजि अभिमान गहे हरि-टेका, कस्ट कलेस रहत नहिं एका।
अस मोहन चरितारथ कीना, हरि निज-जन-उपकार-प्रवीना॥
दिव्यचरित लखि मोहन केरा, सुजनसमूह प्रनय सन प्रेरा।
देवत साधुबाद तहँ आई, हिय अघात नहिं महिमा गाई॥
कहत चरित तुमरो लखि गांधी, कलिजुग धरम-आस हम बांधी।
वृत्त उदार भाव अति रूरे, सन्तसमान तोर गुन पूरे॥
अस उपाय कछु करहु पुनीता, लोक-सुधार होय जस मीता।
पोलक नाम तहाँ इक साजन, चारु-चरित्र सकल-गुन-भाजन॥
मोहन सों बिनती करी, जोरि जुगल तिन हाथ।
आस्रम सीघ्र बनाय कै, साधक करहु सनाथ ॥११॥
जहँ बसि लहहिं लोक सुभ सिच्छा, मानसहित जीवन कर इच्छा।
पर-उपकृति-हित त्याग सुहेला, जीवन दान उचित लखि बेला॥

लोक-सुधार धरम निज जानी, सेवा करहिं रैन-दिन ग्यानी।
निजकर करहिं सकल निज काजू, तजि कै भोग-बिलास-समाजू ॥
सम-दम-त्याग-छिमा अरु दाया, पर-उपकारभाव गतमाया।
साँच-प्रेम-साहस-बल-ग्याना, सबगुन लहि पुनि रहहिं अमाना ॥
मोहन बिनय-मधुर सुनि बानी, आस्रम सीघ्र रचन की ठानी।
संत उदारचरित सुखदाई, पर-उपकार करत द्रुत धाई ॥
मोहन तब थापित कियो, इक आस्रम सुभ थान।
नाम फिनिक ता कहँ दियो, अरथ-समेत महान ॥१२॥
*फीनिक नाम बिहंगम-राजा, भोगत सकल लोक-सुखसाजा।
चतुरपंचसतहायन लागी, पुनि निज देह दहत प्रबलागी ॥
भसम होय नवजीवन पाई, जुग जुग लहत भोग-समुदाई।
आस्रम तिमि मोहन कर थापा, रखहि कुसल ननु आपुन आपा ॥
बिपद्-अनल परि लहि नव प्राना, चरित उदार करहि जग नाना।
भारतीय भ्राता अरु गोरे, भये प्रविस्ट तहाँ नहिं थोरे ॥
मोहन प्रमुख भयो तिन केरा, पर-उपकार-भाव सन प्रेरा।
सेवा-ब्रत-दीछा तिन दीनी, सिच्छा-सरनि सुघर धरि लीनी ॥
†रूस देस कर सिद्धजन, टाल्सटाय मतिमान।
सरल-सुखी-जीवन-बिधी, ग्रन्थन कीन बखान ॥१३॥

---

* Phoenix—एक काल्पनिक पक्षी जिसकी आयु ४-५ सौ वर्ष मानी जाती है। यह अग्नि-प्रवेश कर के नवजीवन प्राप्त करता है।

† टाल्स्टाय—रूस के प्रसिद्ध सरल जीवन के पक्षपाती महामना साहित्यकार। इनका प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त विलासिता-पूर्ण था, परन्तु एक क्रान्तिकारी परिवर्तन के परिणाम स्वरूप इनका जीवन-क्रम सर्वथा पलट गया। प्रसिद्ध पुस्तकें—युद्ध और शान्ति, मेरी मुक्ति की कहानी, जीवन-साधना, सामाजिक कुरीतियाँ आदि।

*रस्किन इक अंगरेज उदारा, जीवन-दधि जिन सब मथि डारा।
†सरब-उदय नवनीत - समाना, काढ़ि कियो उपकार महाना॥
जीवन-सार सकल भरि दीना, जग-हित-काज अनूपम कीना।
लघु पुस्तक जनता हितकारी, अगद-समान अमित गुनवारी॥
कारज करहु मीत तुम सोई, जा सों हित समाज कर होई।
सम बकील अरु नापित केरा, धंधा रुचिर सुमतिजन हेरा॥
नहिं बिबसाय गनहु कोउ गंदा, करम बनावहिं ऊँच रु मन्दा।
जीवन सुखद सरल गतमाया, कृसक-जनन कर अति मनभाया॥

सरब-उदय सों त्रिबिध अस, सीख अनूपम पाय।
आस्रम-हित नियमावली, मोहन रची सुभाय ॥१४॥

गीता बैबल अवरु कुराना, तिन सन रतन ग्रहन करि नाना।
कंठहार इक रुचिर बनायो, निज छात्रन गर महँ पहिरायो॥
तिन कहँ स्रम-महिमा समुझाई, स्रम करि मनुज परम सुख पाई।
संजम-जुत जीवन कर नीका, होय सकत मानव जगटीका॥
कपट-रहित कारज निज कीजै, अछल-चित्त हरि तुरत पसीजै।
ईस-दया महँ अटल भरोसा, भरत सकल नर-आसा-कोसा॥
सम-संतोस धरहु मनमाहीं, तिन सम आन बिभव जग नाहीं।
कोप-अनल दाहक अति भारी, मन-कानन कहँ देत पजारी॥

---

* जान रस्किन—इङ्गलैण्ड के १९वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध लेखक। इन्होंने साहित्य, कला तथा अर्थशास्त्र-संबंधी कई पुस्तकें लिखीं। म० गांधी इनकी 'Unto The Last' नामक पुस्तक से बहुत प्रभावित हुए।

† सरबउदय—महात्मा गांधी द्वारा प्रचलित 'सर्वोदय' नामक जन सुधार का कार्यक्रम, जिसका बीजमन्त्र उन्हें रस्किन की इस पुस्तक से मिला था।

छमा-दया-सुचिता - धृती , साँच - प्रेम - बिसवास ।
या गुनमाल-प्रभाव सों , जीवन लहत बिकास ॥१५॥
रहहिं परस्पर सब सह-प्रेमा , करहिं समुद निसदिन नितनेमा ।
आस्रम-नियम निभावहिं कैसे , करतब-बद्ध सुभटजन जैसे ॥
पोलक-रीच-वेस्ट मतिमाना , मोहन कहँ नेता निज माना ।
सुभ उपदेस ग्रहन करि वा का , गनहिं अपार अनुग्रह वा का ॥
*जीवन सरल भाव अति ऊँचे , गुन तनु धरि जिमि आय समूचे ।
सत्य - प्रेम - करुनावरदाना , पावहिं जीव बिघन तजि नाना ॥
ओजपुंज आस्रम कर बासी , पावहिं अमित सांति-धन-रासी ।
अभयदान पावहिं सब जीवा , पियत प्रेम रस होवहिं खीवा ॥
आस्रमपद पावन परम , सांति-सदन सुख-धाम ।
प्राकृत सोभा पाय कै , बिलसै ललित-ललाम ॥१६॥
भारतमत नामक अखबारा , काढ़ि प्रचार कीन तिस द्वारा ।
मेलमिलाप-भाव दृढ़ कीना , निज आदरस प्रसारित कीना ॥
भूप-प्रजा मधि दूत समाना , पत्र सँवारत कारज नाना ।
राज-निदेस प्रजा पहँ ल्यावै , प्रजा-कलेस नृपहिं समुझावै ॥
हेम-जँजीर प्रेम कर बाँधी , मेले उभय चित्त अस गांधी ।
प्रजापाल भूपति कर नामा , राजभगति परजा कर कामा ॥
नाम जथारथ जा बिधि होवै , कस्ट-कलेस तुरत सब खोवै ।
मिलहिं परस्पर प्रेम-समेता , भेददनुज-मारन धरि चेता ॥
अस बिधि तहँ गांधी कियो , प्रेम - पियूस - प्रसार ।
बैर-गरल-मुरछित प्रजा - भूप भये सुखसार ॥३७॥

---

* Plain living & High Thinking. (Wordsworth)

सेवा-धरम-निरत पुनि गांधी, जीवन सरल करन मति बाँधी।
जनसेवक कर जीवन रूरा, स्रम-तप-त्याग आदि भरपूरा॥
भोग-बिलास नाम नहिं लेवै, बिसयनिरोध माहिं चित देवै।
तन-मन-वचन करम करि नीका, सरल-सुभाव बनहि जग टीका॥
लोभबिहीन मानमदहीना, पर-उपकार धरम महँ लीना।
सुन्दर सुभग बसन नित धारै, सुभ बिचार निज चित्त सुधारै॥
दैनिक स्रम जानत निज धरमा, सेवा गनहि परम सुभ करमा।
धरमदेस-हित जीवन धारै, समय परे तन-मन-धन वारै॥

ब्रह्मचरज व्रत जानहू, तासु प्रान - आधार।
ब्रह्मचरज सों लहत है, बीरज-बल सुखसार॥१८॥

ब्रह्मचरज गुनकंचन-खाना, ब्रह्मचरज बलबुद्धि-निधाना।
ब्रह्मचरज सुख-संपत-दाता, मनतन-आधिब्याधि-भयत्राता॥
ब्रह्मचरज मनमथ-रिपु-नासी, ब्रह्मचरज प्रतिभा-परकासी।
ब्रह्मचरज आतमबल - दाता, ब्रह्मचरज सुभकरम-बिधाता॥
ब्रह्मचरज जनु सक्रसमाना, हनत बृजिन-दानव बलवाना।
ब्रह्मचरज मृत्युंजय जानौ, संभुसमान मार-रिपु मानौ॥
ब्रह्मचरज जस राम खरारी, देबत पाप-असुर कहँ मारी।
ब्रह्मचरज महँ सब गुन कैसे, बसहिं सकल पद गजपद जैसे॥

धरम-सुजस-नीरोग कर, दाता परम उदार।
ब्रह्मचरज चिर आयुप्रद, सब अभिमतदातार॥१९॥

ब्रह्मचरज-बल सासन चालै, तासु अधार प्रजा नृप पालै।
ब्रह्मचरज-बल लहि कुल-ईसा, ब्रह्मचारि कहँ देत असीसा॥
ब्रह्मचरज कन्या पति पावै, सुभ-संतति-सुख पाय अघावै।
ब्रह्मचरज-बल नर मतिमाना, करहिं चरित अबदात महाना॥

ब्रह्मचरज-बल दुजवर ग्यानी, पढ़हिं मरमजुत आगमबानी।
ब्रह्मचरज-बल मुनि तपरासी, टारहिं सकल पाप-तम-रासी॥
ब्रह्मचरज-ब्रत पाय पुनीता, देवन दुरजय कालहु जीता।
ब्रह्मचरज-बैभव गुनकारी, उभय लोक महँ स्रेयस-कारी॥
नाव बैठि जिमि जलधि-जल, सहज करहिं नर पार।
ब्रह्मचरज भव-उदधि सों, पार उतारनहार॥२०॥
ब्रह्मचरज-निसचय करि गांधी, बिसय-बिकार-त्याग मति बांधी।
गृहजीवन बंधन इव माना, गजपदबंध - अलान - समाना॥
संतति-सुख बंधन अति भारी, पर-उपकार- भाव - छति - कारी।
मोहबिबस बपुरे गृहबासी, फिरहिं उदरहित दसन निकासी॥
स्वान जथा जा सन कछु पावै, ता कहँ छिति परि उदर दिखावै।
निज गौरव कुल-मान बिहाई, रगरहिं नाक जहाँ तहँ जाई॥
धरम-करम तजि स्वारथ लागी, निज-हितबिपिन देयँ जनु आगी।
पर-उपकार-निरत नर जोऊ, गृहजीवन-दुख-आकुल सोऊ॥
पतनी कहँ तब बोलि कै, गांधि कह्यो समुझाय।
तब अनुमोदन पाय कै, धरम चरहुँ चित लाय॥२१॥
पर-उपकार धरम निज मानौं, ता हित त्याग उचित अब जानौं।
*सुजन गनहिं जग निज-परिवारा, दुरजन निज-कुटुंब जग सारा॥
स्वारथ-त्याग बिना नर कोई, पर-उपकार-जोग नहिं होई।
तासों गृहबंधन तजि सारा, मानहुँ सकल बिस्व परिवारा॥
इन्द्रियदमन समन मन केरा, बांछित अहहि बिमल ब्रत मेरा।
तो कहँ अब जाया नहिं जानौं, हितकर परम सखा सम मानौं॥

---

* अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ (पञ्चतन्त्र)

अम्ब-समान सदा सुखकारी, सचिव-तुल्य मतिदेवनहारी।
नहिं कलत्र-सम तो कहँ देखौं, ललना-रूप भवानी पेखौं ॥
निज पति कर सुनि बचन अस, नारि उठी अकुलाय।
पतिब्रत धरम बिचारि पुनि, निज मानस समुझाय ॥२२॥
गांधिप्रिया बोली मृदुबानी, प्रेम पुनीत मधुर रस-सानी।
बांछहु नाथ तजन गृह-धरमा, रखि उछाह सेवाहित-करमा ॥
सो तुम करहु उचित जस जानौ, निज-स्रेयस-मारग पहिचानौ।
†पै निज चित्त करहु अस चेता, नारी-मनुज जुगल-अभिनेता ॥
बिस्व-मञ्च-ऊपर पगु धारी, होवहिं गृह-जीवन-सहकारी।
प्रेम परस्पर करहिं न थोरा, होवत मन ननु प्रेम-बिभोरा ॥
सिसु कर जनम सिच्छा अरु पालन, करहिं सुबिधि मरजादा-पालन।
जाया मनुज-अरध स्रुति भाखी, ता सों धरम दृस्टि-पथ राखी ॥
नाथ करहु अस काज अब, होय न जस हित-हान।
कुसल रहै परिवार अरु, होवहि निज कल्यान ॥२३॥
राखहु नाथ चरन निज पासा, पूजहु मोर चरम अभिलासा।
रहि तुव साथ नाथ दुख कोई, मो कहँ नैव नरक महँ होई ॥
तुव बियोग नाकहु हिय सूला, तियसुख सकल अहहि पतिमूला।
होय बिदेह जनक-सम नाथा, रहि गृह करहु कुटुम्ब सनाथा ॥
मैं तुव संग रहौं पिय कैसे, संग बसिस्ठ अरुन्धति जैसे।
राघव संग गई बन सीता, जनकसुता पति-प्रेम-पुनीता ॥
द्रुपद-सुता निज करतब जानी, पतिसह बिपिन-गमन-मति ठानी।
तिमि तुव चरन निकट बसि स्वामी, सेवा-निरत होउँ कृतकामी ॥

---

† All the world's a stage.
And men & women are mere players: they have their exits
And entrances. (Shakespeare)

सो अनुमति मोहि देवहु, करुनाकर भरतार।
सेवा रावरि करि जथा, जीवन होय ससार ॥२४॥
बचन विनीत अकनि निज ती के, मोहन बैन कहे अति नीके।
तुम कहँ विदित अहहि मत मोरा, सेवाधरम सुतनु अति घोरा॥
निरखि प्रिये तुव मृदुतम गाता, मम मानस अतिसय भय खाता।
जन-सेवक-जीवन स्रम-पूरन, करहि सुतनु सुख-आसा चूरन॥
तुम अब करहु प्रिये हठ भारी, सिसु-सम टरत न तिय-हठ टारी।
सो अब होय बिवस मति-भोरी, करहुँ प्रमान बात प्रिय तोरी॥
आस्रम बसि करि सेवा-काजू, साधहु सुबिधि महानस-साजू।
आस्रम महँ अतिथि जोउ आवै, तुव कर सुखसाधन सब पावै॥
सिल्प सीखि कछु तनय मम, होय कुसल गुनखान।
मनबांछित धन पावहिं, निज बुधि-बल-परमान ॥२५॥
अस तहँ बसत बरस कछु बीते, सांतिसहित दुखदारिद रीते।
तब पुनि दैव कुटिल चख कीने, भारतीय-सुख सब हरि लीने॥
*स्मटस नाम गोरन कर नेता, भयो कुटिल-नाटक-अभिनेता।
कुटिल-नीति महँ परम प्रवीना, धरम-बिचार-बिबेक-बिहीना॥
मद-मत्सर-जुत लोभ-समेता, धरहि प्रजाजन-लाभ न चेता।
दुरजोधन-सम दुरजनभ्राता, कंस-समान सुजन-दुख-दाता॥
रावन-सम दानव-दल-नेता, हिरनकसिपु सडजंत्र-प्रनेता।
कोने तिन उतपात अपारा, भारतीय-जन कहँ दुख भारा॥
गांधी पहँ तब जाय तिन, आरत करी पुकार।
दीनदुखी-जन-दुख हरौ, सरनागत - प्रतिपार ॥२६॥

---

* जॉन स्मटस—दक्षिणी अफ्रिका के उपनिवेशराज्य का प्रधान मन्त्री।

जनकसुता जस रावन छीनी, भारत-कुललछमी हरि लीनी।
ता कहँ बिविध त्रास तिन दीने, अनरथ घोर दनुजपति कीने॥
तिमि खल स्मटस गौरपति कूरा, भारतीय-हिय-दरपन चूरा।
अपहरि अब कीरति बरनारी, करम नृसंस करत नित भारी।
जिमि राघव दससीस-निपाता, भयो जनक-दुहिता-दुखत्राता।
तिमि मोहन भारतकुलकेतू, होवहु अब दुख-बारिधि-सेतू॥
आरज-कुल-लछमी तिन छीनी, दुरगति तासु अमित खल कीनी।
सो तुम सत्रु-समन करि भ्राता, होवहु साजन-जन-परित्राता॥

मोहन मृदुबानी कही, सुनहु मोर मत मीत।
अनय करहु नहिं सत्रु सन, अस आरजजन-रीत॥२७॥

तात बिचारि धरम-मरजादा, कहौ न स्मटस अहै मनुजादा।
रिपु सन कहत मनुज कटु बानी, करहि सकल कुल-कीरति-हानी॥
*तुव पथ बोय मनुज जदि सूला, करतब करहि सदा प्रतिकूला।
तउ तुम बपन करौ सुचि फूला, लहहु कुसुम वा कहँ तिरसूला॥
हौं अब जाय स्मटस सन भाखौं, कुल-मरजाद अटल निज राखौं।
स्मटस सखा निसचय तुम मोरे, नीति-निपुन गुन अवर न थोरे॥
निज-परजा निज-सुत-सम जानौ, ता हित माँझ स्वहित पहिचानौ।
†जाके राज प्रजा दुख पावै, सो नृप अवसि नरक महँ जावै॥

करुनाकर पूरन करै, मम कारज अस सोच।
गांधि गयो प्रीटोरिया, जहाँ स्मटस मति-पोच॥२८॥

---

* जो तो को काँटा बुवै ताहि बोय तू फूल,
तोहि फूल को फूल है, वा को है तिरसूल॥ (कबीर)

† जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवसि नरक अधिकारी। (तुलसी रामायण)

आवत लखि मोहन अभिमानी, तासु अनादर-हित मति ठानी।
बैठन हित दीनो नहिं पीठा, बचन कह्यो एकहु नहिं मीठा॥
मोहन लखि अस अविनय वा का, कह्यो न नेकु रोस-मय वाका।
‡जस कूकुर भूँसत गजराजा, सहज-धीर-गति रुचिर विराजा॥
निजजन कर सिगरी दुख-गाथा, विनय समेत कही नयनाथा।
पुनि बोल्यो मोहन मृदु बानी, प्रेमसमेत मधुर नयसानी॥
सचिव प्रधान भूप कर मीता, तुम कत करम करहु अविनीता।
भारतीय परजा सब तोरी, सेवा करहिं सतत नहिं थोरी॥

प्रजा गनहु तुम पूत सम, भूप जनक समतूल।
प्रेम परस्पर उभय कर, अहहिं सदा सुखमूल॥२९॥

सो तुम मीत करहु अस काजा, जासों लहहिं उभय सुख-साजा।
जासु राज प्रिय प्रजा सुखारी, सो नृप अवसि सुरग अधिकारी॥
जासु राज जनता दुख पावै, सो नृप अवसि नरक महँ जावै।
मोहन बचन मधुर हितकारी, भये स्मटस-हित कुटिल कटारी॥
जा कहँ होय बिसमजुर पीरा, ता कहँ बिस-मय होवत छीरा।
अतिसय गरब भरी कटुबानी, बोल्यो कुटिलबुद्धि अभिमानी॥
भारतीय गोरन कर दासा, समता कर किमि करिहैं आसा।
छुद्र सृगाल निबल अति कूरा, नाहर सम किमि होवहिं सूरा॥

दाससुता कहु करहि किमि, रानीपद - अभिलास।
भानु-प्रभा सम करहि किमि, दीपक-जोत प्रकास॥३०॥

गरवित बचन अकनि तिस केरे, मोहन चकित वाहि प्रति हेरे।
पुनि निसचय कीनो मनमाहीं, दरप-तिमिर-हत कर मति नाहीं॥

---

‡The Dogs bark, but the elephant moves on

—एक अंग्रेजी कहावत

मानव कर जब आय बिनासा, सरब प्रथम होवत मतिनासा।
बुद्धिबिबेक नसे पुनि मानव, करतब करत दुस्ट जस दानव ॥
सील-छिमा-ऋजुता अरु दाया, तजि खल करत दरप-जुत माया।
हित-अनहित नहिं कछु पहिचानै, मीत अमीत सुहृद रिपु जानै ॥
हितकर बचन लगत कटु कैसे, जुर महँ आम नीम सम जैसे।
बचन-बिलास चाटु प्रिय कैसे, रुचत मधुर रस रुज महँ जैसे ॥
मोहन पुनि अति प्रेम सों, परामरस सुभ दीन।
पै नहिं सुनत कुपन्थरत, सुभ सम्मति मति-हीन ॥३१॥
होय बिबस बोल्यो तब गांधी, प्रबल चलत जब जन-मत-आंधी।
तब नरपाल प्रबल मतवारे, बिटप-समान समूल उखारे ॥
निज जन कहँ देवहु अधिकारा, या महँ तोर अमित उपकारा।
नातरु गरब खरब सब होई, मींजहु कर निज पत सब खोई ॥
करहु न मीत करम अबिबेका, बल-अभिमान लागि खल-टेका।
*सीज़र नयपालिन† मतवारे, छत्र अकंटक छिति जिन धारे ॥
करि अभिमान गये जमथाना, नरकमूल अभिमान बखाना।
‡एलफ्रेड इव करि नर सुभकामा, इत उत जस पावत अभिरामा ॥
प्रजापाल विक्टोरिया, एलिजा-सम सुभ जान।
नयनागर नित मानहीं, परजा पूत-समान ॥३२॥

---

* सीज़र—जूलियस सीज़र, रोम का विश्वविख्यात तानाशाह। जनतंत्रप्रिय ब्रूटस ने इसकी हत्या की।

† नैपोलियन बोनापार्ट (१९ वीं शती ई०) फ्रांस का जगत्-प्रसिद्ध विजयी सम्राट्। वाटरलू के युद्ध में (१८१४ ई०) इंगलैण्ड और प्रशिया की सम्मिलित सेनाओं से परास्त हुआ।

‡ एल्फ्रेड (८म शती ई०)। एलिजाबेथ (१६ वीं शती ई०)। विक्टोरिया (१९वीं शती ई०)—इंगलैण्ड के प्रजाप्रिय शासक।

सीख बचन भै निसफल मे कैसे, ऊसर भूमि जलद-जल जैसे।
तब निज शिबिर गयो मनमोहन, निज अवदात चरित जगमोहन॥
भारतीय उत्सुक अति ठाढ़े, मोहन-स्वागत-हित द्रुत बाढ़े।
तिन प्रति सकल वृत्त तिन भाखा, भेद छुपाय कछुक नहिं राखा॥
तिन सन कहत सुनहु अब मीता, जदपि अराति अहहि अबिनीता।
करहु काज नहिं धरम-बिहीना, धरम-बिहीन मनुज अति दीना॥
कर गहि खडग अहिंसा केरा, चहिय अराति समर महँ टेरा।
साँच कवच धारहु निज देहा, निज-बचाव-जुगती सुभ एहा॥

सत्याग्रह कर समर सुभ, भयो अलौकिक रूप।
चकित होय पेखत रहे, अज - रमेस - सुरभूप॥३३॥

इत रिपु हनत तोप-तरवारा, उत सत-चरम गहहिं ते वारा।
इत मद-मोह-कोप-दल भारा, उत सम-दम-धीरज-परिवारा॥
इत अबिबेक महाभट ठाढ़ा, उत बिवेक-बल अतिसय बाढ़ा।
इत दीसैं बहु लोभ-बरूथा, उत संतोस महाबल-जूथा॥
इत मत्सर अरु बैर अपारा, उत बिसाल भायप-परिवारा।
इत स्वारथ सोहत जस राजा, उत उपकार सरलबिधि साजा॥
इत अभिमान गरज अति घोरा, बिनय सीलजुत उत अति भोरा।
इत नृसंस-भाव भयकारी, उत करुना जनमानसहारी॥

देवदनुज-संग्राम जस, बरनन करहिं पुरान।
धरम-पाप महँ समर तस, तहाँ भयो घमसान॥३४॥

समर बिचित्र भयो अति भारी, लखि भे चकित सकल नरनारी।
आतमबल - पसुबल - मुठभेरा, बिसमित होय सकल जग हेरा॥
पावस जिमि बरसहिं जलधारा, सेवकसिर तिमि सस्त्र-प्रहारा।
तिन कहँ गहहिं समुद भट कैसे, सुमनहार डारहिं गर जैसे॥

सिर सन द्रवत रुधिर कर धारा, मानहिं मस्तक तिलक सँवारा।
घायल-तनु सोहत तहँ कैसे, मंडन बिबिध पहिरि नर जैसे॥
जे जन मरहिं समरथल जाई, मीचु-बधू सन करहिं सगाई।
आतमबल तिन कर भय-हीना, अमित तेज तिन महँ भरि दीना॥

आतमबल अरु जन्तुबल, उभय भेद अस जान।
आतमबल पीयूस-सम, पसुबल गरल-समान॥३५॥

आतमबल जीवन कर दाता, इत उत उभय दुखन-परित्राता।
जग महँ मानसहित सुख देवै, पुनि परलोक अमरपद लेवै॥
आतमबल-सिच्छा सुभ-एहा, अमर जीव छिनभंगुर देहा।
तासों तजि भौतिक अभिलासा, अमर बस्तु सन बाँधहु आसा॥
जीवन मानरहित दुखदाई, मानसहित मरना सुख-दाई।
तन-मन-धन अरपन करि सारा, चहियत जग-दुखदारिद-टारा॥
पसुबल पाठ पढ़ावत आना, दुरबल कहँ दुख देवहु नाना।
प्रभुता-बिभव-ग्यान बल पाई, स्वारथसिद्ध करहु निज भाई॥

पसुबल पावहि मनुज जब, स्वारथरत तब होय।
कोप-लोभ-मद-मोह महँ, फँसत बिबेकहि खोय॥३६॥

दमनचक्र दारुन अस चाला, पकरि सबन कारा महँ डाला।
अमित कलेस तहाँ पुनि दीने, सब अधिकार तासु हरि लीने॥
धनसंपति सिगरी हथियाई, निपट निरास्रय नारि सताई।
जनकबिहीन रोयँ सिसु छोटे, पै नहिं करहिं दया कछु खोटे॥
देसधरम हित सहत कलेसा, रहहिं मुदितमन बीर हमेसा।
पति-सुत-भ्रात-संग कुलनारी, ताछिन भईं सती-ब्रतधारी॥
निज मानस निसचय तिन ठाना, देस-धरम-हित सरबस-दाना।
कारावास सकल भरि दीने, सत्रु-उपाय बिफल सब कीने॥

जग महँ अतिबल संगठन , सक्तिसमुच्चय-मूल ।
जासु प्रभाव पिपीलिका , सत्रु हनैं अहि-तूल ॥३७॥
जग महँ धूम मची अति भारी , सत्यसमर अति अचरजकारी ।
भारतसचिव वृत्त सब जानी , कलह-समन-कारज-मति ठानी ॥
कुसल-दूत संदेस - समेता , पठ्यो तिन द्रुत स्मटस-निकेता ।
जावहु मीत वाहि समुझाऊ , परजा-दुख ननु चहत न राऊ ॥
भाखहु भारतीय दुख टारौ , कलह-विवाद सकल निरबारौ ।
*गोखल सुनि बरनन रन केरा , अस विधि वैसराय कहँ प्रेरा ॥
आफ्रिक भारतीय दुख लीना , उचित सहाय तिनहिं कछु दीना ।
आफ्रिक भारतीय नर-नारी , संकट-पंक फँसे अति भारी ॥
तिन कर करहु सहाय तुम , प्रजापाल नयनाथ ।
नयनागर भूपाल कर , रहै प्रजा नित साथ ॥३८॥
चाहत जुद्ध छिरा अति भारी , जरमन अरु अंगरेज मँझारी ।
भारतीय आफ्रिक अरु गोरे , लरहिं परस्पर बिरथा भोरे ॥
मेल परस्पर करि जुग भ्राता , ह्वैहैं ब्रिटिस-राज-परित्राता ।
तासु बिचार वा कर मन भावा , स्मटस निकट निज दूत पठावा ॥
जब जुग दूत स्मटस पहँ आये , निज निज स्वामि-बचन बतराये ।
नाहिन उचित प्रजा कर पीड़ा , या ते लहहु अंत महँ ब्रीड़ा ॥
सासक अरु सासित महँ बैरा , करत न काहु पच्छ कर खैरा ।
सो तुम नय-बिचार करि भाई , त्यागहु अनरथजनक लराई ॥
अन-इच्छितहु स्मटस तब, मानि बचन तिन केर ।
कारा सन बंदी तजे , दिये स्वत्व सब फेर ॥३९॥

---

* गोखल—महामना गोखले, वायसराय की कौंसिल के मेम्बर ।

हायन अस्ट अनन्तर रारा, भारतीय-गोरन कर भारा।
मिट्यो प्रमोद भयो चहुँ ओरा, 'जय जय गांधि' करहिं सबसोरा॥
हरख-प्रवाह उमड़ि अति बाढ़ा, नासत सकल दुरित-दल गाढ़ा।
घर-घर होवहिं मंगलगाना, मोद मनावहिं पुरजन नाना॥
हमहिं सुतन्त्र ईस पुनि कीना, दारुन दास्य-कस्ट हरि लीना।
गांधी-सम नेता सुभ दीना, हम पै अमित अनुग्रह कीना॥
अब निज धरम-करम-अनुसारा, जीवन-जापन होय हमारा।
जाति-बरन-अन्तर सब नासा, ईस-कृपा पूजी सब आसा॥

मान सहित अब रहहिं हम, गनि आफ्रिक निज देस।
रहि सुतन्त्र उन्नत करैं, भाखा-भाव रु भेस॥४०॥

कारागृह तजि मोहनदासा, गयो सपदि स्मटस कर पासा।
प्रेम-सहित भेंट्यो जस भाई, नेह-मधुर पुनि बाक सुनाई॥
भाखौं सत्य ईस मम साखी, हौं नहिं डाह कछुक मन राखी।
बैर-बिरोध सकल अब नासा, उचित करन पुनि प्रेम-प्रकासा॥
भारतीय आफ्रिक अरु गोरे, इक सम अहहिं प्रजा-जन तोरे।
ता कर हित करतब निज जानौ, ता महँ बन्धु कुसल निज मानौ॥
द्रवत उपलहिय प्रेम-प्रभाऊ, अनुभव करि उर अनुसय-ताऊ।
क्रूर-करम नर निरदय जोऊ, होय मृदुल नवनी-सम सोऊ॥

स्मटस परम अभिमानजुत, पसुबल - आस्रय - लीन।
आतमबल-परभाव लखि, रह्यो चकित-मति दीन॥४१॥

पुनि मोहन सन भाखत भाई, साँच कहौं इक बात सुनाई।
जो तुम समर करत सस्त्रन सों, तौ तुम पार न पावत मो सों॥
आयुधभूसित रन-मतवारे, सुभट सहस हौं समर पछारे।
पै तुम इक नूतन बिधि सीखी, दीसत मृदुल असल अति तीखी॥

सत्याग्रह कर आयुध भारी, निरबल करत सबल-समसारी।
सबलन कहँ निरबल करि डारै, तासु प्रभाव मसक गज मारै॥
आतमबल पसुबल ते न्यारा, भेद हमहिं समुझावहि भारा।
सबल देह आतमबलहीना, तैल बिना जस दीपक छीना॥

आतमबलजुत निबल तन, जदपि अलप बलखान।
चालत अंकुस अलप जिमि, करिवर बिन्ध्य-समान॥४१॥

सत्याग्रह कर अमित प्रभाऊ, जानहिं अज, उमेस सुर-राऊ।
सत्याग्रह भेसज इक भारी, द्वेसगरल कहँ देवत टारी॥
सत्याग्रह निरबल-बल जाना, करत ताहि सुभ-सक्ति-निधाना।
सत्याग्रह जस कठिन कुठारा, बैर - बिटप - उनमूलनहारा॥
सत्याग्रह जस जीवन-मूरी, आतमबल-धन देवत भूरी।
सत्याग्रह अतिसय बलदाता, साहसजनक सकल भयत्राता॥
सत्याग्रह कर सत्य अधारा, करत अनृत-पातक सब छारा।
सत्याग्रह संतत सुख देवै, मनुज-बिसम-संकट हरि लेवै॥

सत्याग्रह कर मरम अस, धरम - प्रेम सुमहान।
बैर छाँड़ि रिपु जानिये, सोदर बन्धु - समान॥४२॥

गांधी स्मटस मिले तब कैसे, सिव महँ सांत-रौद्र रस जैसे।
मेल परस्पर तिन कर कैसा, गंग-जमुन कर संगम जैसा॥
मिलत उभय जस सोदर भाई, लसहिं जथा उद्यम-चतुराई।
अनल जथा दुति-दाह समेता, मोहन - स्मटस नेह - समवेता॥
दामिनि महँ दुति-गरजन दोऊ, मोहन-स्मटस रूप धृत सोऊ।
रबि तम-नास कमल-दल-पोसक, मोहन-स्मटस-मेल जनतोसक॥
छात्रधरम महँ सुन्दर-मेला, दया-धरम कर होय सुहेला।
तिन कर तिमि भायप-बिबहारा, निरखि करत अचरज जग सारा॥

या महँ अचरज करहु जनि, नीर करै दव सांत।
कोप-हानि हित अहहि इक, छिमा मंत्र अभ्रांत ॥४३॥
गांधिचरित-अनुकूल, सत्याग्रह कर मन्त्र सुभ।
पाय सांति-सुखमूल, सुजन सदा मोदैं जगत ॥४४॥

पञ्चम सोपान

असहयोग कर मन्त्र अनूपा, बृजिनबृत्र-हित कुलिस-सरूपा।
असहयोग कर भेसज भारी, बिसम बैर-बाधा-परिहारी॥
असहयोग अमृत सुखसारा, दुरित-गरल-दुख छिन महँ टारा।
असहयोग सुभ दिनकर-तूला, पसुबल-तिमिर हरत दुखमूला॥
असहयोग जानिय सुभ सेतू, पसुबल - बारिधि - तारन - हेतू।
असहयोग आयुध अति भारी, पासवबल-रिपु देत पछारी॥
असहयोग आतमबलदाता, कादर - भाव - दोष - परित्राता।
असहयोग राघव - समरूपा, नासत दुरित-दनुज-कुल-भूपा॥

असहयोग सुभ मंत्रमनि, बसीकरन सुखसार।
पसुबल-बिसम-भुजंग कर, करै दरप-परिहार॥१॥

हरखित लखि भारतजन गांधी, देसगमन-हित परिकर बांधी।
उन्निस सत पन्द्रह सुभ बत्सर, करमबीर मोहन गतमत्सर॥
नवम तिथी सुभ जनवरि मासा, घर लौट्यो पूरन जन-आसा।
मुम्बापुरि स्वागत अस भयऊ, मघवा पेखि चकित रहि गयऊ॥
पुरजन सकल उमग हिय लीने, बहु प्रबंध स्वागत-हित कीने।
घर - घर तोरन - बन्दनबारा, नगर समग्र अलंकृत भारा॥
हाट-बाट-पथ-बीथि सँवारे, पुरजन फिरहिं बेस सुभ धारे।
बिजयद्वार बहुथान बनाये, सुमन-सुफल-सोभित बहु भाये॥

लोक-समूह बरात-सम, मोहन जनु बररूप।
बिजयबधू परिनै कियो, सची जथा सुर-भूप॥२॥

घर-घर होवहिं मंगल-गाना, पुरजन-मोद न जात बखाना।
जन समूह बीथिन जब जावै, पुरजन-चित्त मोद बढ़ि आवै॥
जय जय सब्द उठत चहुँ ओरा, धन्य धन्य कर सुनियत सोरा।
करमवीर मोहन जयसाली, प्रेम-प्रभाव सत्रु निज घाली॥
ईस-प्रसाद कुसल घर आयो, हम तिहि पेखि नयन-फल पायो।
अस बिधि कहहिं सकल नरनारी, अमर करैं मोहन त्रिपुरारी॥
बरसहिं सुमन सदन-तल बैठीं, ललना मोद-सलिल महँ पैठीं।
देवबधू जनु बैठि बिमाना, बरसहिं कलपकुसुम बिधि नाना॥

सुमनहार गर सोहहीं, सुमन-भार पुनि सीस।
मुकताहार - किरीट - जुत, मोहन जनु अवनीस॥३॥

स्वागत अस करि सहित उमाहा, नागर-जन लहि लोचनलाहा।
नगरभवन महँ पैठे जाई, उच्छव-हेत परम लिव लाई॥
मानपत्र मोहन कहँ दीना, निज-करतब-पालन करि लीना।
बिनयसील बोल्यो तब गांधी, अटल सनेह-गाँठ तुम बांधी॥
जो तुम कीन मोर हित ताता, ता कर तुमहिं देय फल धाता।
निपट अकिंचन समरथ-हीना, मो कहँ प्रभु सुभ अवसर दीना॥
मो कहँ ईस सक्ति कछु दीनी, निज-बन्धुन कर सेवा कीनी।
सत्यरूप आयुध सुभ पावा, प्रेम-प्रभाव प्रकट दिखरावा॥

प्रभु-प्रसाद बल पाय कै, आफ्रिक-दसा सुधारि।
आयो अब निज देस महँ, निज करतब सुबिचारि॥४॥

मानजोग कीनो कछू नाहीं, सुनि स्तुतिवचन लाज मन माहीं।
गहि सहयोग तुमारा भाई, चहहुँ करन कछु देस-भलाई॥
करिहौं प्रथम देस कर दौरा, जानन हित जनता कर ब्यौरा।
किमि मम देसबन्धु दिन काटैं, जोहत सुभ-भविस्य कर बाटैं॥

पुनि निज करम-सक्ति-अनुसारी, सेवा-करम करहुँ व्रतधारी।
पुन्यनगर पुनि कीन पयाना, गुरुवर-दरस-मनोरथ ठाना॥
गुरु कहँ लखि सरोग-तनु-ठाढ़ा, मोहन-मन कलेस अति बाढ़ा।
गोखल साधुबाद तिहि दीना, आसिसजुत उपदेसहु कीना॥

गुरु-प्रसाद तब पाय कै, देस-अटन चित धारि।
राजकोट - पत्तन गयो, गुर्जर देस मँझारि॥५॥

तहँ करि निजबन्धुन सन मेला, सांतिनिकेतन गयो सहेला।
लोक-बिदित प्रतिभाजुत भारी, कविता-गीत-कला-उपकारी॥
नाम रवीन्द्रनाथ अभिरामा, कुलपति राज करत तिसु धामा।
सांतसरूप कृपाल अमानी, सम-दम-दान-अभय-गुनखानी॥
सत्यसंध अरु मृदुल सुभाऊ, ऋसिबर-तुल्य अपार प्रभाऊ।
पूरब-पच्छिम-संस्कृति-ग्याता, नवल मनोहर काब्यबिधाता॥
मोहन कर स्वागत तिन कीना, आस्रमबास प्रेम सन दीना।
तहँ बसि गांधि परम सुख पायो, फिनिक-बास अनुभव दुहरायो॥

निगमागम - चरचा करैं, करैं देस-हित बात।
प्रेमसहित संलाप करि, हरखित दिवस बितात॥६॥

महापुरुस तिहि कह्यो कबीसा, कहि गुरुदेव भयो-नत सीसा।
कतिपै दिवस तहाँ बसि गांधी, कालीघाट-गमन-मति बांधी॥
तहँ कालीमंदिर महँ जाई, देख्यो दृस्य परम दुखदाई।
पावन मंदिर महँ अनजाना, सोनितपात करहिं मनमाना॥
दयाधरम अति पूत बिहाई, देव-पुरोहित भये कसाई।
दारुन देखि धरम कर हानी, मोहन-चित्त भई अति ग्लानी॥
कासीगमन गांधि पुनि कीना, बिस्वनाथ-दरसन-चित दीना।
तहँ लखि लोभ पुरोहित केरा, घृनासहित गांधी मुख फेरा॥

कुम्भ-परब पै जाय तब, तीरथ सुभ हरद्वार।
मोहन मन अति खेद भो, लखि-बञ्चक परिबार ॥७॥

संतसमागम हरिगुनगाना, दुरलभ तत्त्व जगत जुग जाना।
कुम्भ-काल संतन सुभ माना, आवहिं साधु बिरक्त महाना॥
तिन कर दरस किये अति लाहा, सुरसरि-सीत-सलिल-अवगाहा।
तन-मन पूत बाहि सन होवैं, पातक-पंक सकल निज खोवैं॥
अस जिय धारि गयो तहँ मोहन, चरित-उदार जगत-मनमोहन।
दुखित भयो लखि कुटिल कुचाली, बेस मराल बकन कर पाली॥
साधु-बेस सठ करहिं कुकरमा, तजि सब लोक-लाज अरु धरमा।
सन्त कहाय करहिं छलछंदा, धरम-ओट कारज करि मंदा॥

दारुन काल-कुजोग ते, मिटी धरम - मरजाद।
अनाचार बाढ़े अमित, बढ़े छीब-पिसिताद ॥८॥

तब तिन संदेसा सुभ पावा, गुरुकुल-पति निज-धाम बुलावा।
मुनसीराम नाम अति साजन, चरित-उदार मान कर भाजन॥
गुरुकुल सुभ थापन तिन कीना, धरम-सुधार-करम चित दीना।
पाय सँदेस गांधि-मन हरखा, मरुथल तृसित पाय जिमि बरखा॥
तजि तब कुंभ-कुलाहल भारा, सांत-सुभग आस्रम पगु धारा।
कुलपति भेंटि लह्यो सुख कैसे, चिर-प्रोसित सोदर मिलि जैसे॥
भयो मुदित लखि बटु-समुदाई, आरज धरम-सीख जिन पाई।
भाखा-भाव अवरु परिधाना, निज सुदेस कर हितकर माना॥

निरमल पूत बिचार अरु, सुद्ध अहार - बिहार।
निरखि भयो मोहन मुदित, चरित धरम-अनुहार ॥९॥

वैदिक-धरम-सरनि-अनुरागी, प्रभु-पद-प्रेम सतत मति पागी।
निज संस्कृति सन प्रेम अपारा, देस-उधार-सुभग-ब्रत धारा॥

गुरु अरु सिस्य धरम-परबीना , निज-निज करम रहहिं नित लीना ।
अनुसासन सुन्दर तहँ सोहा , उच्च बिचार सुजन-मन-मोहा ॥
वेद-ऋचा-धुनि सुचि मख-धूमा , जुगपत दुहुन गगन-तल चूमा ।
आरजधरम-मरम - सुभ - ग्याना , ता सन पढ़हिं नवल बिगयाना ॥
निज-उन्नति जनता कर सेवा , अस बूझयो तिन जीवन-भेवा ।
गुरुजन करहिं जनक-सम नेहा , अरपि बटुन हित धन-मन-देहा ॥

तब बिचार गांधी कियो , आस्रम थापहुँ एक ।
जन-सेवक सिखिहैं जहाँ , सेवा - धरम - बिबेक ॥१०॥

साबरमति इक सरित सुहाई , ता कर तीर सुथल सुखदाई ।
आस्रम कीन गांधि मन-भावन , अतिसै रुचिर पतित-जन-पावन ॥
छात्रन कहँ निवास तहँ दीना , जीवन-क्रम उत्तम थिर कीना ।
ऊषाकाल नींद सब त्यागौ , तन-मन-सौच क्रिया महँ लागौ ॥
पुनि कछु करि स्रम तनु-हितकारी, भजहु तात जगनाथ मुरारी ।
भजन किये होवत दुख-हानी , आतमबल पावत सुभ प्रानी ॥
तब कछु करहु जगत कर धंधा , जग महँ मनुज करम सन बंधा ।
भोजन-भ्रमन - सयन - बिबहारा , नितप्रति करहु नियम-अनुसारा ॥

रहहु परस्पर बंधुसम , त्यागि बरन - मतभेद ।
जन-सेवा-ब्रत धारि कै , करतब करहु अखेद ॥११॥

†सोरह अधिक उनिस सत बरसा , भारत-भाग अचानक सरसा ।
प्रतिनिधि-गन लखनउ महँ आये , कांग्रस-अधिबेसन-हित धाये ॥
आरज-मुसलिम कर सुभ मेला , ईस-कृपा सन भयउ सहेला ।
समय परस्पर तिन तब कीना , समर-सुराज माहिं चित दीना ॥

---

† १९१६ ई०, लखनऊ में हिन्दू-मुसलिम समझौता—कांग्रेस ने मुसलमानों की पृथक निर्वाचन की माँग को स्वीकार किया ।

तिनकर लखि पुनि मेल सुभागा, चिन्तातुर अंगरेज अभागा।
कहत सुनौ हिन्दी मम मीता, तुव हित रहै सदा मम चीता।
सांप्रत समर छिरयो अति भारी, जरमन अरु मम देस मँझारी।
समर-अन्त लगि करहु प्रतिच्छा, विजय पाय पूरहुँ तुव इच्छा॥
सांप्रत करहु सहाय तुम, संकट लखि मम मीत।
उचित स्वत्व हौं देवहुँ, समर पाय सुभ जीत॥१२॥
परामरस नेतागन कीना, तिलक तहाँ अस निज मत दीना।
नीति कहत रिपु-संकट लेखी, निज-हित-आस करहु सुबिसेखी॥
बिपद् फँसा अरि करत निहोरा, आवहु मीत गहहु कर मोरा।
समय टरे टारत निज बाचा, मूढ़ मनुज मानत रिपु साँचा॥
समर-सुराज प्रबल अब कीने, निज अधिकार गनहु सब लीने।
तिस ते भिन्न गांधि मत दीना, अरिदुखलाभ उचित नहिं चीना॥
सहित सनेह सत्रु बस कीना, होय अबल जिमि अहि बिसहीना।
उचित करन अंगरेज सहाया, करतबसमुझिसकलतजि माया॥
प्रेमविबस अरिहू तजै, सकलद्वेस कर भाव।
उरग गरल तीछन तजै, सीतलमनि-परभाव॥१३॥
सैनिक-संग्रह महँ चित दीना, करमचन्द-सुत नीति-प्रवीना।
सत्यनिष्ठ-जन निश्चय कीने, पूरहिं निज प्रन प्रानहु दीने॥
धन्यबाद सासक-जन कीना, कांचन-पदक मान-हित दीना।
कृसक तहाँ इक दिन इक आवा, गांधी कहँ दुख-बचन सुनावा॥
चम्पारन-वासी हम दीना, गोरन दुखित हमहिं बहु कीना।
स्रमफल हरहिं कृसक-जन केरा, अनुचित करत न्याय नहिं हेरा॥
कर गहि बिबिध कस्ट असि देवैं, न्याय-विचार नाम नहिं लेवैं।
मो सँग चलहु कृपानिधि नाथा, दीन जनन अब करहु सनाथा॥

कृसक-जनन कर दुखकथा, सुनि मोहन मतिधीर।
दुखित भयो अतिसै तुरत, चल्यो मिटावन पीर ॥१४॥

सन्तन कर अस सहज सुभाऊ, निज दुख-ताप गनहिं नहिं काऊ।
पर-उपकार करहिं सहि पीरा, ईख मधुर रस देवत पीरा॥
चमपारन महँ निलहे गोरे, स्रमीजनन पीरत नहिं थोरे।
अस तहँ गाँधि बिवेचन कीना, परामरस मित्रन सन कीना॥
राजन बाबु नाम गुनधामा, रह्यो वकील सुघर तिहि ठामा।
ब्रजकिसोर अति चरित-पुनीता, पर-उपकार-निरत नित चीता॥
क्रिपलानी जनसेवक सोहा, सील-सुभाव सुजन-मन मोहा।
लहि सहाय मोहन तिन केरा, न्यायहीन गोरन कहँ टेरा॥

कृसकजनन कहँ देव तुम, उचित मीत अधिकार।
नतरुसकलमिलिकरहिंअब, सत्य - समर - बिबहार ॥१५॥

गरब-अधीन मनुज मतिभूला, करतब करत न्याय-प्रतिकूला।
मोहन-बचन कान नहिं कीना, कृसक-जनन दुख गोरन दीना॥
पसुबल सन चाहत बस कीना, सकल धनादिक तिन कर छीना।
कृसकन मेल परस्पर कीना, मोहन कहँ नेता निज चीना॥
हरख समेत कस्ट सहि लीने, बिफल प्रयास सत्रु-कर कीने।
परिभव पाय संधि तिन कीनी, कृसकन माँग मानि सब लीनी॥
निबल जनन कहँ बल अति भारा, सत्याग्रह देवत सुखसारा।
तासु प्रयोग गांधि जब कीना, नीलकलंक तुरत हरि लीना॥

कृसकजनन कर त्रास अस, कियो गांधि जब दूर।
सकल देस महँ बिमल जस, छायो तब भरपूर ॥१६॥

खेरा इक जनपद अति नीका, गुर्जर-देसभाल कर टीका।
छिति उर्वर ससंपतिसाली, राजत सतत तहाँ खुसहाली॥

विधिबस बिकट भयो दुसकाला , कृसकन हित जनु बिपद कराला ।
सूखे खेत मरहिं नित ढोरा , अन्न-बिहीन करहिं नर सोरा ॥
तृसित छुधातुर निपट बिहाला , इत-उत फिरत मनुज-कंकाला ।
अस कुसमय सासक हियहीना , कृसक-सहाय कछु नहिं कीना ॥
उलटे माँगहिं भूमि-लगाना , छत महँ करहिं छार जनु दाना ।
बिनय अतीव कृसकजन कीना , पै नहिं सुनत नेकु हिय-हीना ॥

दीन-जनन कर सुनहिं जे , आरत - करुन पुकार ।
दीनबंधु भगवान - सम , ते साजन जगसार ॥१७॥

करुन कथा सुनि कृसकन केरी , मोहन गमन कीन बिनु देरी ।
तहँ बल्लभ बिट्ठल-लघुभ्राता , नाम पटेल जगत-बिख्याता ॥
न्यायनिपुन बैरिस्टर भारा , तिन कृसकन-नेतृत्व सँभारा ।
महादेव, सङ्कर, अनुसूया , संग चलहिं तजि सकल असूया ॥
हरखे सकल गांधि सुनि आवत , मीत मिले मानव सुख पावत ।
कृसकजनन सों सुनि सब बाता , सासक सन बोल्यो दुखत्राता ॥
†सासक-धरम अहहि अस भाई , जनता-लाभ करै चित लाई ।
तनय-समान प्रजा-हित कीने , पावहिं सुख सासक रसभीने ॥

कृसक अहहिं अति कष्ट महँ , भोजन - बसन - बिहीन ।
देय सकैं किमि भूमि-कर , अरथ-हीन अति दीन ॥१८॥

बचन मधुर हित मोहन जी के , सासक कहँ लागे नहिं नीके ।
भयो छुभित सुनि तिन कहँ कैसे , मधु-घृत पाय जुरारत जैसे ॥
बोल्यो कटुबानी अभिमानी , दुस्टन द्रोह करन की ठानी ।
जो भल चहत देयँ कर मेरा , नतरु बंदिगृह पावहिं डेरा ॥

---

† राजा प्रकृतिरञ्जनात्— (रघुवंश)

सेवन करि प्रभुता कर हाला, दारुन दमनचक्र तिन चाला।
दंड कठोर किसानन दीने, पसुधन-धरनि सकल हरि लीने।
गांधि कह्यो कृसकन समुझाई, मन महँ सोच करहु कत भाई।
पसुबल गिरि-सरिता सम जाना, उमड़िघुमड़ि छिनमाहिं बिलाना॥
आतमबल - भागीरथी, बहत सदा इकसार।
सांति-उदधि सुभ कच्छ पै, मानव देय उतार॥१९॥
छनिक बिजय पसुबल जब पावै, गरब-बिबस नरकायन धावै।
बिजय निदान साँच कर लेखी, छनिक पराजय जद्यपि देखी॥
सो तुम दृढ़ निसचय मन धारौ, ऋजुता सन निज काज सँवारौ।
देउ न कर बरु प्रानहु जावैं, करहु न भय जमराजहु आवैं॥
बिपद सकल सहि सहित उछाहू, प्रेम-धरम कर करहु निबाहू।
मोहन-बचन मानि सब बीरा, कस्ट अपार सहहिं धरि धीरा॥
धीरज अतुल देखि तिन केरा, करुना कीन निठुर-हिय डेरा।
माँग लगान-बिसय तजि दीनी, कृसकन साथ संधि तिन कीनी॥
सत्याग्रह सुभसमर महँ, अटल प्रेम कर जीति।
साँच-प्रेम-आधार लहि, टरै सकल रिपु-भीति॥२०॥
सठ सन केतिक करहु भलाई, बिपद टरे सब देत भुलाई।
अहि कहँ करहु जदपि पयदाना, तिन नित गरलबमन सुख माना॥
सींचहु नीम अमिय-रस भाई, तजहि न सहज बिसम करुआई।
भारतीय गोरन-हित कीना, समर-सहाय बिपुलतम दीना॥
विजय पाय उपकार भुलाई, गोरन परिहरि सकल भलाई।
रौलट ऐक्ट नाम दुखदाई, नव-बिधान कर बात चलाई॥
सासकजन निज कर बल लीना, जन-अधिकार सकल हरि लीना।
निपट निरंकुस सासक होई, नीति-नियम चित धरत न कोई॥

रुज-आरत गांधी तऊ, जन-हित-चिंता-लीन।
पाय प्रेरना ईस सों, प्रन बिरोध कर कीन ॥२१॥

करन हेत सासन-प्रतिबादा, मोहन तुरत कियो हरिनादा।
जनता कहँ हरताल-निदेसा, दियो सपदि तजि सकल अँदेसा॥
देस समस्त भई हरताला, मानव-उदधि मनहु बढ़ि चाला।
कृस्न बसन धारन करि लोकू, प्रकट करत निज अन्तर सोकू॥
कूटहिं छाति कहहिं दुरवादा, नहिं तुव राज चहहिं मनुजादा।
करि छलछन्द लियो तुम सासन, पांडवराज सकुनि जिमि पासन॥
निरदय करम अमित तुम कीने, निर-अपराध-जनन दुख दीने।
हिंदू मुसलिम सिक्ख ईसाई, करहिं बिरोध तोर सब भाई॥

प्रजा जासु दुख महँ रहै, सो नृप नहिं भल आहि।
सासक सोइ सराहिये, प्रजा सराहत जाहि ॥२२॥

सासक सबल दमन तब कीना, माँगत दान दंड जनु दीना।
मानहु जाचत भिच्छु अहारा, गृहपति देवत लकुट-प्रहारा॥
अमृतसर नगरी सुभनामा, पावन परम सतत सुखधामा।
जहँ गुरु रामदास करि डेरा, अकबर-भूप धरम-हित प्रेरा।
जहँ जमत्रासहरन हरिमंदिर, तुलना जासु नाहिं जग अंदर॥
अमरावति-सम भूतल सोहै, निज सुख-संपति जनमन मोहै॥
बाग तहाँ इक जलयाँ-वाला, गौर-सुजस-पट दूसन काला।
डायर तहँ फायर करि दीना, निर-अपराध-जनन-बध कीना॥

बढ्यो कोप जनता-हिये, भये बिबिध उतपात।
जहाँ तहाँ जुवकन कियो, कछु गोरन कर घात ॥२३॥

दमन-नीति सासक दृढ़ कीनी, समर-नियम-घोसन-मति दीनी।
देस-भगत डारे बहु कारा, दियो अनेकन देस-निकारा॥

अबला-बाल-वृद्ध सब लोकू , लरहिं देस-हित सब तजि सोकू ।
अत्याचार तिन दारुन कीने , नीति-बिचार सकल तजि दीने ।
पै नहिं दमन चलत बहुकाला , होय नृसंस-मनुज-मुख काला ।
आंगल - राजसचिव घबराने , बिसम परिस्थिति देखि डराने ॥
परामरस नृप कहँ तिन दीना , भारत-हित चहियत कछु कीना ।
सासन महँ कछु करहु सुधारा , जासों होय रार-निपटारा ॥

आंगलपति भारत पठ्यो , तब निज राजकुमार ।
*आय तुरत घोसित किये , तिन कछु राजसुधार ॥२४॥

ख्रिस्ट अब्द उन्निस सत बीसा , नागपूर जनता-हिय-ईसा ।
मिले परस्पर कांग्रस माहीं , कहत सुधार न अभिमत आहीं ॥
राजसूनु-स्वागत तिन रोका , प्रकट कियो निजहिय कर सोका ।
जुग बिचार मानस धरि गांधी , असहयोग-कारज मति बांधी ॥
प्रथम बिचार खिलाफत केरा , दूजा प्रस्न पंचनद केरा ।
बैसराय सन बात चलाई , प्रजा-बिपद तुम टारहु भाई ॥
जासु राज जनता दुख पावै , सो नृप किमि सुख-संपति पावै ।
सुभ सम्मति तिन नहिं चित कीनी , तब मोहन चेतावनि दीनी ॥

मीत देउ अधिकार तुम , उचित प्रजाजन केर ।
नतरु त्याग-सहयोग कर , देउँ निदेस अदेर ॥२५॥

प्रभुतामद मदिरा - सम जाना , सेवन-मात्र मनुज बौराना ।
मोहन - मत दीनो ठुकराई , दमन-नीति तिन प्रबल चलाई ।
प्रजाजनन गांधी तब टेरा , नृपसन असहयोग प्रति प्रेरा ।
निसक्रियरोध-सरनि बतराई , हिंसा-बिनु सुराज जिमि पाई ॥

---

*१९१९ के सुधार, जो Montague-Chelmsford Reforms के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

सुखित बसैं भारत-जन सारे, टरहिं सकल दुखसंकट भारे।
बस्तु बिदेसि तजहु सब भाई, देस-बिभव जासों बचि जाई॥
चरखा - चक्र - सुदरसन धारी, बसन-बिदेसि-अरि देव पछारी।
कचहरि-कालिज-कौंसिल केरा, त्रिबिध बायकाट तिन प्रेरा॥
आंदोलन भारी मच्यो, सकल देस महँ धाय।
बसन - बिदेसी - होरिका, करहिं लोक अति चाय॥२६॥
गांधी बचन मानि सब लोका, त्याग अनेक करहिं तजि सोका।
छात्रजनन बिद्यालय त्यागे, कचहरि छाँड़ि वकीलहु भागे॥
कौंसिल-त्याग सदस्यन कीना, जन-सेवाब्रत महँ चित दीना।
चरखा सुघर सुदरसन चाला, बसन बिदेसि भयो बदहाला॥
भाखा - भाव - ध्यान - परिधाना, तजन बिदेसि धरम निज माना।
आरज मुसलिम अरु क्रिसताना, देसबंधु निज सोदर जाना॥
समर सुराज जुटे सब लोका, तन-मन-धन सन तजि सब सोका।
सासक दमन कठिन अति करहीं, पै नहिं बीर बचन सों टरहीं॥
सकल जातना सहत हैं, देसभगत धरि धीर।
कबहुँ सत्रु कहँ देत नहिं, मन-तन सों कछु पीर॥२७॥
बारदौलि - गंतूर - प्रदेसा, जिन महँ कर-निसेध उपदेसा।
चिंतामगन सोउ दिन-राती, पाय कबहुँ मोहन सुभ पाती॥
हम पावहिं सुभ समर-सुभागा, देस-धरम हित कछु करि त्यागा।
जननी-जनमभूमि कर सेवा, करि अब लहहिं बीरगति-मेवा॥
मनुज बिचार करत कछु औरा, बिधिकरलिखित होय कछु औरा।
सत्याग्रह - संगर सुखदाई, त्रिभुवन महँ निज धाक बिठाई॥
पसुबल सन आतमबल भेरा, चकित मनुज-सुर-किन्नर हेरा।
अस बिधि चलत समर सुखदाई, खबर अभद्र गांधि तब पाई॥

चौरी-चौरा थान इक, अमित अमंगल नाम।
जहाँ जाय निसफल भयो, सबल सत्य संग्राम ॥२८॥

सत्य समर कर निपुन सिपाही, जानत निज करतब बस आही।
करत नृसंस निठुर अतिबारा, मानहिं बीर अमिय-रस-धारा॥
सत्य-प्रेम कर गहहिं अधारा, परहित लगि सरबस तिन वारा।
रिपुसन करत मनुज जदि कोपा, निसफल चहत प्रेमपन रोपा॥
राजपुरुस निरदय तिहि थाना, करम कठोर करहिं मनमाना।
तहँ कछु जुबक रहे अभिमानी, चलन न देयँ अनय मनमानी॥
राजपुरुस कीनो अपमाना, तिन प्रतिसोध-हेत प्रन ठाना।
पुलिस-अवास अनल तिन लाई, कछुक दिये भट बीच जराई॥

समाचार कटु पाय कै, भयो गांधि चित खेद।
समर सत्य कर थगित तिन, कियो सहित निरबेद ॥२९॥

समर सत्य कर कठिन अपारा, तासु नियन्त्रन प्रथम अधारा।
बिनु अनुसासन जिन रन कीना, विजय सुफल कबहूँ नहिं लीना॥
विधि-बस विजय पाय मति-अंधा, सफल करत नहिं सासन-धंधा।
अस बिचार निज मन तिन कीना, सेवक-जन-सिच्छन चित दीना॥
समर थगित लखि सासक हरसे, पांथ तृसित जिमि बारिद बरसे।
मुसलिम-चित्त खेद अति भारी, बाजी जीति गांधि पुनि हारी॥
आरजजन कर नासी आसा, तदपि तज्यो नहिं नायक पासा।
विपद-काल कृतघन जन जोई, आपुन मीत तजत ध्रुव सोई॥

सुजन तजत नहिं निज सखा, पाय विपद विकराल।
संपति सम भोगैं बिभव, होयँ विपद महँ ढाल ॥३०॥

सासकजन अबसर सुभ जाना, मोहन पकरि न्याय-गृह आना।
राजद्रोह - अभियोग चलावा, न्याय करन कर ढोंग रचावा॥

न्याय-अधीस कहत तुम गांधी, बिप्लव करन हेत मति बाँधी।
तासों उचित दंड अब तोही, करतब जानि छमब तुम मोही॥
जानहुँ तुव चरित्र अवदाता, साजन-जन-मानस-सुखदाता।
सत्य-अहिंसा सन तुव प्रेमा, बिस्व-प्रेम कर अति सुभनेमा॥
पै नृपद्रोह काज तुम कीना, चिंतित अति सासक गन कीना।
सासन-हित अब तुव करि सासन, पूरन करहुँ भूप-अनुसासन॥

बिनय सहित मोहन कह्यो, मीत करहु जनि सोच।
निज करतब सों टरत हैं, नर कायर मति-पोच॥३१॥

देस-धरम-हित जस भल चीना, ता बिधि मीत करम हौं कीना।
नहिं मम बैर काहु सन भाई, सकल जगत कर चहहुँ भलाई॥
पै दुख देखि देस कर मोरा, मानस होय बिकल नहिं थोरा।
हेम-चटक भारत जग जानै, गौरव गत-इतिहास बखानै॥
आंगलजन सोसन अस कीना, कीन अकिंचन अरु बलहीना।
नरकंकाल फिरहिं चहुँ ओरा, अन्न-अभाव करहिं बहु सोरा॥
सासक जन नहिं सुनत पुकारा, देवत कस्ट अमित कर द्वारा।
विद्या-धरम-बनिज-बिबहारा, मलियामेट सकल करि डारा॥

सब तै दारुन कस्ट अस, लीन सक्ति सब छीन।
धरम-सभ्यता-संस्कृति, कीने निज-आधीन॥३२॥

आपुन राज जदपि दुख भारा, नीम समान कटुक सुख-सारा।
पर कर राज जदपि सुख भारा, भाजन-हेम गरल जनु डारा॥
कैम्बल बैनरमैन उदारा, गौरवमय अस बचन उचारा।
*पर कर राज जदपि सुखखाना, गनिय न ताहि सुराज समाना॥

---

*Good Government is no substitute for self-government.
—Hury Campbell Bennerman

अस मन धारि जतन हौं कीना, प्रन सुराज-थापन कर लीना।
देस-भगति पातक जदि जानौ, जन-सेवा अपराध जु मानौ॥
निरदय-सासन कर प्रतिरोधा, तुम कहँ देत अनय कर बोधा।
मो कहँ उचित दंड तुम देऊ, निज स्वामी सन आसिस लेऊ॥

न्यायाधिप करतब-बिबस, न्याय-नियम-अनुसार।
सट हायन कारा दई, कचहरि माँझ उचार॥३३॥

आग्या स्रवन करत सब लोका, भये मगन जनु सागर सोका।
पै नहिं गांधि चित्त कछु ग्लानी, समरस सुजन लाभ अरु हानी॥
†सविता उदय-काल जिमि राता, अस्त समय तिमि देखिय आता।
राघव सुनि अभिसेक-सुबाता, भयो न नेकु हरख-मदमाता॥
सुनि पुनि राम जनक कर सासन, कीन मुदित स्वीकृत निरबासन।
तिमि मोहन थिरमति तहँ ठाढ़ा, बढ़त बिपद साजन बल गाढ़ा॥
जा कर प्रभु पै होय भरोसा, सो नहिं करहि मनुज पै रोसा।
धीरज धरि निज करतब करही, तप अरु त्याग-सरनि अनुसरही॥

गांधी तब लोकन कह्यो, मानहु मम अनुरोध।
खादि-ऐक्य बढ़ती करौ, तजि मतभेद-बिरोध॥३४॥

धरम-देस-हित जावहुँ कारा, सेवा-धरम पुन्य-ब्रत धारा।
सासक स्वारथरत जदि मारै, सेवक नहिं प्रतिसोध बिचारै॥
मम हित करहु न कहुँ हरतारा, मो पै कीन कृपा करतारा।
मम हित राजभवन-सम कारा, करहि अवसि मम स्रम-परिहारा॥
बसहिं मीत मम कारा माहीं, बाहिर रहन मोर मत नाहीं।
खादि-प्रचार करहु चित लाई, प्रेम-बिकास करहु नित भाई॥

---

† सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमने तथा॥ (पञ्चतन्त्र)

कारज करहु मीत मिलि सोई, जासों देस-प्रगति सुभ होई।
तासु निदेस सीस तिन कीना, सांत रहन थिर मानस कीना ॥

कारागृह गांधी कियो, देवालय-सम पूत।
सांत चित्त सोभित भयो, जस समाधि अवधूत ॥३५॥

प्रभु-अर्चन प्रातः नित करई, गीतापाठ माहिं चित धरई।
चरखा-जग्य चलत दिन-रैना, बन्दिन सन बोलत मृदु बैना ॥
परिमित राखि अहार-बिहारा, मोहन आपुन आप सँवारा।
तामिल कठिन गिरा सिख लीनी, तप-संपति संचित तिन कीनी ॥
*ग्रथन कियो निज जीवन-सारा, सत्य-प्रयोग-ग्रन्थ सुख-सारा।
आतमकथा संग्या तिहि दीनी, रसिक-हृदय-मोहक रसभीनी ॥
भारत कर रचना करि ब्यासा, त्रिभुवन महँ निज सुजस प्रकासा।
धरमनीति कर कीन बिबेका, करम करै नर किमि तजि टेका ॥

आतमकथा गांधी तथा, ईस-कृपा सुभ पाय।
बिरचि सत्य अरु प्रेमकर, मरम दियो समुझाय ॥३६॥

भानु छिपे जिमि स्वापद-जूथा, फिरहिं बिपिन निज बांधि बरूथा।
तिमि गांधी कारागृह गौने, प्रकटे दुस्ट बिचार घिनौने ॥
सत्य-प्रेम-सेवा कर थाना, लियो असत्य-बैर-मदमाना।
सत्रु-समन हित संचित कीना, भयो सुबल भ्राता-छति-लीना ॥
अंत खिलाफत कर जब भयऊ, मुसलिम-हिय-हुलास तब गयऊ।
आंगल करि सडजंत्र अपारा, बैर-सरित-मुख निज सन टारा ॥
बैर नदी अस बढ़ी भयङ्कर, कीन कुहाट दृस्य प्रलयङ्कर।
मुसलिम तहँ हिंदुन कहँ मारा, लूटे धन-संपति घर बारा ॥

---

* महात्मा जी की आत्मकथा, जिसका अंग्रेजी नाम 'My Experiments With Truth' अर्थात् सत्य के प्रयोग है।

समाचार अस पाय कै, गांधि भयो दुखलीन।
इकिस दिन उपबास करि, प्रायसचित तिन कीन ॥३७॥
अस उपवास करत इक बारा, मोहन रुगन भयो अति भारा।
कर्नल मैडक नाम सुबैदा, जानत सकल अगद कर भेदा॥
औसधतंत्र कर साधन रूरे, तासु अरुज हित कीने पूरे।
ता कर बचन मानि सरकारा, गांधी कहँ दीनो छुटकारा॥
व्याकुल सकल भये तब लोकू, करत गांधि दुरबल लखि सोकू।
सुनि उपबास-खबर सब नेता, देहलि-नगर भये समवेता॥
ऐक्य-समाज तहाँ तिन कीना, गांधी कहँ आस्वासन दीना।
एकता-काज कमर हम बांधी, तुम उपबास तजहु अब गांधी॥
जीवन तुव अनमोल है, जनता-हित मतिमान।
रच्छन ता कर उचित है, जनता-थाति-समान ॥३८॥
आग्रह मानि गांधि तिन केरा, तजि उपबास तिनहिं अस प्रेरा।
कारज करहु बन्धु तुम सोई, जासों प्रेम परस्पर होई॥
प्रेम बिना नहिं मिलहि सुराजू, प्रेम-बिहीन सफल नहिं काजू।
आरज-मुसलिम करि सुभ प्रेमा, लहहिं देस-जनता कर छेमा॥
पुनि सन उन्निससत-चौबीसा, गांधि भयो कांग्रस कर ईसा।
*बिल्वगाँव भासन तिन दीना, राजनीति-पथ-दरसन कीना॥
मोतिलाल - चितरंजन - दासा, करहिं देस-हित अमित प्रयासा।
कौंसिल-गमन-सुमति तिन दीनी, मोहन सोचि प्रमानित कीनी॥
द्विसद-दुरग महँ जाय कै, करहु प्रबल संघर्स।
हौं पूरबबत चालिहौं, सेवा - काम सहर्स ॥३९॥

---

* Belgaum.

आसिस लहि तब मोहन केरी, कौंसिल-गमन कियो बिनु देरी।
तहँ तिन जाय सज्यो दल एकू, लहन सुराज जासु सुभ टेकू॥
कौंसिल कर भांडा सब फोरा, आंगलजन-सुधार-मद तोरा।
संगर असहयोग कर भारी, गांधि कियो प्रतिरोध बिचारी॥
कौंसिल-गमन संग अब सोऊ, भयो समाप्त कहहिं जन जोऊ।
तिन कहँ ग्यान नहिन अस कोई, उत्तम काज नस्ट नहिं होई॥
गुप्तसरित छिति-अन्तर धावै, अबसर लहि पुनि भूतल आवै।
असहयोग तिमि रूप बटावा, सुभ सुराजदल नाम धरावा॥

मोहन तब इक बरस लगि, मौन-नीति गहि लीन।
दलित-जाति-उपकार हित, राजनीति तजि दीन॥४०॥

खादी कर संतत परचारा, करन तथा हरिजन-उपकारा।
मोहन अस निज करतब चीना, ता कर साधन महँ चित दीना॥
जा कहँ कहत नीच सब हिंदू, तिन कहँ कीन जाति-सिर-बिंदू।
हरिजन-पद दीनो सुखदायी, बंधन हरि सिगरे दुखदायी॥
मंदिर महँ परवेस करावा, उच्च-बरन-सह भोज खिलावा।
हिंदुन कहँ दीनो उपदेसा, तुम हित दलित सहे बहु क्लेसा॥
समता कर देवहु अधिकारा, तबहि सुराज लहहु सुखसारा।
हरिजन पग समाज कर जाना, पगबिहीन नर पंगु समाना॥

हरिपदपङ्कज ते प्रकट, भई सुरसरी पूत।
हरिचरनन सों ऊपजे, हरिजन जाति-सपूत॥४१॥

कांग्रस सुभ कारज अपनायो, दलितन प्रति सदभाव जनायो।
जदपि सुजन सुभ कारज करहीं, दुरजन दोस ताहि महँ धरहीं॥
जाति-सुधार काज सुखदायी, धरम-अन्धजन कहँ दुखदायी।
मुसलिम अहित जानि निज केरा, निज मुख कांग्रस सन तब फेरा॥

दृढ़ बिचार साजन जब करहीं, कस्ट-कलेस नहिन चित धरहीं।
इत-उत भे भारी उतपाता, हरिजन-काज न पै छति पाता॥
सरधानंद आरज सन्यासी, बैदिक-धरम-सरनि परकासी।
जातिकुरीति-सुद्धि कर नेता, सत्त्व-अभय-सद्गुन-समवेता॥
रोगतल्प देहलि परो, तासु देह कर नास।
*करि रसीद दुरजन भयो, साजन-जन-मन-त्रास॥४२॥
गांधी अकनि तासु बलिदाना, मन महँ सोक अपरिमित माना।
पुनि गुनि सकल ईस कर माया, निज सुधार-कारज अपनाया॥
सात अधिक उन्निस-सत-बीसा, ख्रिस्ट अबद आंगल-अबनीसा।
राजसुधार हेत कछु साजन, उच्चपदस्थ प्रीति कर भाजन॥
‡सैमन नाम सुजन करि नेता, सासन-तंत्र-सकल-तत-बेता।
भारत महँ प्रेसित तिन कीने, कांग्रस मिलन सुअवसर दीने॥
भाखत गांधि मीत तुम साजन, निज सासक-प्रत्यय कर भाजन।
पै नहिं तुम कहँ कछु अधिकारा, भारत-जनमत-प्रकटन वारा॥
भारत-प्रतिनिधि राखऊ, निजमंडल द्वै तीन।
जासों प्रत्यय हमहिं सुभ, होवै नीति-प्रवीन॥४३॥
गांधी कर अस हितकर बानी, तिन नहिं गरब-दोससन मानी।
तब गांधी हरताल-बिचारा, दवकृसानु इव कीन पसारा॥
सैमन-बन्धु जितै जित जाईं, कृस्न-धुजा तित तित फहराईं।
जनता कहत लौटि घर जाऊ, काज इहाँ तुमरो नहिं काऊ॥
जन-बिरोध लखि सासक चौंके, लकुट देखि जिमि कुकुर भौंके।
बल-प्रयोग जनता पै कीना, नीति-बिचार न कछु मन चीना॥

---

* स्वामी श्रद्धानन्द का घातक अब्दुर्रशीद।

‡ Sir John Simon—साईमन कमीशन के अध्यक्ष।

जिमि-जिमि बल-प्रयोग इत बाढ़ा, तिमि-तिमि जन उमाह सिर काढ़ा।
लजपतराय पंचनद - नायक, लकुट-प्रहार सहे जस सायक॥
धीर-धुरन्धर धीर धरि, समर पाप सन कीन।
काय सिथिल अन सन तऊ, लोह सत्रु सन लीन॥४४॥
मरनकाल गरजन तिन कीना, ब्रिटिसराज-दुर्दिन अब चीना।
बिकल प्रजा राखत नृप जोऊ, निज हित कूप खनत सठ सोऊ॥
भई गिरा ता कर द्रुत पूरी, सैमन सीस परी बहु धूरी।
मोतिलाल इक रच्यो बिधाना, कांग्रेस तिहि प्रमान करि जाना॥
ब्रिटिस राज कहँ अस मत दीना, उभय पच्छ कर हित हम चीना।
उपनिवेस - सम देय सुराजू, साधहु मीत उभय-पख-काजू॥
एक अबद अन्तर महँ भाई, नतरु छिरै पुनि घोर लराई।
संगर सत्य-अहिंसा केरा, चलिहै भारत महँ बिनु देरा॥
बैसराय इरविन कह्यो, नेता सकल बुलाय।
करिहौं जतन सहाय हित, पै प्रन दियो न जाय॥४५॥
मकडानल स्रमदल कर नेता, राजनीति-आसय कर वेता।
ब्रिटिसराज कर सचिव प्रधाना, लोहा जासु सकल जग माना॥
प्रेरहुँ ताहि कछु देय सुधारा, मन-इच्छित जस होय तुमारा।
गांधि कह्यो अस टारन-नीती, मो कहँ भाव न असुजन-रीती॥
कहहु बिसद जो कछु मन तोरे, सरल बचन भावहिं मन मोरे।
उपनिवेस-सम देउ सुराजा, बिनु बिलम्ब नहिं बिगरत काजा॥
पूरन हम सुराज नतु लैहैं, देस-तजन-दुख तुम कहँ दैहैं।
सो तुम मीत मानि मम बाता, करतब करउ छाँड़ि छलघाता॥
पै इरविन मान्यो नहीं, गांधि-बचन सुखदैन।
रोग-बिबस नर कहँ नहीं, मिस्ट अगद सुख-ऐन॥४६॥

गांधी निज बन्धुन ढिग आई, बात कही सिगरी समुझाई।
आंगल-पति कर मत अस चीना, भारत-हित कछु चहत न कीना॥
करिहै काज सकल बिधि सोई, आंगल-जन-हित जा मधि होई।
ब्रिटिस राजनैतिक दल जेते, भारत-हित इक सम खल तेते॥
तासों तुम अब तजि सब आसा, निज साहस कर करहु बिकासा।
निज साहस बल जे अधिकाईं, ते नर चढ़हिं उच्चतम ठाईं॥
जे नर करहिं अवर भरवासा, नासहिं सकल सफलता-आसा॥
निज साहस मानव गति पावै, पर अवलंब पराजय पावै॥

हम कहँ जाचत अब भये, बरस पाँच चालीस।
पै सुराज दीनो नहीं, आंगल - देस - अधीस ।४७॥

जाचन करम अहहि अति नीचू, जाचन ते भल जानहु मीचू।
जाचक जन खोवत निज माना, मान गये नर मृतक समाना॥
सो अब मिलि सोचहु कछु रीती, पावहि अंत जथा सठ-नीती।
जनमसिद्ध अधिकार हमारो, छीनि सुराज दियो दुख भारो॥
अनुचित लाभ ग्रहन करि मानव, करत बिहार जथा खल दानव।
ता कर समन द्विविध हम जाना, पसुबल आदिम आयुध माना।
सत्र दुतीय प्रेम कर भ्राता, अहहि सकल बाधा-दुख-त्राता॥
पसुबल छनिक सफलता देई, प्रेम-प्रभाव सतत सुख लेई।

पसुबल सों रिपु बस किये, रिपुता छाँडत नाहिं।
प्रेम-मंत्र सों बस किये, तजत मित्रता नाहिं॥४८॥

लकुट प्रहार दलित अहि जोऊ, बहुरि डसत अवसर लहि सोऊ।
बीन मधुर-सुर सन बस कीना, होय सहज अहि दसन-बिहीना॥
वृक-नाहर सम स्वापद क्रूरा, हरिन समान होय मृदु पूरा।
प्रेम - प्रभाव तपोबन माहीं, रिपुबल-समन प्रेम-सम नाहीं॥

नीति-निपुन जनकर अस भासन, भय ते अधिक प्रेम कर सासन।
गुर सन होवत नर बस जोऊ, ता कहँ कत बिस देवत कोऊ॥
समय-नीति पुनि चित्त बिचारी, हौं अस कारज-बिधि निरधारी।
सागर-सम समरथ रिपु केरी, बूँद-समान तुच्छ निज हेरी॥
असहयोग कर अस्त्र गहि, आतमबल कर आस।
अरि सों हौं अब जूझिहौं, काटि सकल भय-पास॥४९॥
सुभ सन उन्निस-सत-उनतीसा, मास दिसम्बर तिथि इकतीसा।
लवपुर महँ कांग्रस-अधिवेसन, आय जुटे नेता बहु देसन॥
बीर जवाहिर गुनगनधामा, पूत बिचार चरित अभिरामा।
मोतीलाल-तनय नयनागर, प्रतिभावान अखिल गुनसागर॥
करमनिस्ट अनुसासन-नेमी, दीनदुखीजन-हित-कर प्रेमी॥
भारतभगत गांधि - पटचेला, भाव करम कर सुन्दर मेला।
कृसक हृदय कर भूप-समाना, जनता निज सोदर सम जाना।
ताहि सभापति पद तिन दीना, केहरिनाद तुरत तिन कीना॥
आंगलपति तुम सुनहु अब, तुव सासन दुख पाय।
सांप्रत पूर्न सुराज हित, लरिहैं हम सतिभाय॥५०॥
तीर इरावति पावन थाना, भारत-केतु बिमल फहराना।
हिंदू - मुसलिम - सिक्ख - ईसाई, अहाह परस्पर सोदर भाई॥
देस-धुजा अस बात बताई, लोहित - सेत - हरित दरसाई।
सकल सभा धुजबंदन कीना, पूर्न-सुराज-ग्रहन प्रन लीना॥
केहरि-नाद जवाहिर कीना, आंगल-पति कहँ चैलंज दीना।
अवधि नियत अब तोर बिहानी, माँग हमारि नहीं तुम मानी॥
सो अब हमहिं दोस नहिं देऊ, अंतिम माँग स्रवन करि लेऊ।
लेवहिं अब अविकल निज राजू, उपनिवेस पद सन नहिं काजू॥

सो तुम करहु प्रमान अब, मोर माँग सह प्रीत।
नतरु गहहिं अधिकार निज, धरमजुद्ध कर रीत ॥५१॥
भासन सुनि मोतीसुत केरा, समुद सभाजन तिस प्रति हेरा।
कहहिं जवाहिर कुल-अवतंसा, उज्जल कीन सकल निज बंसा॥
अहहि सुराज-नाव-कनधारा, नीति-निपुन लै जावहि पारा।
कस्ट-पयोधि ज्वार अब आवा, दारुन दमनदहन जस दावा॥
फँसी भँवर महँ भारत नैया, राखहिं अछत जवाहिर भैया।
कमलापति कमलापति-तूला, हरहि हमार सकल हिय-सूला॥
कमलापति मधु-कैटभ मारे, अमृत-चोर दानव बलवारे।
भारतस्त्री आंगल हरि लीनी, लेवहि अवसि जवाहिर छीनी॥
जनकसुता राघव जथा, हनि दसकन्धर लीन।
गौर-हस्तगत स्री तथा, लेय जवाहिर छीन ॥५२॥
देस-भगत जन बीर, गांधिचरितकरिअनुसरन।
पायँ बिजय रनधीर, असहयोग करि पापसन ॥५३॥

———

षष्ठ सोपान

मनुज सुतन्त्र सुरग-सुख लहही, नर परतन्त्र निरयदुख दहही।
नर सुतन्त्र पावत जग माना, पर-अधीन पावत अपमाना॥
मनुज सुतन्त्र जदपि धनहीना, आदर-जोग गुनीजन चीना।
पर-अधीन जन संपतिसाली, पाय न मान जद प गुनमाली॥
सिंह सुतन्त्र फिरत बन माहीं, ताहि समान अवर पसु नाहीं।
मन-इच्छित स्वापद तहँ मारै, निरभय नित करिभाल बिदारै॥
तेज-प्रभाव लहत सोउ माना, मृगपति नाम सकल जग जाना।
*कूकुर कनक - अभूखनधारी, पर-अधीन गति दीन बिचारी॥

सरब सुखद स्वाधीनता, करत दुखन कर नास।
अगद जथा संजीवनी, हरत देह - दुखत्रास॥१॥

सूर सुतन्त्र रहहिं जग माहीं, कादर परबस सतत लखाहीं।
बारन इव नर मान-समेता, भोग लहत सडरस-समवेता॥
धीर-प्रकृति मन-इच्छित पावै, चाटु बचन नहिं कबहुँ सुनावै।
कादर-कूकुर एक सुभाऊ, मान-बिचार रखत नहिं काऊ॥
जो जन देत ताहि इक टूकर, ता कहँ उदर दिखावत कूकर।
कादर जन तिमि सहि अपमाना, मोद मनावत सुख लहि नाना॥
बीरन कहँ अपजस-अपमाना, सन्त गनहिं सत मरन समाना।
मान-सहित सुठि मरन सुहावा, मान-बिहीन सुरग नहिं भावा॥

---

* 'द्युतिं सैंहीं किं श्वा धृतकनकमालोऽपि लभते।' (पञ्चतन्त्र)

मान-सहित जीवन जथा, अहहि अमिय कर पान।
मान-रहित जीवन जथा, बिसम गरल कर पान ॥२॥
भारत देस-मुकुटमनि सोहा, धरम-बिभव सन जग-मन-मोहा।
प्रकट भये निगमागम जा थल, धृत अवतार जगतपति जा थल॥
जिनवर बुद्ध जहाँ तनु धारा, कीनो अमित लोक-उपकारा।
संत महाजन जब तब आई, धरम-करम-मरजाद निभाई॥
भारत कहँ जगगुरु-पद दीना, इहपरलोक सफल निज कीना।
भई कला कर उन्नति भारी, संपति प्रचुर न जात सँभारी॥
भारत-समर भयो भयकारी, पांडु-तनय कुरुसूनु मँझारी।
भारतस्री सिगरी तिन नासी, अवनति-रीति सकल परकासी॥
धरम करम अरु सिलपकर, भयो चरम तब ह्रास।
भारतजन निरधन भये, छुधा-पाप कर ग्रास ॥३॥
जब जब धरम-पतन जग होई, तब तब पातक उन्नति होई।
बाढ़े पाप चरित कर नासा, चरितनास किमि उन्नति-आसा॥
भारतजन भूले परमारथ, ग्रहन किये आलस-छल-स्वारथ।
अवसर पाय जवन करि धावा, पुन्यधरा निज पैर जमावा॥
जगतबिदित दिल्लीप पिथौरा, साँगा अरि हित अयस-हथौरा।
अमित प्रयास देसहित कीने, कुटिल दैव निसफल सब कीने॥
बीर प्रताप - सिवा - दसमेसा, सहे अपार देसहित क्लेसा।
पै नहिं गत-भारत-स्री लौटी, कारज होय न किसमत खोटी।
जवनराज निरबल भये, तब आये गौरंग।
निज अधीन भारत कियो, निपट निराले ढंग ॥४॥
भेदनीति-आयोजन कीना, ता महँ निज स्वारथ तिन चीना।
आरज-जवन परस्पर फोरे, निज स्वारथ-साधक भे गोरे॥

करि सडजंत्र राज हथियाने, न्याय-बिचार न मन महँ आने।
अवध-नागपुर-झांसि-सितारा, दासता-पास सबन गर डारा॥
महारास्ट्र-सिंहासन छीना, सिक्खन कहँ आपुन बस कीना।
मुसलिम अरु रजपूत मराठा, दहहिं सतत कोपानल-भाठा॥
असटादससत-सप्तपचासा, ख्रिस्ट अबद उपजी नव आसा।
भारत महँ बाज्यो रनडंका, उपजी गौर-हृदय महँ संका॥

ज्वालामुखि-बिस्फोट सम, भभकि क्रान्ति कर आग।
मेरठ लखनउ कानपुर, दव-कृसानु जनु लाग॥५॥

नाम बहादुरसाह दिलीसा, मुगलबंस अंतिम अबनीसा।
महारास्ट्र-सासन अधिकारी, नाना नाम अटल-ब्रतधारी॥
ताँतिय नाम महा-रनधीरा, दुरगा सम लछमी अति बीरा।
देसभगत तिन कहँ करि नेता, आंगलजन मारे बहु खेता॥
पै नहिं तासु साथ बिधि दीना, सत्रुजनन कहँ बिजयी कीना।
तिन दिलीस निरबासित कीना, ताँतिय कहँ फाँसीबध दीना॥
नाना भागि गयो नयपाला, लछमी भसम भई रनज्वाला।
देस-भाग पलटा अस लीना, दासभाव-बंधन दृढ़ कीना॥

कूटनीति सन गौर तब, बिबस देसजन कीन।
सखाभाव दिखराय कै, धरम-अरथ हरि लीन॥६॥

सिच्छा-क्रम नव निरमित कीना, निजहित-साधन महँ चित दीना।
आंगलजन-साहित-बिगयाना, पढ़िपढ़ि छात्र कुमति लहि नाना॥
धरम-करम-मरजादा त्यागी, होय परम पर-संस्कृति-रागी।
तजि कै सकल देस-अभिमाना, रहि परतंत्र मोद तिन माना॥
भाखा-भाव-भेख निज त्यागे, सरनि-बिदेसि संग अनुरागे।
गीता तजि बैबल सन प्रेमा, पढ़त सेक्सपियर करि नेमा॥

ब्रह्मचरज - तपदान बिहाई, भोग-बिलास लिये अपनाई।
बिगतमान जासों कछु पावैं, दिवस-निसा ताकर गुन गावैं॥

छुद्र जदपि अंगरेज-जन, भारतीय गुन - ऐन।
तदपि उच्च पदवी सबै, लहहिं गौर दिन-रैन॥७॥

धरम-प्रचारक आंगल आई, सबल सहाय राज कर पाई।
धरम-बिहीन हिंदु बहु कीने, तिनहिं अपार प्रलोभन दीने॥
सिलप-कला भारत कर नासी, मंचस्टर कर सिलप बिकासी।
धन-संपति सिगरी हथियाई, भारतहित तजि फूट-लराई॥
दीनदसा लखि भारत केरी, कह्यो यतीस दयानंद टेरी।
जदपि सदोस सुराज सुहावा, परसासन-सुख मोहि न भावा॥
होय सुराज सदा सुखमूला, परसासन जानिय हिय-सूला।
निज संस्कृति-भाखा-परिधाना, अहहिं सुसासन-मूल निदाना॥

इक समाज थापन कियो, सुन्दर ललित-ललाम।
देस-धरम-उपकार हित, आरज कीनो नाम॥८॥

सत्य अरथ करि धरम प्रकासा, मतबिभेद कर कीन बिनासा।
दलित- ंधु पुनि तिन अपनाये, जवन अनेक धरम पथ लाये॥
*ईस्वर - केसव - मोहनराया, भारतहित करि अमित उपाया।
देसभगति-परिचै निज दीना, जातिसुधार-जतन बहु कीना॥
असटादससत अधिक पचासी, कांग्रस नाम समिति परकासी।
ह्यूम नाम अंगरेज उदारा, भारतहित निज हिय तिन धारा॥
कतिपै भारतीय संग लीने, देस-सुधार मनोरथ कीने।
देसभगत-जन होय प्रधाना, सेवा-करम करहिं बिधि नाना॥

---

* ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन तथा राजा राममोहन राय—१९वीं सदी के बंगाल के प्रसिद्ध समाज-सुधारक।

सासक - जन कहँ प्रेरहीं, तजि प्रभुता-कुबिचार ।
प्रजासंग हित करहु तुम, सासक-धरम बिचार ॥९॥

सासकजन प्रभुता - मदमाते, रहहिं रैन-दिन स्वारथ-राते ।
बैसराय इक करजन नामा, नीति-निपुन अतुलित बलधामा ॥
कुटिल दैव मति ता कर छीनी, बंगबिभाजन दुरमति-दीनी ।
जननी - जनमभूमि - अनुरागी, बंगजुबक निज संस्कृति-रागी ॥
लखि निज मातृभूमि-अपमाना, सासकजन-बिरोध मन ठाना ।
आंगल-जाति बनिज कर प्रेमी, अरथलाभ-साधन कर नेमी ॥
तासों ता पर करन प्रहारा, बस्तुबिदेसि-निसेध बिचारा ।
भारत-ब्यापि भयो आन्दोलन, सासक-हिय-समता कर दोलन ॥

*बाल-पाल अरु लाल तहँ, नेता - पदवी लीन ।
नौ-सुदेसि-कनधार बनि, सुबिधि संचालन कीन ॥१०॥

सबन सुदेसि-सपथ दृढ़ लीनी, आंगल-बनिज-हानि बहु कीनी ।
कति पै जुबक कोप तब कीना, जहँ तहँ बध गोरन कर कीना ॥
दारुन दमन-चक्र तब चाला, सासक कस्ट देयँ बिकराला ।
फाँसी - दंड अनेकन दीना, बंदीगृह अवरन धरि दीना ॥
कछुक जुबक निरबासित कीने, अवरन कर धन-घर हरि लीने ।
†कोंकन कर केहरि गुनधामा, बालगंगधर तिलक सुनामा ॥
जनमसिद्ध अधिकार हमारा, अहहि सुराज तासु ललकारा ।
सुनि तिहि निरबासित करि दीना, ब्रह्म-देस कारा-मधि कीना ॥

---

* बाल...लाल = महाराष्ट्र - केसरी बाल गंगाधर तिलक, श्री विपिनचन्द्र पाल (बंगाली राजनीतिज्ञ), लाला लाजपतराय ।

† कोंकन = महाराष्ट्र का समुद्रतटवर्ती भाग ।

लजपतराय सुनामधर, नेता नीति-प्रवीन।
भयो पंचनद-केहरी, देस-बहिर तिहि कीन ॥११॥
जिमि जिमि बढ़त कस्ट-सरिधारा, बढ़त जुवक-हिय उमग अपारा।
रबर गेंद-देखहु छिति मारा, उछरत पुनि लहि बेग अपारा।
कायर कस्ट पाय घबरावै, बीर-मनुज साहस बढ़ि जावै।
पाँच बरस पाछे रिपु हारा, देहलि महँ करि इक दरबारा॥
आंगल-नृप घोसित अस कीना, बंगबिभाग-कुमत तजि दीना।
सासक थगित दमन तब कीना, दंड-बिधान सकल तजि दीना।
अस जनमत परभाव दिखावा, देसभगत-हिय मोद बढ़ावा।
सँगठन सन कारज सिधि होवै, फूट सकल मानव-बल खोवै॥
लघु पिपीलिका संगठित, करहिं नाग-संहार।
फूट परे तिन कर करै, नाग समोद अहार ॥१२॥
आंगल भेद-नीति अपनाई, फोरि लिये कछु मुसलिम भाई।
हम कहँ देउ पृथक निरबाचन, तिन कीनो अनुचित बरजाचन॥
नीति-निपुन तब तिलक बिचारा, आंगल कीन कुटिल-नय-वारा।
ता कर उचित करन प्रतिकारा, लखनउ संधि-पत्र रचि डारा॥
मुसलिम कर इच्छा करि पूरी, राखी देस-एकता रूरी।
जूरुप जुद्ध भयो अति भारी, जरमन अरु अंगरेज मँझारी॥
आंगल-हित भारतजन कीना, प्रतिफल तिन रौलट बिल दीना।
गांधी असहयोग तब कीना, ब्रिटिस-राज कहँ चैलंज दीना॥
तिन सुराज-साधन गने, त्रिबिध-ककार-बिराग।
आरज-मुसलिम-संगठन, अरु खादी-अनुराग ॥१३॥
असहयोग कर सफल प्रयासा, कीन बिफल आंगल-जन-आसा।
काल पाय मदिरामद जावै, प्रभुता-मद निसदिन अधिकावै॥

सासक - जन सत्ता-मदमाते, प्रजा सतावत नाहिं अघाते।
आंगल करहिं हिंद कर सोसन, धन-बिबसाय-देस निज पोसन ॥
बिनु सुराज सोसन किमि नासै, भारत-भागभानु किमि भासै।
कांग्रस तब निसचै अस कीना, ' -सुराज-पन्थ गहि लीना ॥
सो करि बीर जवाहिर नेता, रावीतट लवपुर समवेता।
त्रिबरन-धुज सुन्दर फहरावा, लच्छ अखंड-सुराज बनावा ॥

गिरि सों उद्‌गम पाय जिमि, सागर प्रति सरि धाय।
तिमि सुतंत्रता-निम्नगा, सिंधु - सुराज समाय ॥१४॥

बीर जवाहिर अरजुन-तूला, मोहन जिमि केसव सुखमूला।
कौरव इव सासक-जन जानौ, इरविन जरठ पितामह मानौ ॥
कांग्रस पांडव-रूप सुहाई, देवत निज अधिकार दुहाई।
कौरव जिमि पांडव-हक छीना, जनता-हक सासक हरि लीना ॥
जिमि भारत कर संगर भारी, पांडु-तनय-कुरुबंस मँझारी।
भयो पवित्र कुरुखेत सुधामा, तिमि सासक-कांग्रस-संग्रामा ॥
अरजुन कर सारथि जिमि स्यामा, जननायक गांधी अभिरामा।
भारतजय माधव जिमि कीना, सत्यसमर जय मोहन लीना ॥

मास प्रथम छब्बिस तिथी, सन उन्निस-सत-तीस।
प्रन लीनो स्वातन्त्र्य कर, जनता कोटि बतीस ॥१५॥

गांधी निजकारजक्रम साधा, जस सुराज महँ होय न बाधा।
निखिल निसेध मादक द्रव केरा, परिवर्तन बिनिमय-दर केरा ॥
धरनी-कर कर अरध-बिमोचन, सैन्धव-कर कर पूरन-मोचन।
संगर-ब्यय अनुचित अति भारी, राजपुरुस - बेतन छतिकारी ॥
अरध-करन समुचित तिस केरा, या महँ हित भारत कर हेरा।
बसन-बिदेसि-रोधि-कर थापन, तट-बिपार भारत कहँ ापन ॥

जिन लहि राजनीति-बस कारा, तिन कर होय तुरत छुटकारा।
गुप्तबिभाग पुलिस कर त्यागन, निज रच्छाहित आयुध माँगन॥
बैसराय सन तिन कह्यो, अस तुम करहु सुधार।
बिनु सुधार सासन अहै, जनता-गर अय-भार॥१६॥
इरविन स्रवन करी नहिं बाता, तब गांधी जन-भाग्य-बिधाता।
†सैन्धव-कर-निसेध कर ठानी, निरधन-जन-प्रतीक तिहि मानी॥
सबिनय-सासन-भंग सुनामा, आंदोलन चाल्यो सुखधामा।
अस्सी सिस्य साथ लै मोहन, चल्यो उदधि प्रति जन-मन मोहन॥
गुर्जरदेस-जलधि-तट सोहै, दंडि-ग्राम साजन-मन मोहै।
सिस्यन सह जन-गन-मन-ईसा, चलि कै पन्थ दिवस चौबीसा॥
पहुँच्य मनबांछित असथाना, करि उपवास-भजन-असनाना।
बिनु कर लवन ग्रहन कछु कीना, लवन-बिधान भंग अस कीना।
करम करहिं जस सुजन-जन, इतर मनुस तिमि जान।
जनता सो कारज करै, जो बुध करहिं प्रमान॥१७॥
धीवर-कृसक जलधि-तट-बासी, उदधि-अम्बु सन लवन निकासी।
लवन-बिधान भंग करि दीना, लगुड़-प्रयोग पुलिस तब कीना॥
कतिपै नर घायल तिन कीने, जन अनेक कारागृह दीने।
नगर-गाँव-जनपद चहुँ ओरा, सबिनय-बिधि-निसेध कर सोरा॥
भयो अमित सासक भयकारी, तिन तब दमन-नीति परचारी।
कांग्रस-पति कारागत कीना, गांधि स्वयं तिस कर पद लीना॥
बैसराय कहँ सूचित कीना, लवन-डिपो-धरसन चित दीना।
बैसराय तब कीन निदेसा, करहु बन्दिगृह गांधि-निवेसा॥

---

†सैन्धव = नमक—महात्मा जी की नमक-कर विरोध-सम्बन्धी दांडी यात्रा का वर्णन।

कारा महँ गांधी-गमन, सुनि जनता अकुलाय।
देसब्यापि हरताल तब, कीनी सहज सुभाय ॥१८॥
लवन-डिपो धरसनपुर माहीं, गांधी-सुत सह सेवक जाहीं।
वा के संग सरोजिनी चाली, मानहु जयदेवी रन-आली ॥
मोहन नाम सुमिरि तिन भाखा, अटल प्रेमव्रत चहियत राखा।
सत्रु करत जदि कठिन प्रहारा, तदपि न चहियत ताहि निवारा ॥
सत्य-अहिंसा कर अस नेमा, अनभल-करत चहहु रिपु-छेमा।
सेवकगन अनुसासन मानी, पुलिस-प्रहार सहन को ठानी ॥
लगुड़-प्रहार पुलिसजन कीने, सेवक सुमन-हार-सम चीने।
मुंडतुंड - चरनादिक - भंगा, सहत बढ़हिं पुनि सहित उमंगा ॥
बीरपाँति अवकास कहँ, पूरहिं सहित उमंग।
इतर बीर जस-जलधि महँ, बाढ़त बीचि - तरंग ॥१९॥
छत-बिच्छत-तनु मरदित-अंगा, जूझहिं बीर मुदित रनरंगा।
करहिं नृसंस लगुड़ कर वारा, गनहिं गांधि-सिसु पीयुसधारा ॥
बीर-त्रिसत घायल तहँ भयऊ, सेवक-जुग सुरपति-पुर गयऊ।
करहिं कछुक घायल-जन सेवा, सेवक इतर लहहिं जस-मेवा ॥
रनहत बीर लहत फल जोऊ, सेवा सन सेवक-जन सोऊ।
रनहत बीर अमरपुर जावै, सेवक सुजस अमरपद पावै ॥
गांधितनय मनिलाल सुनामा, रमनीरतन सरोजनि नामा।
तिनहिं पकरि कारा महँ दीना, समुझहिं निज करतव करि लीना ॥
मूरख-जन जानै नहीं, सत्य-समर कर ढंग।
कस्ट सहन करि सत्यप्रिय - हिय महँ बढ़त उमंग ॥२०॥
इत रन चलत अहिंसा केरा, दूजा पेसावर महँ हेरा।
हिंसा-करम प्रथम तहँ भयऊ, पुरसासन सासक तजि दयऊ ॥

†लाल कमीज बिमल जस लीना, पुर-प्रबन्ध सेवक-दल कीना।
दिवस तीन बीते पुनि सासक, भयो नगर-सासन-अभिलासक॥
लालकुरति अबदुल कर चेला, गतस्वारथ पुर दीन सहेला।
दुरजन-नर कर सहज सुभाऊ, कृत उपकार गनत नहिं काऊ॥
बिपद्-काल गहि बिनय अपारा, रिपुपद सीस तुरत चह डारा।
कारज-सिद्ध भये बिपरीता, बिसरहि सुभचिन्तक निज मीता।

लालकुरति - सेवक जबै, अबदुल आयसु मानि।
पुर-प्रबन्ध तिहि सौंपि कै, सिबिरगवन मति ठानि॥२१॥

सासक सठ तब अवसर पाई, सेवक-दल पै गोलि चलाई।
घायल होय गिरे बहु सेवक, मृत्युकवल मे कछु जनसेवक॥
सेवक-जन निज बंधु उठाई, औसध-सदन दिये पहुँचाई।
तहँ कीनो तिन कर उपचारा, अगद्-योग सब रोग निवारा॥
धोखा जदपि सत्रुजन कीना, सेवक तदपि द्वेस नहिं चीना।
सहन-सक्ति लखि बिसमित लोकू, आपद् सहहिं बीर तजि सोकू॥
भाखत जग धनि खान गफारा, अबदुल जिन अचरज करि डारा।
अहहिं प्रसिद्ध नृसंस पठाना, तिन कहँ दीन अहिंसा-दाना॥

मनहु मंत्र-बस भुजग तिन, कीनो दसन - बिहीन।
लखहु अहिंसा-मंत्र सों, केहरि मृग-सम कीन॥२२॥

*अबदुल खान पुरुसपुर-गाँधी, जन-अधिकार-ग्रहन मति बाँधी।
जीवन-सार गन्यो अनुसासन, कीन नियन्त्रित करम रु भासन॥

---

† पश्चिमोत्तर प्रदेश में खान अब्दुल गफारखाँ द्वारा संगठित सेवक दल जो 'लालकुर्ती' के नाम से प्रसिद्ध था।

* खान अब्दुल गफार खाँ 'फ्रंटियर गांधी' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

मानहु कांग्रस कर सुभ सासन, बसन विदेसि केर निरबासन।
मद-निसेध कर करहु प्रचारा, सहहु सुमन-सम सत्रु-प्रहारा॥
निज सिस्यन तिन अस उपदेसा, करहिं प्रानपन तासु निदेसा।
अस बिधि सत्य-समर-सरि बाढ़ी, देस समस्त सरनि निज काढ़ी॥
ढाहति बनिज-बिदेसि कगारे, आंगल-बल-मंदिर छिति डारे।
देसभगत हरखावन - हारी, देय सुराज-खेत महँ वारी।

आंगल-हित जमसरित सम, सुरसरि भारत हेत।
सत्य-समर-सरिता लखौ, लाभ अलाभ समेत॥२३॥

बारदौलि गुर्जर सुभथाना, कर-निसेध कृसकन मन ठाना।
अत्याचार सासक बहु कीने, पसु-केदार-सदन हरि लीने॥
देसभगत साहस नहिं हारा, भय तजि अस करि उच्च पुकारा।
कर कर इक घेला नहिं दैहैं, जब लगि गांधि-निदेस न पैहैं॥
मुम्बापुरि कांग्रस - सुभराजा, सत्ता-सहित अनूपम साजा।
हाटबाट त्रिबरन धुज सोहैं, भारत-मान-चिह्न मन मोहैं॥
सुभ्र बसन खादी कर धारे, बल्लमटेर लगुड़ कर धारे।
केसरि सारि पहिरि कुलनारी, सत्यअहिंसा-सुभ-ब्रत-धारी॥

बसन - बिदेसी हाट पै, अरु मदिरा - आपान।
धरना दै ठाड़ैं अटल, कांग्रस - सासन मान॥२४॥

बसन बिदेसि-बनिज जे करहीं, देस-द्रोह-पातक नहिं डरहीं।
सेवक करहिं विनय तिन पाहीं, देस-धरम-हानी सुभ नाहीं॥
सत्याग्रह कर अमित प्रभाऊ, बनिज बिदेसि चलत नहिं काऊ।
सत्य-प्रभाव दमन-नय हारी, उरगअबलजिमिनिरखिखगारी॥
भीसम-सम इरविन मतिमाना, स्वारथ लागि दमन हित जाना।
पै नहिं चित्त सांत तिस केरा, प्रभुवर ताहि संधि-प्रति प्रेरा॥

*मकडानल-वैजवुड मतिमाना, स्रम-दल-नेता परम सुजाना।
आंगल-भारत-हित नहिं जाना, कांग्रस-सासक-संधि-समाना॥
मकडानल निज दूत तब, भेज्यो मोहन पास।
सत्य-समर कर समन-हित, संधि-करन कर आस॥२५॥
कारा महँ भेंट्यो तिन जाई, संधि-करन कर बात चलाई।
ता कहँ गांधि कह्यो समुझाई, संधि-नियम जानहु अस भाई॥
मद्य-निसेध लवन-कर-टारन, बसन-बिदेसि-प्रवेस-निवारन।
देसभगत-जन-कारा-मोचन, अनुचित सासक-बल-संकोचन॥
सुन्दर नवविधान-निरमाना, सपदि सुराज-सार सुभ दाना।
†सप्रू-जयकर नाम सुनेता, भये संधि-नाटक-अभिनेता॥
गांधी कहँ तिन कह्यो बुझाई, दैव दसा अब सुभ दरसाई।
§स्रमदल अहहि परम अनुकूला, बैसराय इरविन समतूला॥
संधि-करन अब उचित है, छोरि कछुक निज माँग।
इरविन सों पुनि तिन कह्यो, तजहु दमन कर साँग॥२६॥
गांधी बात कहहिं सुबिचारी, या छिन संधिकरन हितकारी।
‡नतरु जुबकजन-नेता भारे, बाबु सुभास नरायन न्यारे॥

---

* रैम्जे मैकडानल वा कर्नल वैजवुड—इङ्गलैण्ड की Labour Party (श्रमिक दल) के प्रमुख नेता। उस समय मैकडानल इङ्गलैण्ड के प्रधान मंत्री थे।

† सर तेजबहादुर सप्रू—युक्तप्रान्त के प्रसिद्ध न्याय-विशारद, मुकुन्दराव जयकर—बंबई के विख्यात न्यायपण्डित—दोनों उदार-दल (Liberal party) के प्रमुख नेता।

§स्रमदल—Laobur party।

‡ जयप्रकाश नारायण—प्रसिद्ध समाजवादी (Socialist) नेता।

सत्य-अहिंसा कर व्रत त्यागी, होवहिं हिंसापथ - अनुरागी।
अस सम्मति लहि सचिव प्रधाना, संधिकरन महँ निज हित माना॥
इरविन कहँ तिन पठ्यो सँदेसा, तजहु बन्दि तजि सकल अँदेसा।
सुभ सन उन्निस सत इकतीसा, जनवरि मास तिथी सटबीसा॥
बरसी दिन सुतन्त्रता केरी, भारत - वैसराय सुभ हेरी।
कारा सन नेता सब छोरे, भेंटि परस्पर मुदित न थोरे॥

कांग्रस-लघुसमिति जुटी, तीरथराज प्रयाग।
संधिनियम - निरधार-हित, सोधन भारत - भाग॥२७॥

मोदकाल घटना दुखदायी, मोतिलाल मीचू बनि आयी।
समर - सुराज - महारथि वीरा, नीति-कुसल नेता रनधीरा॥
भारतहित जिन सरबस वारा, धन- धरनी - परिजन - परिवारा।
आत्मजरतन जवाहिरतूला, पुत्रबधू कमला - समतूला॥
तासु कलत्र रानि - समरूपा, आपु बदान्य-सिरोमनि-भूपा।
सत्य-समरमख सरबस होमा, कीनो पान अमरजस-सोमा॥
तासु बिरह मोहन दुख पायो, पुनि बिचार सन मन समुझायो।
चिंता-जोग न अस जन होई, करम करत स्वारथ तजि जोई॥

देसजाति-हित जिन दियो, तन-मन-धन-सुख-सार।
अमर-सुजस पायो सुफल, रिसि दधीचि-अनुहार॥२८॥

मारच पंच तिथि इरविन-गाँधी, संधि-समय-निसचय मति बाँधी।
सविनय-सासन - भंग- अँदोलन, जिन कीनो आंगल-हिय-दोलन॥
गांधि कियो ता कर संकोचन, इरविन कीन बन्दिजन-मोचन।
हृतधन-संपति लोकन दीनी, सांत-बहिस्कृति स्वीकृत कीनी॥
सागरतट-समीप जे रहहीं, लवन-बनावन-सुबिधा लहहीं।
इरविन अस प्रमान करि लीना, गांधी सफलमनोरथ कीना॥

राजसचिव कर पाय निदेसू, इरविन वाहि अस दीन सँदेसू।
गोलमेज-समिति महँ जाई, निज सहयोग देउ अब भाई॥
गोलमेज़-समिती प्रथम, कांग्रस-प्रतिनिधि-हीन।
बिनु मयंक जस जामिनी, रही निपट स्री-हीन॥२९॥
बर बिनु सोह न रुचिर बराता, बिनु मयंक पूनो कर राता।
आंगल-मुसलिम-सिक्ख-ईसाई, भारत-नृप अरु हरिजन भाई॥
बिबिध जाति-दल-मत कर नेता, नंदननगर भये समवेता।
पै न समागम पूरन जाना, राजसचिव तासों मतिमाना॥
कांग्रस कहँ संदेस पठावा, निज प्रतिनिधि भेजहु मनभावा।
पुर-कराचि अधिवेसन कीना, कांग्रस-पतिपद बल्लभ लीना॥
इरविन-संधि-समर्थन कीना, गांधी निज प्रतिनिधि चुनि लीना।
जनता कर मौलिक अधिकारा, तिन पर कीन बिसेस बिचारा॥
कछुक जुबक आये तहाँ, कर गहि कृस्न-पताक।
संधि कहा गांधी कहौ, सठ सन सहित तपाक॥३०॥
*बीर भगत नरमनि जिन मारा, देय कलेस जतीन सँहारा।
देसभगतजन कस्ट अपारा, धन-बैभव हरि दीने कारा॥
वा सन करहु संधि कर बाता, सासक खल प्रभुता-मदमाता।
करत अनीति अनेक प्रकारा, सब बिधि करत अनीठ हमारा॥
तब मृदु-बानि गांधि समुझावा, सठ सन रखहु न सठता-भावा।
धरम-अहिंसा कर अस रीती, दुस्ट-सुधार करहु सह-प्रीती॥
दानव-सम दुरजन नर जोऊ, प्रेम-प्रभाव सुधरिहै सोऊ।
चन्द्रकान्तमनि उपल कठोरा, बिधु-कर-परस द्रवत नहिं थोरा॥

---

*सरदार भगतसिंह—२४ मार्च १९३१ को इन्हें फाँसी मिली; जतीन्द्रनाथ दास—लाहौर जेल में भूख हड़ताल से मरे।

सतनु ग्यान दुजवर सुभग, मालवीय मतिमान।
महिला-रतन सरोजिनी, क्रिया सदेह समान ॥३१॥
तिन सँग सोहत मोहन कैसे, ग्यान-क्रियाजुत ईस्वर जैसे।
सुभसन उन्निस-सत-इकतीसा, मास अगस्त तिथी सतबीसा ॥
चढ़ि जलयान विलायत जावा, भारत-हित-साधन मन चावा।
राजसचिब तहँ स्वागत कीना, भवन बिसाल बास-हित दीना ॥
राजसदन दुरजोधन केरा, जिमि जदुनाथ न इक चख हेरा।
बिदुर-कुटीर जाय सुख पावा, तजि पकवान साक मन भावा ॥
भव्य-भवन तिमि गांधि बिहाई, दीन-जनन-बस्ती अपनाई।
†लिस्टर नाम अमित गुनवारी, कन्या एक परम उपकारी ॥
ब्रह्मचरजब्रत धारि कै, संजमसील दयाल।
निसिबासर सेवा करै, निरधन-जन-प्रतिपाल ॥३२॥
जिमि सबरी कर भगति सुहाई, प्रमुदित निरखि भये रघुराई।
परनकुटीर जाय पगु धारा, वा कर इह-परलोक सँवारा ॥
तिमि मोहन लिस्टर-गृह जाई, आरजजन-मरजाद निभाई।
सेवा कर सुभ अवसर दीना, पूरन सकल मनोरथ कीना ॥
राजभवन सब दल कर नेता, सम्मति-हेत भये समबेता।
तिन महँ सोहत मोहन कैसे, उडुगन-मध्य बिमल ससि जैसे ॥
दूजे प्रतिनिधि दीप-समाना, मोहन प्रकट भानु-सम जाना।
नेता अवर बिबिधमतरूपा, गांधी प्राकृत-धरम-सरूपा ॥
सांप्रदायिता-भाव सों, प्रेरित होय अमन्द।
देशजाति-हित त्यागहीं, स्वारथ-रत मतिमन्द ॥३३॥

---

† Miss Muriel Lister—लण्डन के East End नामक निर्धन जनता से अधिकृत भाग में रहने वाली गांधी-भक्त समाज-सुधारिका।

जस दीपक लघु करहिं प्रकासा, जहँ तहँ परिमित लहि निज भासा।
तिमि मतबाद-पंक महँ लीना, लघु-लघु माँग करहिं मतिहीना॥
मोहन उज्जल भानु-प्रकासा, करतनिखिल-तम-तोम-बिनासा।
निज-सासन-अधिकार जतावा, बिसद कह्यो परराज न भावा॥
राजसभा सोहत किमि मोहन, राजसूय-मख जिमि मनमोहन।
विद्या-बिनय-तप-संजमसाली, सोभा राखत परम निराली॥
चरखा-चक्र-सुदरसनधारी, माधवसम निरबल-हितकारी।
अवर सभासद मानिक-रूपा, मोहन हीर रतनकुलभूपा।

निज स्वारथ-चिन्तक सबै, समिति-सभासद अन्य।
गतस्वारथ मोहन तहाँ, भारत-भगत अनन्य॥३४॥

मोहन-रूप लखहिं नर कैसे, भाव रहहिं उर अन्तर जैसे।
मकडानल स्वमदल कर नेता, गोल-समिति-नाटक-अभिनेता॥
मोहन तिन कांग्रसपति माना, जनता-प्रतिनिधि इव सनमाना।
भारत-सासन-थंभ-समाना, गन्यो जदपि रिपु उत्कट जाना॥
*चरचिल नाम महा-अभिमानी, कुटिल-नीति-पंडित अघखानी।
मोहन धूमकेतु इव लेखा, ब्रिटिस-राज अन्तकसम पेखा॥
कोपकृसानु जरहिं सब अंगा, भावी निरखि ब्रिटिस बलभंगा।
कहत सोक इक नगन फकीरा, होय ब्रिटिस-हित कालसमीरा॥

निगड़बद्ध करि डारऊ, गांधी कारा माहिं।
ब्रिटिसराजरिपु जानि कै, हित हमार नतु नाहिं॥३५॥

मुसलिम लखहिं गांधि कहँ कैसे, नर सदोस सासक कहँ जैसे।
†भीमराव दलितन कर नेता, स्वारथरंग-कुसल-अभिनेता॥

*विंस्टन चर्चिल—इंगलैंड की (Conservative Party) अनुदार दल का नेता, कट्टर साम्राज्यवादी तथा भारत की स्वाधीनता का प्रमुख विरोधी।
†बी आर अम्बेडकर—गांधी-विरोधी दलितवर्ग का नेता।

निज परिपंथि लख्यो तिन गाँधी, कारज-हानि-करन मति बाँधी।
देसभगत-जन मोहन जाना, तरि-सुराज-कनधार-समाना॥
बिबिध-भाव मधि सोहत कैसे, चपलजलधिजल मन्दर जैसे।
जस जस उचित सबन समुझावा, नीति-धरम कर मरम बतावा॥
हरिजन-मुसलिम-आंगल सारे, सोदर तुल्य अहहिं मम प्यारे।
अस तुम सब मिलि करहु प्रयासा, भारत कर जस पूजहि आसा॥

आंगल सन नहिं सत्रुता, मुसलिम सन नहिं बैर।
हरिजन सोदर सम अहै, सब प्रति हौं निरबैर॥३६॥

आंगल तजि भारत कर सासन, सोदर-सम बैठहु इक आसन।
मुसलिम मानहु मोर निहोरा, भारतहित लेखहुँ हित तोरा॥
मातृभूमि भारत निज मानौ, हिंदुन निज अग्रज करि जानौ।
ब्रिटिस-राज-आस्रय तजि देऊ, निज-अधिकार उचित तुम लेऊ॥
हरिजन तुम मम सोदर-भ्राता, हिन्दुन सन प्राकृत तुव नाता।
बालमीकि रामायन कीनी, मानवधरम-सरनि फुट कीनी॥
भगत कबीर सन्त रविदासा, हिन्दु-धरम कर मरम प्रकासा।
साँझे अहहिं गुरू मम तोरे, जनि अलगाव करहु तुम भोरे॥

हिन्दु जदपि दुख बहु दियो, राखिय जनि चित खोरि।
हिंदुन सन नाता अमिट, नख-आमिस किमि छोरि॥३७॥

हिंदुन कहँ अस सम्मति दैहौं, तुव अधिकार सकल मनवैहौं।
तजहु सकल अलगाव बिचारा, मेल किये हित होय तुमारा॥
हरिजन-हिंदु सहोदर-भ्राता, तिन कर संतत प्राकृत नाता।
हौं बरु देउँ प्रान निज त्यागी, होवन देउँ न फूट अभागी॥
अस बिधि तिन सब कहँ समुझावा, न्याय-धरम कर तत्त्व बतावा।
स्वारथरत हितबचन न माना, निज हित-अनहित मूढ़ न जाना॥

अवसर लहि आंगल छल कीना, भेद-बिचार सुदृढ़ करि दीना।
हितकर बचन निफल भे कैसे, महिस-निकट बंसी-धुनि जैसे॥

दादुर-करकस-रव सुनी, गह्यो कोकिला मौन।
मूरखजन-समुदाय महँ, सुनत बुधन की कौन॥३८॥

गह्यो मौन मोहन मतिमाना, बिरथा बचन न कहहिं सुजाना।
भारत लौटन प्रति मति कीनी, माँगि सुराज-आस तजि दीनी॥
तेजवन्त कर सहज सुभाऊ, कर पसारि नहिं जाचत काऊ।
जिन नाहर करि-कुम्भ बिदारा, को तिहि करत मृगन सरदारा॥
निज बल पावहिं निज अधिकारा, मानवन्त जन केहरि-सारा।
जदपि परस्पर होवत भेदा, तदपि करहिं नहिं साजन खेदा॥
आंगल-भूप सँदेस पठावा, मोहन कहँ निज सदन बुलावा।
बिनु संकोच गयो तहँ गाँधी, लीनो प्रेमरज्जु सन बाँधी॥

महिमा जासु सुरेस-सम, तेज प्रभाकर-तूल।
सखाहेत सुभ कल्पद्रुम, पै सपत्न-हिय-सूल॥३९॥

जासु राज अथये नहिं भानू, रिपुकुल पादप-वृन्द कृसानू।
नृपकिरीटमनि-मंडित-पादा, मानहिं देस बिबिध मरजादा॥
जा के निकट जात सकुचाईं, देस-बिदेस-राजकरसाईं।
तिन फकीर भ्राता कहि टेरा, चकित होय लोकन अस हेरा॥
जानहिं लोक न गांधि प्रभाऊ, जस जानत आंगल-छितिराऊ।
*मनि-महिमा जौहरि पहिचानै, साकबनिक लघुमति किमि जानै॥
भारत जनगनमनअधिनायक, मोहन सब बिधि पूजन-लायक।
अस बिचारि मान तिहि दीना, स्वागत करि निज करतब कीना॥

---

* परीक्षको वेत्ति हि हीरकार्घं,
शाकस्य क्रेता न जनः कदाचित्। (वि० ध० म०)

मास चारि लगि रहि तहाँ, भारतजन - हिय - ईस ।
भारतहित - चरचा करी, टारे ख्याल खबीस ॥४०॥

मोहन पुनि भारत प्रति आयो, देस-दसा लखि अति दुख पायो ।
लाट विलिंगडन सत्तावादी, जन-अधिकार परम प्रतिवादी ॥
इरविन कर पदवी तिन लीनी, नीति सकल परिवर्तित कीनी ।
इरविन - गांधि-सन्धि-प्रतिवादा, करि तजि धरमनीति-मरजादा ॥
बीर जबाहिर खानगफारा, नेता पकरि दिये तिन कारा ।
सत्यसंध गांधी लिखि पाती, बैसराय परजा तव थाती ॥
अहित तुमार वाहि दुख दीने, तिन हित-बचन कान नहिं कीने ।
†कटुहितवचन कहत नर जोऊ, वाहि सुनत दुरलभ जन दोऊ ॥

गांधि बाजि रनदुन्दुभी, प्रन सुराज कर लीन ।
सविनय-सासन-भंग कर, पुनि प्रचार तिन कीन ॥४१॥

सासक दमन कठिन तब कीना, सहित पटेल गांधि धरि लीना ।
कांग्रस कर धनसम्पति छीनी, घोर बिथा असहायन दीनी ॥
सड़सठ-सहस बंदि तब कीने, कारागार सकल भरि दीने ।
पै नहिं दमन चलत बहु काला, धीरजबल द्रुत होय बिहाला ॥
लाट विलिंगडन बलमदलीना, तिन धीरज-परभाव न चीना ।
धीरज-बल पांडव बलधारी, निज करगत कीनी महि सारी ॥
धीरज-बल हरिचंद नरेसा, पुनि पाये बनिता-सुत-देसा ।
धीरज-बल कटु बिपदा मीता, होवत प्रभु-वर-तुल्य पुनीता ॥

समय पाय सासक थके, भरि भरि कारागार ।
चकित रहे अवलोकि कै, धीरज अमित अपार ॥४२॥

---

† 'अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः'
—(विदुरनीति)

तब कारा मोचन तिन कीना, देसभगत बंधन हरि लीना।
पै नहिं नेता-जन कहँ छोरा, अनुचित करम करै मतिभोरा ॥
†गांधी रहत यरवदा अन्दर, गनत ताहि जस माधव-मन्दिर।
उन्निस-सत सन बरस बतीसा, मास अगस्त अहहि अति खीसा ॥
ब्रिटिस-प्रधान-सचिव अस भाखा, भारत-हित हौं हिय महँ राखा।
संप्रदाय-झगरन कर कीना, चहहुँ उपाय कछुक समिचीना ॥
सो तुम मान्य करहु मिलि सारे, प्रस्न जटिल सुलझहिं अतिभारे।
पृथक देउँ निरबाचन सबहीं, सुख सन रहहिं सरबदल तबहीं ॥

अस बिधि मकडानल कियो, कपट सहित सडजन्त्र।
भारतजन लरि मरहिं जस, रहैं सदा पर-तन्त्र ॥४३॥

भारतभाल - कुटिल - ग्रहरेखा, कांग्रस-भानु-केतु सम पेखा।
मकडानल-निरनय जब गाँधी, टारन-हित तब परिकर बाँधी ॥
हरिजन-पृथक करन कर चाला, मोहन-हिय लागी जिमि भाला।
लसत सुधासम बिसमय हाला, तुमजनि पियहु गरल कर प्याला ॥
दीसत सुभग सुमन-बरमाला, अहहि जथारथ उरग कराला।
भारत-जन अस कहि समुझावा, पै उपदेस नहिन चित लावा ॥
मोहन तब निज बचन बिचारी, मरन बरत दृढ़-मति मन धारी।
*आरजजन कर सहज सुभाऊ, बचन रहै बरु जीवन जाऊ ॥

देहसुद्धि मनसुद्धि अरु, आतम - सुद्धि उपाय।
अहहि नहीं उपवास सम, कहहि सुजन स्रुतिभाय ॥४४॥

तनसोधन मल अपहरि सारा, रुज निवारि बलदेवनहारा।
हरि त्रयदोस देय सुखसारा, सुबरन इव तन सुभग सँवारा ॥

---

† यरवदा—पूना की जेल।

*'रघुकुलरीत सदा चलि आई, प्रान जाय बरु बचन न जाई।'
(तुलसी रामायण)

मानस-आधि कस्टकर जोऊ, अनसन-अगद बिनासत सोऊ।
सबल रसायनसम करि डारै, दुख-उद्वेग-निरासा टारै॥
मत्सर-बैर-मानमद-मोहा, स्वारथ-लोभ-कपट अरु कोहा।
मन-बिकार समरथ जस दानव, निज अधिकार करहिं जब मानव॥
तब उपवास-बज्र गहि धीरा, टारत सकल दनुज-कृत पीरा।
मलबिखेप आदिक बहुदोसा, लूटहिं जब बिबेक कर कोसा॥

मघवा-सम तब आतमा, बृजिन-बृत्र भय खाय।
छुपत निरासा-कन्दरा, निज बल-तेज गँवाय॥४५॥

तब दधीचितनु धरि उपबासा, निज तनु अरपि हरत सुरत्रासा।
संजम-कुलिस पुरन्दर पाई, बृजिन-बृत्र कहँ देत गिराई॥
बृत्र हने सिंहासन पाई, सुरपति मानत मोद बधाई।
पाय सुराज सुरगपति सोहा, मानत सकल सुरासुर लोहा॥
आतम-उन्नति कर उपबासा, अहहि अनूपम पूरन-आसा।
अनसन कर गांधी जब ठानी, सबरन हिन्दु बरन-अभिमानी॥
पंडित मालवीय अस प्रेरा, चहिय बन्धु-सम हरिजन हेरा।
ता कहँ त्रास जोऊ तुम दीने, कीने करम बिबिध नय-हीने॥

तिन पै पछतावा करौ, निज करतब सुबिचार।
हरिजनबंधु-सुधार बिनु, होय न देस-सुधार॥४६॥

भीमराव दलितन कर नायक, हिंदुन गनत निसित जिमि सायक।
गाँधि-सुजस सुनि पाव न चैना, मत्सर-अनल दहत दिन-रैना॥
कुलिस-कठोर हृदय तिस केरा, निरदयभाव गांधि-प्रति हेरा।
कहत गांधि दंभिन कर नेता, कुटिल नीति-छल-छद्म-समेता॥
दलित-सपत्न महाभयकारी, सबरन-हिंदु-जनन-उपकारी।
रच्यो ढोंग अनसन-ब्रत केरा, दलितन-हित घातक हौं हेरा॥

†दुरजन कर अस सहज सुभाऊ, दोस-लखन बिनु काज न काऊ।
जिमि क्रमेल उपबन महँ जाई, छाँड़ि मधुर फल कण्टक खाई॥
गांधी-गौरव-सुजस जग, गावहिं सब नरनार।
ता कहँ ढोंगी कहत सठ, भीमराव अनुदार॥४७॥
मालवीय वा कहँ समुझावा, मीत सुनहु मम प्राकृत भावा।
हरिजन अंग जाति मम केरे, तिन कहँ सत्रु नासहित प्रेरे॥
पर-अधीन मानव पगहीना, जीवन-रहित चरन तनु-छीना।
हरिजन-हिंदु सहोदर भाई, नखसनआमिसकिमिबिलगाई॥
गांधी चहत जियन निज त्यागा, हरिजन-हिंदु उभय-अनुरागा।
तिन बिच फूट न होवन देई, बरु निज प्रान अन्त करि लेई॥
गांधी कर जीवन बहुमूला, जनहित होय न इंधन-तूला।
सो अब मिलि कछु करिय प्रयासू, रहै अछत जिमि जीवन तासू॥
पुन्यनगर महँ अस भयो, मदन - भीम - संबाद।
पुन्यसंधि सन समित भे, हरिजन - हिंदु - बिबाद॥४८॥
*पुन्य-संधि मकडानल मानी, छाँड़ी पृथक-करन-मनमानी।
पूरन ब्रत गांधी कर भयऊ, निज-पन-उदधि पार तब गयऊ॥
अनसन तजि पारन जब कीना, हरिजन-दुज अभिनंदन कीना।
भारत-हिय अस बढ़त प्रमोदा, कान्ह अछतजिमिमुदितजसोदा।
सन उन्निस सत त्रय अरु तीसा, दीन निदेस आंगल-अबनीसा।
समित भई आंदोलन-आंधी, कारा सन छाँड़हु अब गांधी॥

---

† 'कर्णामृतं सूक्तिरसं विहाय दोषे प्रयत्नः सुमहान खलस्य।
क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य, निरीक्षते कण्टकजालमेव।
(बिल्हण)

* पूना पैक्ट नाम से प्रसिद्ध हिन्दु-हरिजन समझौता।

भारत - सासन - नव्य - बिधाना, बिनु कांग्रेस संभव नहिं जाना।
सोउ हमार साथ नहिं देहै, जौ लौं गांधि-निदेस न पैहै।
कारागृह सों छूटि कै, गांधी निसचय कीन।
जाति - सुधार - सुतन्त्रता, हरिजन-हित महँ लीन ॥४९॥
राजनीति तजि कै तब गाँधी, हरिजन-हित निज परिकर बाँधी।
हरिजन - सेवक - संघ बनायो, हरिजन-हित इक पत्र चलायो ॥
हरिजन-हित धन-संचय कीना, हिन्दु-समाज उचित पद दीना।
मंदिर-गमन आदि अधिकारा, दीने सब हरि कस्ट अपारा ॥
मध्यप्रदेस माँझ इक ठाईं, हरिजन-बस्ती दरिदपुर-न्याईं।
सेवाग्राम नाम तिहि दीना, रुचिर कुटीर तहाँ निज कीना ॥
करि कै दरिदनरायन सेवा, लहन चहत जन-उन्नति-मेवा।
बीच गँवारन सोहत कैसे, कपिन मध्य रघुनायक जैसे ॥
देसदीनता देहधर, ग्राम गाँधि अनुमानि।
ग्रामोद्योग - सुधार - हित, जतन करन कर ठानि ॥५०॥
जहँ तहँ चरखासंघ बनाये, खादी - बिक्रय - केन्द्र रचाये।
कीन प्रबल मदपान-निसेधू, दूसित रहन-सहन प्रतिसेधू ॥
सेवाग्राम अधम इक गाँवा, तासु प्रभाव भयो सुखठाँवा।
तीरथ-सम ता कहँ जन जानी, इस्ट-देव-सम मोहन मानी ॥
सरधा-भेंट धरहिं निज आई, जावहिं मुदित मनोरथ पाई।
सन्त बसत जिहि पावन थाना, सो थल पूत प्रयाग-समाना ॥
जा थल इक मलयज द्रुम होई, चन्दन करत अवर तरु सोई।
सन्तपुरुस पारससम जाना, करत कुजनत्रपु हेमसमाना ॥
राजनीति तजि गांधि जब, जनसुधार चित दीन।
कांग्रेस कर नेतृत्व तब, बीर जवाहिर कीन ॥५१॥

जिमि बसिस्ट गुरु रघुकुल केरे, कुरुकुल पूज्य ब्यास-मुनि हेरे।
सनमारग चालहिं जजमाना, तिन कर कुसल परम सुख माना॥
तिमि तजि सकललोक-अधिकारा, कांग्रस-पूज्य भयो सुखसारा।
देसभगत बापू कहिं बोलैं, भेद सकल निज मन कर खोलैं॥
गनहिं गांधि गनपति-समतूला, सरधा-पात्र परम सुखमूला।
लेय असीस करहिं सब काजा, मानहु सोई मनोरथ-राजा॥
सासन नव जब थापित भयऊ, जनप्रतिनिधि निरबाचनभयऊ।
कांग्रस तब लहि गांधि-निदेसा, कौंसल महँ पुनि कीन प्रवेसा॥

बैसराय - अनुरोध ते, प्रान्तसचिव पद पाय।
भारत-सेवा करहिं नित, कांग्रस-जन सतिभाय॥५०॥

गांधी तिन कहँ दीन निदेसा, खादी-उन्नति करहु हमेसा।
हरिजन-कस्ट निवारहु सारे, करहु जतन मद-टारन वारे॥
बापू कर अनुसासन पाई, कांग्रस-सचिव सीस निज नाई।
कारजक्रम निसचित अपनावा, पै नहिं मन-इच्छित फल पावा॥
सासन-सरनि नहिन अनुकूला, आंगल-राजनीति प्रतिकूला।
कुटिलनीति-बिस-बीरुध फूली, मुसलिम-लीग करमपथ भूली॥
§जीना नाम लोभमदलीना, देसभगति - सुभभाव - बिहीना।
वा सठ कहँ नेता निज मानी, लागी लीग करन मनमानी॥

ब्रिटिस-नीति-परभाव ते, निज करतब सब भूलि।
देस-अहित निज हित लखै, नयन परी जनु धूलि॥५१॥

देस-उधार-हित साधन जेते, लागहिं वाहि गरल-सम तेते।
स्वारथजुरबिकारहत जोऊ, भाव न वाहि मधुररस कोऊ॥

---

§मुहम्मद अली जिन्ना—बम्बई के बैरिस्टर, मुसलिमलीग के अधिनायक, कांग्रेस के कट्टर विरोधी।

भारत-हित-घातक जो कोऊ, साधन वाहि लगत प्रिय सोऊ।
मदिरा हानिमूल जग जानै, छीब सोई अमृत करि मानै॥
कांग्रस भारत-हित चित धारी, कीने जतन मेल-हित भारी।
स्वारथरत जीना अभिमानी, मेलमिलाप बात नहिं मानी॥
पर-उपकार-वृत्ति तब गाँधी, कांग्रस-लीग-मेल मति बाँधी।
निर-अभिमान गयो घर वाके, हित-बिचार धरि मन सुभ वाके॥
*बहु बिधि तिहि समुझायऊ, भयो प्रभाव न मूल।
जदपि सुधा बरसै जलद, लहत ठूँठ नहिं फूल॥५४॥
बहुविधि धरमनीति समुझाई, देस-जाति-हित-बात चलाई।
जुगति-प्रमान दिये तिन नाना, पै सठ एकहू चित्त न आना॥
बीतराग पलटी घर आयो, सठ प्रति नहिं कछु कोप जनायो।
सत्य-प्रतिग्य धरमधुरधारी, होवहिं जे जन पर-उपकारी॥
परहित चित धरि परम सुजाना, गनहिं न निज मान रु अपमाना।
कांग्रस महँ इहि अवसर आई, फूट-अनय निज धाक जमाई॥
बाबु सुभास जुबक-दल-नेता, पच्छ प्रबल निज करि समवेता।
गांधि-विचार-सरनि-तजि मानी, कांग्रस-पति-पद-पावन ठानी॥
†सत्य-अहिंसा-निरत नित, कांग्रस-जन इक स्रेष्ठ।
सियाराम सुभनाम जुत, गांधी कहँ अति प्रेस्ठ॥५५॥
गांधी पच्छ वाहि कर लीना, घोसित सकल देस महँ कीना।
जय सुभास कर परिभव मोरा, असमतअहहिसुनिसचितमोरा॥

---

* फूलै फलै न बेंत, जदपि सुधा बरसै जलद।
मूरख हिये न चेत, जो गुरु मिलैं बिरंचि सम॥
(तुलसी रामायण)

† पट्टाभि सीतारमैया—एक गांधी-भक्त कांग्रेसी नेता।

जन बहुमत सुभास पुनि पावा , कांग्रस-पति-पद पाय सुहावा ।
गांधी-भगत जवाहिर - आदी , भये सुभास-पच्छ-प्रतिबादी ॥
सो तजि कांग्रस-पति-पद गयऊ , अग्रगामिदल - नेता भयऊ ।
भारतीय लघुराजमहीपा , आंगलभानु-दत्त-दुति-दीपा ॥
छीनहिं सकल लोक-अधिकारा , देवहिं कस्ट प्रजा कहँ भारा ।
गांधी तिन कहँ कीन सचेता , कांग्रस अहहि लोकमत नेता ॥

आंगल-जन-आसा तजौ , कांग्रस सन चित लाय ।
असबिधि होय तुमार हित , कहहुँ मीत सतिभाय ॥५६॥

अब नहिं दूर सोउ सुभकाला , आंगलजन जब काढ़ि दिवाला ।
जावहिं लौटि पुनि आपुन देसा , कांग्रस पैठहि राजनिवेसा ॥
पै हित बचन कान नहिं कीने , कस्ट अनेक प्रजा कहँ दीने ।
राजकोट - आदिक रजवाड़े , अत्याचार-विजय-धुज गाड़े ॥
लोक-उक्ति कीनी तिन साँची , खूँटे के बल बछिया नाची ।
करुन पुकार प्रजाजन केरी , करुनानिधि सुनि कै बिनु देरी ॥
सविनय - सासन - भङ्गसुनामा , आंदोलन चाल्यो सुखधामा ।
कसतुरबा गांधीप्रिय - जाया , प्रजा-प्रेम वा हिय उमगाया ॥

निरखि कस्ट निजबच्छ कर, होय सुरभि जिमि दीन ।
प्रजा देखि तिमि कस्ट महँ, वा चित भयो मलीन ॥५७॥

सत्यसमर-नेता पद पाई , सासक सन करि न्याय-लराई ।
कारा महँ डेरा तिन कीना , पतिअनुगमनअमरजस लीना ॥
गांधी जदपि रोगबस छीना , तदपि प्रजाहित-करम-प्रबीना ।
सासक-चित-सोधनहित धीरा , अनसनव्रत-मति कीन गभीरा ॥
सासकजन कछु ध्यान न दीना , भये मन्दमति दमन-प्रवीना ।
गांधी अनसनव्रत तब ठाना , हलचल देस मची सब थाना ॥

बैसराय थिति निरखि गभीरा, सन्धिकरन-हित कृत मति धीरा।
राजकोट निज दूत पठावा, तिन तहँ संधि-सँदेस सुनावा ॥
राजकोट-मँडलेस तब, संधि गांधि सन कीन।
करहुँ लोक-अधिकार जुत, बंदी बंधन - हीन ॥५८॥
कांग्रस कछु प्रभुताबल पाई, समरथ लगि करि लोक भलाई।
न्यायसरनि रहि न्याय-प्रबीना, करि सुराज-हित जुगति नवीना ॥
चलहि गांधि-अनुसासन पाई, निज करतब करि होय भलाई।
दलत्रय बैर-प्रदर्सन कीना, आंगल भूमिप दुरमति जीना ॥
आंगल-मत कांग्रस-प्रभुताई, ब्रिटिस-राज कर करहि बुराई।
देस-नरेस कहहिं मन माहीं, कांग्रस-राज कुसल मम नाहीं ॥
स्वारथरत जीना अभिमानी, भारत-हित हानी निज जानी।
बिघन अनेक पन्थ महँ आये, पै नहिं देसभगत घबराये ॥
*नीतिनिपुन जन निन्दहीं, किधौं करहिं गुन-गान।
धीर मनुज करतब-निरत, गनै न मान-अपमान ॥५९॥
निंदहिं नर बरु नीतिनिधाना, अथवा करहिं रुचिर गुनगाना।
कर्मठ मनुज धरमधुरधारी, करहिं करम निज नय-अनुसारी ॥
अरथ-लाभ अरु हानि-बिबेका, तजि अनुसरहिं जगतहित-टेका।
देस-जाति-हित सरबस दीना, तन-मन-धन सब अरपन कीना ॥
देस-भगत सुभ नाम धरावा, सेवा करि निरमल जस पावा।
प्रेम-प्रभाव सत्रु बस कीने, कस्ट-कलेस काहु नहिं दीने ॥

---

* निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ (भर्तृहरिः)

जनम-अवधि जिन किय उपकारा, दानव-पाप छिमा-असि मारा।
सो किमि परहि लोभ कर पासा, सकल तजी जिन स्वारथ-आसा॥

देसभगत लहि मानपद, मान करहिं नहिं मूल।
विनय-सहित सेवा करैं, सफल विटप-समतूल॥६०॥

मिलै न बिनु आयास, मानव कहँ स्वधीनता।
होय न मुदित-उदास, धीर मनुज जय-अजय महँ॥६१॥

———

सप्तम सोपान

संस्कृति सुभ सुरपादपतूला, पर-उपकार जासु सुभमूला।
सम - दम - सहनसीलता - रूपा, साखा ता कर रुचिर अनूपा॥
बिनय - दया - तप - संजम-दाना, ललित तासु पल्लव-दल जाना।
बिस्व-प्रेम-समता कर भावा, तासु मधुर फल अति मनभावा॥
सत्य-अहिंसा मृदु रस-सारा, तासु जियन कर मुख्य अधारा।
मत्सर-मोह - कोप - मद - माना, अरथलोभ आदिक रिपु नाना॥
कुटिल कीट सोऊ छतिकारी, गुपतरूप दानव - तनुधारी।
तिन हित समर-कठोर-कुठारा, करुनाभाव समूल उपारा॥

लोभ-मूल जग अहहि रन, प्रेमभाव कर नास।
पसुबल-पोसन परम पटु, आतमबल कर हास॥१॥

सभ्य मनुज संस्कृतिबल पाई, उन्नति करत परम सुखदाई।
ऋजुता-जुत करि सकल बिहारा, पावहि सुख-संपति-बल भारा॥
भौतिक सुख-साधन सब पाई, तजत न मानस कर सुघराई।
स्वारथ बैरमूल गनि सोऊ, परछति-करम करत नहिं कोऊ॥
*त्रिबिध अरथ-पथ कहहिं सयाने, दान भोग अरु नास बखाने।
संस्कृत-चरित होय नर जोऊ, पर अधिकार हरत नहिं सोऊ।
समुचित बहुबिधि भोगहि भोगा, लखि अधिकार करत धनजोगा॥
निज कुटुम्ब जानहि जग सारा, हरहि दीन-दुख-भार अपारा॥

---

* दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयस्तु विभवस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥ (हितोपदेश)

मत्सर बैर-बिरोध कर, करि कै अमित बिकास।
करत अहिंसा-सत्य अरु, आतमबल कर नास ॥२॥

स्वारथमूल समर जग जाना, प्रेमभाव-हित कुटिल-कृपाना।
मित्रभाव-समता अरु तोसा, इनकर करहि रिकत सब कोसा ॥
दान-दया-उपकृति-सद्भावा, तिनहि बिनासत जिमि द्रुम दावा।
बैर-बिरोध-नृसंससुभाऊ, ता कर परिपोसक दुखदाऊ ॥
काम-कोप-स्वारथ-अभिमाना, दुरगन दुखद अहहिं जग नाना।
तिनकर समर जनक-सम जाना, तिन कहँ पोसत सूनु-समाना ॥
ललितकला अरु साहित जोऊ, ता हित बिसम-गरल-सम सोऊ।
जन-उपकार-करम सुभ जेते, थगित होयँ रन छिरतहि तेते ॥

नरजीवनसंहार अरु, साहित-कला-बिनास।
नास धरम अरु अरथ कर, समर सुजन-हिय-त्रास ॥३॥

दुरबल मनुज रहहिं जग कैसे, मृग-सावक केहरि-भय जैसे।
चिंता-अनल दहैं दिन-राती, जा कर होय सबल अरि घाती ॥
देस अबल तिमि आस्रयहीना, सिसु अनाथ इव अतिसय दीना।
मसोलिनी इटली कर सासक, भयो नृसंस-बिचार-प्रकासक ॥
हबस देस ऊपर करि धावा, ता कर राज सकल हथियावा।
कीन जपान चीन कर धरसन, करिकै निखिल तासु धन-करसन॥
हिटलर पुनि जरमन-अधिनायक, भयो पौलंड-मरम महँ सायक।
आंगल-फ्रांस संधि तब कीनी, हिटलर कहँ चेतावनि दीनी ॥

खीस्ट अबद उन्नीस-सत, बरस नवाधिक-तीस।
मास सितम्बर त्रय तिथी, रन छिरयो अति खीस ॥४॥

मायाबल लहि हिटलर कूरा, दनुज-रूप धारन करि पूरा।
लघु लघु देस हड़पि बहु लीने, कष्ट अपार प्रजा कहँ दीने ॥

संकट लखि आँगल-अवनीसा, बरन चह्यो भारत-मन-ईसा।
बैसराय लहि तासु निदेसा, गांधी कहँ द्रुत दीन सँदेसा॥
सिमला महँ तब भयऊ मिलापा, प्रीति-सहित तिन कीन सँलापा।
गांधि कह्यो बिनु भारत पूछे, समर-मनोरथ होवहिं छूछे॥
प्रजातन्त्र-हित लरहु जु भाई, भारत ध्रुव तुव होय सहाई।
भारत कहँ द्रुत देय सुराजू, साधहु मीत सकल निज काजू॥

ब्रिटिसराज - हित-साधना, जदि अभिमत इक तोर।
रनहित भारत-प्रेरना, नहिं अभिमत तब मोर॥५॥

बैसराय उत्तर अस दीना, रन-परिनाम-लखन समिचीना।
रन जीते ब्रिटिसाधिप मीता, करहिं सकाम बिचार पुनीता॥
भारत कहँ देवहि अधिकारा, उपनिबेस - सासन - समसारा।
गांधी कहत सुनहु तुम मीता, तुव विचार कांग्रस बिपरीता॥
सो किमि समर साथ तुव देई, देसद्रोह कर अपजस लेई।
गांधि-निदेस सहित अनुरागा, कांग्रस-सचिव मानि पद त्यागा॥
लखि अनुसासन-रति तिन केरी, चकित रह्यो जग तिन प्रति हेरी।
गतस्वारथ सेवाव्रतलीना, होय न सुजन अरथहित दीना॥

मुदित भये नहिं पाय पद, सचिव-रूप अभिराम।
खिन्न भये नहिं छाड़ि पद, सेवकजन निसकाम॥६॥

भारत-हित-प्रेरित पुनि गाँधी, जीना-वरन-हेत मति बाँधी।
कांग्रस - लीग - परस्पर - भेदा, मिटहिं जथा मत्सर-कृत खेदा॥
अस बिधि जतन जाय तिन कीना, पै बिधिकुटिल साथ नहिं दीना।
बाढ़त जिमि जिमि मेल-प्रयासा, तिमितिमि टरत संधि कर आसा॥
भेद - बिचार - बढ़ावनहारा, जीना परम दुराग्रह धारा।
कहत हिन्दू-मुसलिम विय जाती, तिनमधिकछनहिंप्रीतिलखाती॥

जाति-धरम अरु रीति-रिवाजा, अहहिं भिन्न सब समिति-समाजा।
भाखा-भेख-भाव-मत नाना, तिन कर कछु समान नहिं जाना॥
जीना कर अस बात सुनि, संप्रदाय - बिस - सानि।
गांधि लौटि निजगृह गयो, चरचा निसफल जानि॥७॥

खिरस्ट अबद उन्निस-सत-चाली, लीग-प्रमुख जीना बकचाली।
लवपुर कीन लीग-अधिवेसन, करन हेत किञ्चित अनवेसन॥
कुटिल उपाय जासु बल पाई, मुसलिमलहहिंअखिलप्रभुताई।
सिंधु - बंग - सीमान्तप्रदेसा, थान-बलोच पंचनद देसा॥
जहँ जहँ मुसलिम कर अधिकाई, तहँ तहँ इक नव-देस बनाई।
पाकिसतान नाम करि वाका, लखहुँ मनोरथ-फल निज पाका॥
अस बिचारि तिन दीन सुझावा, सो सब लीगजनन अपनावा।
आपुन भेद-नीति फल देखी, भयो ब्रिटिस-मन हरख बिसेखी॥
कांग्रस-मन अति खेद तब, लखि कै लीग कुचाल।
हानी निज आदर्स कर, देस - भाग पैमाल॥८॥

हिटलर सपदि फ्रांस बस कीना, ब्रिटिस भये तब बन्धु-बिहीना।
सकल दलन मिलि निसचय कीना, मिस्रित-सासन चहियत कीना॥
चरचिल कहँ निसचित करि नेता, सत्रु-समन-हित भे समवेता।
जरमन-बल बाढ्यो जय पाई, आंगल-थल तिन घात लगाई॥
बन्दन-पुर बम-बरखा कीनी, पै नहिं सक्यो धरनि कछु छीनी।
देसभगत करि उच्च पुकारा, आंगल-थल प्रियदेस हमारा॥
मातुसमान परम हितकारी, लखि उपकार जायँ बलिहारी।
तन-मन-धन सब अरपन कीने, होयँ उऋन नहिं प्रानहु दीने॥
जरमन सन तब मिलि गये, इटली अरु जापान।
[illegible]॥९॥

कूकुर कहँ घृत हज़म न होई, कथनी अस चरितारथ होई।
ट्यु निस-देस इटली हथियाई, मिसिर-देस पर आँख गड़ाई॥
जरमन करि प्रभुता-मद-हीने, जूरुप-देस बहुल बस कीने।
कस्ट अपार प्रजा कहँ दीने, धनवैभव तिनके सब छीने॥
पुनि जपान निज पग पसरावा, चीन-राज्य छीन्यो करि धावा।
धरसन करि अमरीकन बेड़ा, सोवत सिंह मनहु तिन छेड़ा॥
*जम्बुक-मरन-काल जब आवै, सहित उमग मसजिद प्रति धावै।
रूज़वलट लखि तासु ढिठाई, कोपसहित रनभेरि बजाई॥

चरचिल सन करि सन्धि तब, अंध-उदधि महँ जाय।
प्रजातन्त्र-प्रतिपाल-हित, प्रन कीनो सतिभाय॥१०॥

कछुक काल सत्रुन जय पावा, सुहृद-पच्छ नहिं चरन बढ़ावा।
जूरुप-देस बहुल तिन जीते, आफ्रिक-देस किये सुख-रीते॥
दीपदीपान्तर निज बस कीने, बरमा-स्याम-सिंहपुर-छीने।
समर पेखि भारत नियराया, कतिपय मानव-हिय घबराया॥
नरपतिगन आंगल-सँग कीना, कतिपय-दल सहाय कछु दीना।
कांग्रस जदपि जुद्ध-प्रतिकूला, सांति-सुदेस-हेत अनुकूला॥
सेवक-जन कहँ दीन निदेसा, भारतहित तुम करहु हमेसा।
करहु उपाय सोउ दिन-रैना, जा सों रहहि देस महँ चैना॥

तब जीना कर लीगहू, समर साथ नहिं दीन।
पै सैनिक भरती बिखे, कछु प्रतिबन्ध न कीन॥११॥

उन्निस सत सन द्वै अरु चाली, चरचिलअसइकजुगतिनिकाली।
क्रिप्स नाम इक सचिव सयाना, भारत प्रति तिन तुरत पठाना॥

---

* 'जब गीदड़ की मौत आती है तो मसजिद में जा कर मूतता है'। ([illegible])

वा कहँ अस अनुसासन दीना, जाय मिलहु गांधी अरु जीना।
देउ सुमति जिमि समर सहाई, होवहिं भाव-तटस्थ बिहाई॥
गगनपन्थ भारत महँ आवा, नेतागनन सँदेस पठावा।
जीना-गांधि मिलन-हित आये, तिन कहँ नृपति-निदेस सुनाये॥
समर-अन्त लगि करहु प्रतिच्छा, ब्रिटिस-भूप पूजहि तुव इच्छा।
उपनिवेस-सम देय सुराजू, साधहि भारतहित सब काजू॥

नवसासन निरमान करि, निज-इच्छा-अनुसार।
आंगल-प्रति दुरभावना, सकल करहु परिहार॥१२॥

केवल अलपजाति-अधिकारा, ता महँ दखल न होय तुमारा।
देस-नृपति पुनि भारत जेते, हम सन सन्धि करहिं नव तेते॥
मोहन कहँ सुझाव नहिं भावा, ब्रिटिस-बचन बिसवास न आवा।
रौलट-एक्ट कथा दुखदाई, वा कर स्मृति-मारग द्रुत आई॥
कह्यो सुराज देउ अब भाई, यामहँ भारत-ब्रिटिस भलाई।
होय सुतन्त्र भारत जदि आजू, करै तुरत आंगल-हित-काजू॥
पर-अधीन जब लौं मम देसा, लोकन किमि देवहुँ संदेसा।
भारतजन जूझहु रन माहीं, स्रेय तुमार अवर बिधि नाहीं॥

लीग-अधिपनहिंकीनपुनि, क्रिप्स-विचार प्रमान।
जदपि तासु प्रतिसेध-हित, जुगति दीन तिन आन॥१३॥

कहत नहीं भारत इक देसू, या महँ संसै कर नहिं लेसू।
मुसलिम कहँ सासन-अधिकारा, देवहु करि भारत-बँटवारा॥
दुबिधा महँ तब क्रिप्स बिचारा, निज करतब नहिं सकत निहारा।
होय निरास गयो निज देसू, कह्यो सचिव सन वृत्त भदेसू॥
चरचिल कोप प्रबल तब कीना, फुँकरत उरग जथा मनि-हीना।
बंक भृकुटि लोयन रतनारे, फरकत रदपट दसन भयारे॥

गरल-बमन-सम भीसन बानी, कहत गांधि अस दुरमति ठानी।
नगन-साधु कर लखहुँ ढिठाई, ब्रिटिस-भूप सन करत लराई॥
धेनु मनावहि कुसल किमि, मृगपति सों करि बैर।
ब्रिटिस-सिंह सों उरझि कै, नहिं कांग्रस कर खैर॥१४॥
सासक करि कै सदय-बिहारा, गांधि-सुभाव बिकृत करि डारा।
करिहौं उचित तासु अबसासन, राखिसुरच्छितब्रिटिस-सिंहासन॥
राज-द्रोहि-जन कर करि मरदन, होवहुँ ब्रिटिस-राज-रिपुतरदन।
सो इमि करत रह्यो कुबिचारा, करतब निज गांधी निरधारा॥
आठ अगस्त पुन्य तिथि आई, भारत भाल-तिलक-सम भाई।
आंगल कहँ चेतावनि दीनी, भारत-तजन-प्रेरना कीनी॥
करहु सुतन्त्र हमहिं तुम आजू, देवहु मम अधिकार सुराजू।
लखहु बहुरि किमि भारतबासी, होवहिं समर सत्रु-मदनासी॥
हिंसा-रहित निरोध करि, रिपुबिरोध कर मीत।
दिखरावहिं सब जगत कहँ, सत्य-प्रेम कर रीत॥१५॥
यदि मम बचन नहिन तुम माना, निज-हित-बात करी नहिं काना।
कांग्रस-हित तब करौं निदेसा, सत्यसमर अब करहु प्रबेसा॥
सस्त्र अहिंसा कर बलकारी, साहस-सहित हस्त निज धारी।
देस-जुबक-बारक-नरनारी, लरहिं सत्य-रनखेत-मँझारी॥
अस प्रन करि जावहिं रन धीरा, पाय सुराज हरैं सब पीरा।
नातरु सत्यसमर तजि देहा, जैहैं समुद अमरपति-गेहा॥
केहरिनाद अकनि तिसकेरा, चरचिल वैसराय कहँ प्रेरा।
भीसन दमन-जन्त्र तिन चाला, कांग्रस-कुचलन कीन खयाला॥
कारागत नेता किये, कारजगृह करि बन्द।
धनसंपति सब छीनि कै, दीने कस्ट अमन्द॥१६॥

*आगा खाँ कर भवन बिसाला, कारागृह तिहि कीन कराला।
†जाया-सचिव-सहित तहँ गाँधी, राख्यो बहु प्रतिबंधन बाँधी॥
कारागृह सुनि मोहन डेरा, देसभगत-जन सासक टेरा।
भारत तजहु तुरत तुम भाई, या महँ लखि निज-देस-भलाई॥
नेता पूज्य हमारो गाँधी, जायासहित बंदिगृह बाँधी।
कीन अहित भारत कर भारा, धरमनीति-प्रतिकूल-बिहारा॥
तजहु सकल नेतागन प्यारे, अहहिं सुदेस नयन कर तारे।
नतरु बिसम तुव पापनिदानू, दहहिसकुलजिमि बिटप कृसानू॥

मानव जे अभिमानजुत, हित-सिख करहिं न कान।
अवरन कहँ बहु हानिकर, करहिं स्रेय निज हान॥१७॥

चरचिल हितसिख एक न मानी, निज बल फूलि रह्यो अभिमानी।
पसुबल कर अनिजंत्रित क्रीड़ा, करन चहत गरबित गत-ब्रीड़ा॥
बैसराय कहँ आयसु दीनी, कांग्रस-बल सब लेवहु छीनी।
उरग-समान अहहि भयकारी, दमनदंड सन देवहु मारी॥
भारतजनभरती अधिकाई, प्रबल सुसासित सैन सजाई।
ब्रिटिसराज कर नींव दृढ़ाई, होवहु नृप कर समर-सहाई॥
करहु उपाय मीत कछु रूरे, मम अभिलास होयँ जस पूरे।
पाय निदेस दमन दृढ़ कीना, कीने काज अमित नयहीना॥

सासक-जन कर दमन जिमि, दिवस दिवस अधिकाय।
देसभगत-साहस तथा, छिन छिन बाढ़त जाय॥१८॥

लकुट-प्रहार गोलिका-धारा, बरसहिं संतत जिमि जलधारा।
देसभगत-जन नहिं कछु डरहीं, अचलसिखरजिमिपयकनपरहीं॥

---

* खोजा नामक मुसलमानों का धार्मिक नेता।
† महादेव देसाई—महात्माजी के निजू मन्त्री।

धन-संपति - परिजन - परिवारा, जनमभूमि-हित तिन सब वारा।
सत्य-अहिंसा कर व्रतधारी, सहत समुद संकट अतिभारी॥
तप कठोर लखि कै तिन केरा, कियो बिरोध जनता-हिय डेरा।
सासक - बरग - अमंगल सोचैं, करम-सहाय करन संकोचैं॥
*जयप्रकास जुबक-दल-नेता, भानु-समान प्रभा-समवेता।
ब्रिटिस-अनय-नासन मति ठानी, जुबक तासु अनुसासन मानी॥
देसद्रोहि जन मारि कै, लूटैं सस्त्र - सँभार।
रेलतार कहँ काटि कै, जारैं पुलिस - अगार॥१९॥
†अरुना-अलि साहसि-हिय मोहै, भारत-भाल-अरुन इव सोहै।
साहस-बल-कौसलरन राच्यो, सासकहिय महँ खरबर माच्यो।
बाबू सुभास अग्रदल-नेता, कुटिलनीति - भेदन - ततवेता।
‡सठ सन करहु सदा सठताई, अस तिन नीति प्रकट बतराई॥
ब्रिटिसगुप्तचरनैन मँझारी, नीति-बिसारद बहु रज डारी।
भेस बदरि जरमन-प्रति जावा, देसभगत तहँ सैन्य सजावा।
पतन बिलोकि सिंहपुर केरा, मलयदेस कीनो तिन डेरा।
तिन सुराजहित सेना साजी, ब्रिटिस-बिरोध-दुन्दुभी बाजी॥
बरमा विजयि जपान सन, सन्धि कीन जय-आस।
मातृभूमि - स्वातन्त्र्यहित, जूझे बीर सुभास॥२०॥
आंगल-भागभानु पुनि चमका, आसा-नवल-तेज लहि दमका।
हिटलर बैर रूस सन कीना, गुप्त तेज वा कर नहिं चीना॥

---

* जयप्रकाश नारायण—प्रसिद्ध समाजवादी नेता तथा उनकी स्त्री प्रभावती देवी।

† अरुणा—एक उग्रदल की नेता, श्री आसफअली नामक कांग्रेस नेता की पत्नी।

‡ 'शठे शाठ्यं समाचरेत्।' (चाणक्यनीति)

§स्टालिनग्राड ओर बढ़ि धावा, रूसिन-कर तब मुख कर खावा।
आफ्रिक महँ इटली करि साथा, मित्र-चमू सन लायउ माथा॥
जरमन लरहिं महारथि-तूला, पै नहिं दैव तिनहिं अनुकूला।
सो तहँ पाय पराजय लौटा, विफल प्रयास दैव जब खोटा॥
मित्रचमू करि सबल बिरोधा, बरमा महँ जापान निरोधा।
हिन्द-सुराज-चमू रन हारा, आंगल ताहि कियो गत-कारा॥

भाग उदै जब होत है, सुधरैं बिगरे काम।
काज बने पुनि बिगरिहैं, भये बिधाता बाम॥२१॥

भारत-भाग भयो बिपरीता, दुख-संकुल सुख-संपति-रीता।
कसतुरबा पति-प्रेम-पुनीता, सीतासम अति धैर्य-परीता॥
कारा महँ पतिभगति-परायन, जीरनकाय भई सुरगायन।
बीतराग गाँधी गतकामा, धीरज-सुमति-आदि-गुन-धामा॥
ब्रह्मचरज उत्तम ब्रतधारी, सेवारत मानव-हितकारी।
छनिक सोक अनुभव तिन कीना, रवि जनु मेघ-पटल महँ लीना॥
देह-क्रिया बिधिवत करवाई, सुन्दर सरल समाध बनाई।
मौन-सहित तहँ नितप्रति जावैं, सरधा सहित प्रसून चढ़ावैं॥

कसतुरबा जानैं सबै, भारत-जनगन-अम्ब।
तासु निधन कर बृत्त जनु, परयो सीस पै बम्ब॥२२॥

*संकट कबहुँ एक नहिं आवै, इक पाछे दूजो झट धावै।
कसतुरिमरन-सोक दुखदाई, भारत-जन नहिं सकत भुलाई॥

---

§ रूस के तत्कालीन तानाशाह जोजेफ स्टालिन के नाम पर बसा हुआ रूस के दक्षिण-पूर्व में स्थित एक प्रसिद्ध नगर।

* Misfortunes never come single, but in battalions.

—शेक्सपियर

तौ लौं इक अकाल भयकारी, बङ्ग-मही द्रुत आय उजारी।
प्रबल प्रभंजन बिटप उपारी, करत मसान-तुल्य फुलवारी॥
बन-द्रुमदल जिमि दहत दवारी, छार करहि छिन माँहि पजारी।
तिमि अकाल-दारुनदुख-दावा, बंगभूमि-खलिहान जरावा॥
पन्द्रह लाख मनुज कर भेंटा, गहि जनु काल भरयो निज पेटा।
भारत-जन पावहिं दुख नाना, जूका सरत न सासक काना॥

सिसु कर क्लेस न जानई, जिमि बिमात हियहीन।
जनता-दुख किमि जानहीं, सासक स्वारथ-लीन॥२३॥

राजगुपाल नीति-ततवेता, देसभगति-सदभाव-समेता।
कांग्रेस-लीग-मेल बिनु नाहीं, भारत-जन सुतन्त्रता पाहीं॥
अस बिचारि कारा महँ जाई, गांधी कर अनुसासन पाई।
जीना सन कीनी तिन भेंटा, चाहत बैर-बिरोध समेटा॥
बहु प्रयास निसफल तिन कीना, भसम-घृताहुति-सम फलहीना।
उन्निस सत चतुराधिक चाली, सासकजन कछु सुमति सँभाली॥
गांधी कहँ कारा सन काढ़ा, भारतजनमन आनँद बाढ़ा।
बैसराय-प्रति पाती प्रेसी, अहहुँ मीत तुव परमहितैसी॥

घोसित करहु सुराज द्रुत, सासन-सरनि सुधारि।
रनहित करौं सहायता, आन्दोलन निरवारि॥२४॥

हितकर बात नहीं तिन मानी, चहत चलावन निज मनमानी।
पुनि गांधी जीना पहँ जाई, संधि-करन कर बात चलाई॥
वा कहँ तिन बहु बिधि समुझावा, देस-जाति-हित-मरम बतावा।
पै नहिं ध्यान तनिक तिन दीना, स्वारथलीन हठी बहु जीना॥
बैसराय नृप-आयसु पाई, सिमला महँ इक समिति बुलाई।
सरब दलन कर नेता आये, आरज-मुसलिम-सिक्ख सुहाये॥

कांग्रसपति स्री अबुलकलामा, भूलाभाई संग गुनधामा।
जीना संग लियाकतखाना, मुसलिम-दल-नेता-सम जाना॥
सिक्खन कर नेता प्रमुख, तारासिंह सुनाम।
हरिजन-नेता भीम पुनि, पहुँचे सिमलाधाम॥२५॥
गांधी जदपि सभासद नाहीं, तिसु बिनु समिति सोह कछु नाहीं।
†नखत-समूह रहे नभ छाई, बिनु मयंक नहिं रैन सुहाई॥
वेवल-लाट समिति-अभिनेता, मिलन-जग्य कर कुसल प्रनेता।
गांधी कहँ आदर तिन दीना, कांग्रस-अधिनायक-सम चीना॥
सहज-गँभीर बचन तिन भाखा, कांग्रस निज अधीस चुनि राखा।
अबुलकलाम अजाद सुनामा, नीति-निपुन विद्या-गुन-धामा।
ताहि विचारि मान कर जोगू, होहु मुदित लहि तासु सँजोगू।
गनहु मोहि कांग्रस कर मीता, राखहुँ तासु लाभ नित चीता॥
भारत-जन-गन कर अहै, कांग्रस-प्रतिनिधि-तूल।
अहै अज़ादता कर अधिप, अस तुम करहु कबूल॥२६॥
जीना कहत निरर्थक बानी, गांधी कहहु मृसा तुम जानी।
कांग्रस प्रतिनिधि हिंदुन केरी, लीग जथा मुसलिम कर हेरी॥
अबुलकलाम अरथ कर दासा, कांग्रस-रत निज-स्वारथ-आसा।
कठपुतरि इव तुव कर सोऊ, निज बिचार नहिं राखत कोऊ॥
जातिद्रोहि मुसलिम-हित-घातक, मानबिहीन गनत नहिं पातक।
बंधु-बिरोध-जनित अति भारी, सो किमि बात करन अधिकारी॥
सत्य अहहु तुम कांग्रस-नायक, हिंदु-जाति कर कुसल-बिधायक।
हौं तिमि मुसलिम-जन कर नेता, आवहु होयँ संधि-अभिनेता॥

---

† 'नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः।'
(रघुवंश—कालिदास)

राजसभा महँ देवहू, मुसलिम कहँ समभाग।
कांग्रस-प्रतिनिधि-भाव कर, दावा देवहु त्याग ॥२७॥
केवल शरत तीन तब दीनीं, निज थिति बिसद भूरि तिन कीनी।
बैसराय - सेनापति छाड़ी, राजपुरुस कौंसिल सों काढ़ी॥
दल प्रतिनिधि निरबाचित जोऊ, करहुँ सदस्य कौंसिल कर सोऊ।
हिन्दू - मुसलिम-समता मानी, अलपदलन अधिकार प्रमानी॥
भारत कर सासन सुभ चालौं, आंगल-भारत-हित प्रतिपालौं।
जीना-गांधि सुनहु मत मेरा, अहहि कुसल जा महँ सब केरा॥
अंसरूप निज - सासन पाई, होवहु अब तुम समर-सहाई।
समर-अंत नृप परम उदारा, देय तुमहि सासन कर भारा।
पूरब प्रति गांधी चलै, जीना पच्छिम ओर।
कहहु भला कैसे रहैं, रबि-रजनी इक ठौर ॥२८॥
गांधी कह भारत इक देसा, मम मत रहहि अखंड हमेसा।
द्रविड पंचनद गुर्जर बंगा, प्रांत सकल भारत कर अंगा॥
आरज - मुसलिम - सिक्ख-ईसाई, हरिजन-पारसीक सब भाई।
भारत-मातु केर सुत सारे, अहहिं परस्पर सोदर प्यारे॥
भेदभाव आंगल करि दीना, तासों हित-अनहित नहिं चीना।
लरहिं परस्पर स्वारथ लागी, देस-जाति-हित-कारज त्यागी॥
सो जदि ब्रिटिस जायँ तजि भारत, होयँ सुखी भारत-जन आरत।
जीना कहत करि भारत-खंडा, देहु हमहिं इक देस अखंडा॥
निज संस्कृति अरु सभ्यता, निज भासा - बिवहार।
निज सासन करिहैं सुखी, मुसलिममत - अनुसार ॥२९॥
तारासिंह कहत सुनु भाई, मुसलिम-हित कर देहु दुहाई।
कहहु न मानहुँ हिंदु-प्रभाऊ, राखहु निज-सासन कर चाऊ॥

तिमि सिख-बंधु पंचनद माहीं, मुसलिम-सासन मानहिं नाहीं।
भारत कर जदि होवहिं खंडा, देहु सिखन इक देस अखंडा॥
जहँ निजगुरु-सासन-अनुसारा, सासन करहिं परम सुखसारा।
भीमराव हरिजन कर नेता, भयो भेदप्रस्ताव - प्रनेता॥
अस्ट कोटि भारत महँ हरिजन, सहहिं सतत हिंदुन कर तरजन।
देवहु तिनहिं देस इक न्यारा, हरिजन-थल नामक अति प्यारा॥

सुख सन जहँ हरिजन बसैं, लहि सुराज सुखसार।
दिवस-रैन उन्नति करैं, सबरन - भीति बिसार॥३०॥

तब लखि तिन कर अनय अपारा, गाँधी अबस मौन द्रुत धारा।
बायस-करकसरव जहँ होई, पिक तहँ रहत मधुर-सुर गोई॥
स्वारथलीन अहहिं जहँ नेता, स्वारथ - कपट - रंग - अभिनेता।
देस-जाति-हित सकल बिसारी, स्वारथ-लोभ चित्त महँ धारी॥
अस्थि-सकल सूखे लहि नाना, लरहिं परस्पर जिमि लघु-स्वाना।
कारज सफल होय किमि तहँवा, धरमनीति अपमानित जहँवा॥
बारिधि महँ जिमि तरल-तरंगा, करहिं सुदृढ़ नौका-मदभंगा।
तिमि स्वारथ-सरिता भयकारी, आसा - नावडुबावनहारी॥

जिमि पासानप्रहार ते, मुकुरभंग ह्वै जाय।
तिमि स्वारथ-परभाव ते, संधि-आस बिनसाय॥३१॥

मत्तनाग जिमि तोरि अलाना, करत उपद्रव बहुविधि नाना।
जौ लौं लहत न अंकुसवारा, अथवा सिंह-चपेट-प्रहारा॥
हिटलर तिमि करि अति उतपाता, भयो सकलजूरुपदुखदाता।
अंकुसवार रूस तब दीना, मित्रन मिलि निरबल पुनि कीना॥
तासु सहाय बिलग करि लीने, वार बिसम इटली पै कीने।
साहस छाँड़ि परयो पग सोई, कादरहिय साहस नहिं होई॥

मित्रन मिलि बोल्यो पुनि धावा, निज पग तुरत जपान हटावा।
हिटलर कहँ तब पाय अकेला, मित्रन कीन परास्त सहेला॥
बम-बरसा भीसन करी, बरलिनपुर पै जाय।
हिटलर-सत्ता छिनक महँ, दीनी सकल मिटाय॥३२॥
निजप्रभावनास लखि सोऊ, जीवन महँ सुख लखत न कोऊ।
संभावितजन कर अपमाना, गनहिं सुजन जमदंड-समाना॥
रिपुसन करि तब समर कराला, हिटलर गयो काल कर गाला।
*ता कर पतन पेखि मतिमाना, भाखहिं पतन-मूल अभिमाना॥
पोत-बिमान-सैन्यदल छीने, प्रमुख चमूपति बंदी कीने।
चीन-रूस-अमरीका-मेला, तासन भिरत जपान अकेला॥
अजय बिलोकि देसप्रिय बीरा, उपजी मित्रचमूहिय पीरा।
बम परमानु भयंकर डारा, हिरोसिमा सुभ नगर उजारा॥
बिबस भयो जापान तब, लखि भीसन संहार।
नरनारी-धन-बिभव कर, दारुन दनुजबिहार॥३३॥
अस्त्रसस्त्र तजि समर-सँभारा, तब तिन चित्त संधि महँ धारा।
मित्रन देस हस्तगत कीना, पोत-बिमान-सैन्यदल छीना॥
पै नहिं बिजय पाय अभिमाना, मित्रदलन मानस महँ आना।
प्रभु कर कीन अमित धनवादा, घर घर होवहिं मंगलनादा॥
सट बत्सर लगि रन भयकारी, भयो मनुज-धन-धान्य-सँहारी।
अब पुनि सांति भई सुखकारी, पावस इव निदाघस्रमहारी॥
सैनिक लौटि गृहन प्रति आये, सिसु उत्सुक भेंटन हित धाये।
पतनि तासु पति-प्रेम-पुनीता, जोहहिं पथ प्रियप्रेमपरीता॥

---

*Pride goeth before a fall—एक अंग्रेजी कहावत। 'नरक मूल अभिमान'। (तुलसी)

अहहिं मुदित नरनारि सब, लखि आहव कर अन्त।
घरम-अन्त जिमि जलद लखि, हरख मयूर मनन्त ॥३४॥
उनिस सत पंचाधिकचाली, हिटलर कपट-कुसल बकचाली।
समर लरत अंतक-मुख जावा, सपदि जपान तासु पथ धावा॥
समरविजय लहि आंगल बीरा, भये अचिन्त बिसरि सब पीरा।
निरवाचन तब तिन निज कीना, सासन-बिधि-सुधार-चित दीना॥
गतप्रभाव चरचिल तब भयऊ, एटली प्रमुख-सचिव पद गहऊ।
स्रमदल कर प्रभुता अधिकाई, नूतन सासन-सरनि चलाई।
तजि समस्त अनुदार अनीती, गही समाजवाद सुभरीती।
जनता-हित मानस महँ राखी, भयो धनिकजन-हित-घृतमाखी।
बिस्तृत आंगल राज्य कर, पोसक चरचिल ढीठ।
एटली पुनि होवन चहत, जन-अधीन कर ईठ ॥३५॥
असि-प्रभाव भारत हम जीता, असि-प्रभाव राखहिं तिहि मीता।
चरचिल अस करि उच्चपुकारा, भारत-हिय बिराग करि डारा॥
पसुबल-मान करत अति सोई, भारत-द्वेस न राखत गोई।
तजहु हिन्द अस अकनि पुकारा, दीने चरचिल कस्ट अपारा॥
जिमि जिमि बढ़त अनय-सरिधारा, तिमि तिमि साहस अमित अपारा।
लहि लहि जुबक पार द्रुत जाईं, साहस लखि भय सकल बिलाईं।
एटली तब अस कीन बिचारा, चहियत बैरभाव अब टारा।
प्रेमसमेत शत्रु बस कीना, निसचय होय द्वेस-बिस-हीना॥
अस बिचारि प्रेसन किये, सचिव प्रमुख तिन तीन।
*क्रिप्स अलैग्जेण्डर तथा, पैथिक नीति - प्रवीन ॥३६॥

---

* सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स, होरेस एलेग्जैण्डर और लार्ड पैथिक लारेन्स—तीन प्रसिद्ध सचिव।

तिन बिचार अस बिधि तब कीना, भारत-हित चहियत इमि कीना।
देसभगतजन - बंधनमोखू, छमन-सुराजचमू कर दोखू॥
जनता कर प्रतिनिधि जन जोऊ, पावहिं पुनि सासन-पद सोऊ।
बैसरायकौंसल कर ठाईं, देसी-सासन छनिक बनाईं॥
उपनिबेस - सासन - अनुकूला, होय ब्रिटिस-भारत-सुखमूला।
जनता-प्रतिनिधिसभा बुलाई, अखिल सुराज-गुत्थि सुलझाई॥
सासन-बिधि नूतन निरमाई, सब दल होयँ सहोदर भाई।
परिहरि सकल ब्रिटिस प्रति द्वेसा, सखा-सदृस हित करहिं हमेसा॥

राजसचिव तीनहु जबै, देहलि पहुँचे आय।
प्रमुखदलन नेता तबै, लीने तुरत बुलाय॥३७॥

अबुलकलाम कांग्रस कर नेता, जीना मुसलिम-लीग-प्रनेता।
नृपमंडल नायक भूपाला, तारासिंह पंथरखवाला॥
भीमराव हरिजन-अधिनायक, स्रमदल कर नेता इक लायक।
महिला-जन-प्रतिनिधि तहँ एका, आयो निज मत पै धरि टेका॥
कानन महँ मृग बसहिं अनेका, होवत हरि बनभूखन एका।
तिमि दलनायक तहँ बहु आये, पै बिनु गांधि न समिति सुहाये।
सादर सचिवन वाहि बुलावा, मानि निमंत्रन देहलि आवा॥
राजमहल दलनायक आना, बसहिं सुखी भोगत रस नाना।

त्याग-मूर्ति गांधी तहाँ, बिगतलोभ - मद - मान।
हरिजन-बस्ती कहँ दियो, आस्रम-सम सुभ मान॥३८॥

सचिवन तब इक स्कीम बनाई, हिन्द - संघ - थापन सुखदाई।
ब्रिटिसप्रांत अरु देस-नरेसा, जाके होवहिं अंग हमेसा॥
डाक-तार अरु रेल-बिभागा, नयबिदेस रच्छा सन रागा।
आपुन व्ययहित धन-संपादन, अस अधिकार किये प्रतिपादन॥

समिति सहाय तासु विय बरनी , धारा-सभा अरु कारज-करनी ।
संप्रदायमतभेद जो होई , मुख्यदलनप्रतिनिधिमिलिसोई ॥
करहिं परस्पर निज निपटारा , दीने ताहि सकल अधिकारा ।
सासन कर जे अवर बिभागा , ता कहँ संघ प्रांत-हित त्यागा ॥

अहहिं प्रांत स्वाधीन सब , निज-निज मंडल माहिं ।
सकल-देस-हित लाभ महँ , संघ-बिबस सो आहिं ॥३९॥

धारासभा प्रांत कर जोई , निरबाचित करि प्रतिनिधि सोई ।
प्रेसहिं संघ-समिति महँ जोई , करहिं बिधान सासन कर सोई ॥
निरबाचन-गन-त्रितय बनावा , मुबबो नाम प्रथम मनभावा ।
पुप्स नाम दूजा गन जानौ , तीजा बंग-असामहि मानौ ॥
जदपि स्कीम महँ दोस अनेका , गांधी तदपि लख्यो गुन एका ।
भारत रहहि इमि देस अखंडा , फूटहि अवसि फूट कर भंडा ॥
सो तिन कांग्रस कहँ मत दीना , स्कीम-समर्थन कर समिचीना ।
भारत - खंडन - सुपन बिलीना , लखि हतास भयो अति जीना ॥

भारतथितआंगल पुनः , हरिजन - सिक्ख - समेत ।
तजि दीनी सुभ जोजना , जानि अफल निज-हेत ॥४०॥

राजसचिव लखि बिफल प्रयासा , गये सुदेस सकल तजि आसा ।
छनिक-देसि - सासन - निरमाना , वेवल पै निज करतब जाना ॥
*कांग्रस - मुख नेहरू अरु जीना , तिन कहँ तुरत निमंत्रन दीना ।
आवहु मम सहाय-हित मीता , सासन होय जु प्रेम-परीता ॥
कांग्रस-लीग अवर दलमेला , देस-सुसासन करहि सहेला ।
नेहरु देसलाभ चित धारी , वेवल कर आसा सतकारी ॥

---

* कांग्रेस के प्रधान

लीग-अधिप जीना अभिमानी, वेवल कर इक बात न मानी।
नेहरू तब सासन सुभ साजा, भयो सचिव-मंडल-सिरताजा॥
ख्रीस्ट अब्द उन्नीस सत, सट - उत्तर चालीस।
मास आठ सोडस तिथि, जीन्ना लीग - अधीस॥४१॥
वेवल - नीति - बिरोध - प्रदर्सक, दुस्ट-मनुज-मानस कर हर्सक।
तब प्रतिवाद-दिवस-अनुसासन, दीनो बिसम देस-सुखनासन॥
बिसमय तब करि लीग प्रचारा, कीन उपद्रव भारत भारा।
ठाँव-ठाँव भीसन उतपाता, भये दुखद जिमि उलका-पाता॥
कलिकाता - नगरी सुभ सोहै, सुखमासन सुर-किन्नर मोहै।
धवल-धाम-सोभा अति न्यारी, सुख-संपति नहिं जात सँभारी॥
तहँ तब प्रकट भयो बिकराला, प्रलयकालदुर्दम जनु काला।
भीसन अनल - उपद्रवरूपा, दारुन मनहु दनुज-कुल-भूपा॥
काल-गाल सम बदन महँ, डारि लिये नरनार।
कञ्चनपुर सम नगर सुभ, कियो छिनक महँ छार॥४२॥
नर-आमिस-भूखे जिमि दानव, मारहिं तिमि मानव कहँ मानव।
रजनिकाल बिहरैं जिमि चोरा, निरभय तिमि पिसितासन घोरा॥
लूट-खसूट करहिं चहुँ ओरा, सुनत नहीं कछु बिनय-निहोरा।
बनिता-वृद्ध-तरुन-सिसु जोऊ, होवत दनुज-कोप-बस सोऊ॥
बहहिं चतुर्दिक सोनित-धारा, पावस जिमि सरिनीर अपारा।
रुण्डरु मुंड बहहिं तहँ कैसे, झाड़झँखाड़ सरित-जल जैसे॥
खलजन बाँधि नास-हित फेंटा, भवन अनेक किये दव-भेंटा।
सुखमाकर पुर सुरगसमाना, कीन भयावह नरकसमाना॥
दान-दया - करुना - छिमा, मित्रभाव - उपकार।
बिनसे उत्तम भाव सब, लखि पातक-अधिकार॥४३॥

विसम बैर-ज्वाला तब फैली, मानहु भीसन ब्याधि बिसैली।
नवाखली चटगाँव-रु हौरा, बिसम बैर-दानव करि दौरा॥
करिकै द्वेसभावबिसतारा, कीने मुसलिम कुपित अपारा।
प्रीति पुरातन सकल बिहाई, हनहिं हिंदु जिमि धेनु कसाई॥
लूटहिं बिभव भवन दव देइं, बल-प्रयोग मुसलिम करि लेइं।
महिला बहु अपहृत करि लीनीं, भूसुरसुरभिदेव-छति कीनी॥
संसित लखि निज जीवन-सारा, धरम-बिभव-धरनी-परिवारा।
आरज जनमभूमि निज त्यागी, भये प्रवास-गमनअनुरागी॥

जीवन-धन-धरनी-कुसल, धरम - आत्मसम्मान।
निजकुटुम्बपोसन नहीं, किमि तहँ बसै सुजान॥४४॥

बंग-हिंदु बिनु घर-परिवारा, आस्रयहित बिहार पगु धारा।
सहधरमिन कर गति दुखदाई, लखि बिहार-आरज दुख पाई॥
कीनो निज-हिय कोप अपारा, करिहैं बंधु-कस्ट-प्रतिकारा।
अस बिचारि मुसलिम-बध कीना, करुनाभाव सकल तजि दीना॥
बंग अनय मुसलिम जस कीने, सूद-समेत बिहारिन दीने।
दच्छिनप्रांत पंचनददेसा, संप्रदाय-बिस कीन प्रवेसा॥
आरज-जवन परस्पर भिरहीं, निरदय-भाव-गरत महँ गिरहीं।
तजि कै सकल प्रीति-बिबहारा, हिंस्र-जन्तु इव करहिं प्रहारा॥

जदपि मुम्बई पंचनद, भयो उपद्रव सांत।
तदपि बिहार-रु बंग महँ, मानव रहे असांत॥४५॥

तब गांधी करुना-अवतारा, अस निज करतब रुचिर बिचारा।
जाय नवाखलि डारउँ डेरा, मो कहँ प्रभुवर अब अस प्रेरा॥
बरसि प्रेम-बारिद सुखदाई, बैर-अनल सब देउँ बुझाई।
ग्राम रुचिर सुन्दर स्रीरामा, रचि तहँ आस्रम इक अभिरामा॥

मुसलिम-मधि तिन कीन ठिकाना, दीन-रच्छन करतब निज माना।
प्रेमसहित मुसलिम समझायो, सोदर-सम जानहु हमसायो॥
भारत कर तुम दोउ सपूता, झगरि परस्पर होउ कपूता।
प्रेम पुरातन उभय बिसारी, करहु देस कर अनहित भारी॥

अहहि एक जगदीस प्रभू, तिस कर नाम अनेक।
राम कहो अल्ला कहो, भजहु वाहि तजि टेक॥४६॥

मानव सकल तासु संताना, भाखहिं बेद-पुरान-कुराना।
*मानजोग मुहमद मतिमाना, निरअपराध-हनन अघ माना।
गनहु हिंदु लघु-भ्रात-समाना, कबहुँ उचित नहिं बैर कमाना।
सरनागत कहँ देय कलेसा, सहज नरक नर पाय प्रवेसा॥
हिंदुन कहँ अस दीन निदेसा, रामभगत तुम रहहु हमेसा।
रामसरन नहिं कस्ट-कलेसा, रामसरन सुख मिलत हमेसा॥
रामभगत निरभय भयहारी, रामभगत दुखियन उपकारी।
रामभगत मानव-कुल-बंधू, राखत सब सन प्रेम-संबंधू॥

रामभगत कहलाय कै, डरत मीचु सों जोय।
अमर-अगद कहँ पाय खल, डरत बीछु सों सोय॥४७॥

आंगल अब निसचै करि लीना, भारत-तजन अहै समिचीना।
सो तुम प्रेम-सहित रहि साथा, उन्नत करहु देस कर माथा॥
आंगल नतरु कुटिल-नय-पंडित, लखि तुव ऐक्य-भावना खंडित।
भेदनीति कहँ पुनि अपनाई, निज-सासन कर नींव दृढ़ाई॥
भारत-तजन-भाव तजि दैहैं, निज-स्वारथ-साधन करि लैहैं।
जाय बिहार कीन उपदेसा, मुसलिम सन करु प्रीत हमेसा॥

---

* हजरत मुहम्मद—इसलाम धर्म के प्रवर्तक।

आरज-धरम-मरम सुभ एहा, सरनागत सन परम सनेहा।
सरनागतसम तुव हमसाये, होय अमित अघ तिनहिं सताये ॥
सरनागतपालन करौ, जदपि प्रानभय होय।
सरनागतहित जूझहीं, सुरग जायँ नर सोय ॥४८॥
परिव्राजक जिमि घर-घर जावै, धरम-निदेस सबन पहुँचावै।
करत छेम तिन कर सुखदाई, गृहमेधिन करतब समुझाई ॥
ग्राम-ग्राम गांधी तिमि जावै, सत्य - अहिंसापाठ पढ़ावै।
कुसल-छेम चाहत सब केरी, प्रेम-भाव-करतब महँ प्रेरी ॥
घरम-जनित जिमि दारुन दावा, पावस-पय लहि सकल नसावा।
तिमि गांधी-उपदेस-पियूखा, सांत करत हिय हित-जल-रूखा ॥
प्रेम-प्रसार गांधि अस कीना, बैर - बिरोधभाव हरि लीना।
देसभगति कर पाठ पढ़ाई, नूतन प्रेम-सरनि सिखलाई ॥
अखिल-एसिया-रास्ट्रगन, जुरे देहली आय।
नेहरु निरबाचित किये, सभा-अधिप सतिभाय ॥४९॥
देस - बिदेसन नेता आये, प्रेमभाव उर महँ सरसाये।
सोचन-हित सुचि सांति-उपावा, समर-जनित जिमि दुक्ख दुरावा।
गांधी पाय निमंत्रन आवा, उड़गन महँ जिमि चंद सुहावा।
सत्य-अहिंसा कर उपदेसा, दीनो नासन सकल-कलेसा ॥
बैर सों बैर-समन नहिं होवै, घृत सों अनल सांत किमि होवै।
देस सकल करि प्रेम परस्पर, होवहु बिस्व-छेमहित तत्पर ॥
समरसाप करि देवहु दूरा, सांति-अमिय बरसहु भरपूरा।
प्रेम - दया - सदभाव हमेसा, भारत कर पावन संदेसा ॥
आपुन छेम-रु जगत को, जो चाहत तुम मीत।
बैरभाव सब त्यागि कै, करहु परस्पर प्रीत ॥५०॥

भारत अहहि बुद्ध कर देसा, बिसरत नहिं प्रियदरसि-सँदेसा।
धरम-बिजय करि प्रेम-अधारा, मनुज-जाति पावत सुख-सारा॥
बल सन जोउ सत्रु बस कीना, बल लहि प्रतिसोधन चह कीना।
प्रेम-प्रभाव-बिबस रिपु जोऊ, बैर-बिचार सकल तजि सोऊ॥
पर-उपकार-जतन कर इच्छुक, होवत अधिक प्रेम कर भिच्छुक।
राजनीति महँ प्रेम-प्रभाऊ, होय अपार न संसय काऊ॥
भारत-रन-सुतन्त्रता माहीं, आयुध सत्य-प्रेम सम नाहीं।
लहि सुराज सुखसंपति साथा, उन्नत करिहैं भारत-माथा॥

सत्य-अहिंसा-समर महँ, गांधि-बिजय ध्रुव पेखि।
सरबदेसनेता तहाँ, स्लाघा करहिं बिसेखि॥५१॥

मनुज महान मान-अपमाना, जस-अपजस गनि एक समाना।
करहिं करम निज स्वारथ-हीना, पर-उपकार-करम-परवीना॥
समिति-अन्त देहलि तजि गाँधी, बंग-गमन-हित परिकर बाँधी।
जाय नवाखलि कीनो डेरा, बंगालिन भायप-प्रति प्रेरा॥
छनिक-देसि-सासन तिहि काला, नहरु-लियाकत संग सुचाला।
बाधा बिबिध जदपि पथ माहीं, धीर-मनुज घबरावत नाहीं॥
कांग्रस चलत देस-हित-गैला, लीग करत परचार बिसैला।
तिन कर भयो बिलच्छन मेला, मिलहिं जथा लहसुन अरु ऐला॥

अवगुन महँ गुन प्रगटई, पाय दैव अनुकूल।
हरयो लियाकत लवनकर, गांधी मनअनुकूल॥५२॥

दुरजन जदपि धरत बहुदोसा, साजन तदपि करत नहिं रोसा।
जीना कीन बिरोध-प्रचारा, गांधी तदपि प्रेम चित धारा॥
प्रेम-प्रभाव लखहु सुभ मीता, जीना गांधि प्रेम सन जीता।
उभय परस्पर मिलि मत कीना, प्रेम-सँदेस देस कहँ दीना॥

रहहु परस्पर सिगरे भाई, तजि सब बैर-बिरोध-लराई।
मन-बच-करम रहहु तुम ऐसे, रहहिं परस्पर सोदर जैसे॥
गहहु प्रेम सन निज अधिकारा, त्यागहु बैर - बिरोधबिचारा।
पै मतभेद प्रबल इक आई, नेता बिय मधि कीन जुदाई॥

भारत देस अखंड है, कहै गांधि मतिमान।
जीना चाहत भाग द्वै, भारत - पाकिसतान॥५३॥

गांधीमत भारत इक देसा, अहहि एक अरु रहहि हमेसा।
तासु बिभाजन अनुचित माना, निज-जननी-बध-जतन समाना॥
आरज-मुसलिम मम मत माहीं, भारतमातु नयन-जुग आहीं।
जीना करत प्रबल हठ एका, पाकिसतान बनावन - टेका॥
मुसलिम-हिंदु पृथक बिय जाती, अहहिं परस्पर जिमि दिनराती।
पृथक देस लहि आपुन एका, रहैं सुतंत्र अस मुसलिम-टेका॥
उत्तम मरन न परबस जीना, रहहिं कदापि न हिन्दु-अधीना।
सिक्ख-रु बंगबासी अस भाखैं, हम नहिं मुसलिम-सासक राखैं॥

मास जून उन्नीस सत, अस्टाधिक चालीस।
भारत कर सासन तजौं, निसचै बिसवे बीस॥५४॥

आंगलपति अस घोसित कीना, आंगल-भारत-हित हम चीना।
निसचिततिथितजिहैंनिजसासन, भारतजन गहि भारत-सासन॥
होयँ सुखी अस आस हमारी, बैर-बिरोध समस्त बिसारी।
*मांटबटन प्रतिनिधि नृप केरा, सखा-तुल्य भारत तिन हेरा॥
आंगलपति कहँ तिन मत दीना, भारत-तजन तुरत समिचीना।
मुसलिम कहँ देवहु इक देसा, जा महँ रहहिं सुतंत्र हमेसा॥

---

*लार्ड माउंटबैटन—भारत के वायसराय तथा गवर्नर-जनरल।

करि कै बंग पंचनद - अंगा, तासु बनावहु समुचित अंगा।
पाकिसतान - रु भारतनामा, उभय देस पावहिं सुखधामा ॥
खिस्ट-अब्द उन्नीससत, सात अधिक चालीस।
मास आठ तिथि पंचदस, हिन्द तजैं इंगलीस ॥५५॥
आंगल-पति घोसित अस कीना, उभय-देस-हित या महँ चीना।
मास अगस्त पंचदस वारा, आंगल-नृप निज बचन सकारा ॥
भारत-खंड दोउ तिन कीने, पाक-रु हिन्द नाम सुभ दीने।
उपनिवेस-सम दीन सुराजू, साजी सैन्य देसहितकाजू ॥
बंग-पंजावभंग करि दीना, बचन प्रमान तुरत निज कीना।
मांटबटन नृप-प्रतिनिधि नीका, रास्ट्र-अधिप कहँ दीनो टीका ॥
राजनबाबु सकल गुनधामा, रास्ट्र-अधिप-पद लहि अभिरामा।
प्रमुख-सचिव नेहरु कहँ कीना, तासु सहाय पटेलहि चीना ॥
भारत लही सुतंत्रता, आंगल गये सुदेस।
त्रिबरनधुज फहरावहीं, जय - पताक - समवेस ॥५६॥
त्रिबरनधुज चहुँ ओर सुहाये, भारत-जस चहुँ दिसि पसराये।
मोदप्रमोद भये चहुँ ओरा, जय जय गांधि करैं सब सोरा ॥
घर-घर होवत मंगलगाना, मोद मनावहिं पुरजन नाना।
हरख प्रबाह उमड़ि बढ़ि आवा, नासत सकल दुरित दुखदावा ॥
बाजहिं घर-घर मोद बधावा, मानहु रंक इन्द्रपद पावा।
देहलि होय महोच्छव भारी, गाँधि-सुजस गावहिं नरनारी ॥
बापू धन्य अमर-जस-भाजन, सतत देस-हित-चिन्तक साजन।
रन - सुराज - संचालन कीना, रिपु-मद-गरल प्रेम सन छीना ॥
दासभावबंधन हरै, मंगल प्रेम - प्रभाव।
परसासनकर्दम - धँसी, काढ़ी भारतनाव ॥५७॥

भयो सुराज-पोत-कनधारा, भारत-भागधुरंधर भारा।
सत्य-अहिंसा अटल पुजारी, बिस्व-प्रेम-अभिभावक भारी॥
धरमनीति कर मेलकरावन, ऋजुता कर सुभपाठसिखावन।
धरमपन्थनेता सुखकारी, मोहन नाम अमंगलहारी॥
मोद-पयोधि-मगन नरनारी, पै नहिं सुस्थ-चित्त बृजिनारी।
उर-अन्तर जारत दुखदावा, खंडन-दुख भारत कत पावा॥
कस्ट प्रबल ता कहँ इक आना, गनहुँ अहिंसा प्रान-समाना।
सो अब राजनीति-थल आई, सकहि न निज गौरव प्रकटाई॥

कांग्रस निज सासन रची, करिहै अमित सुधार।
पै नहिं सेना-पुलिस बिनु, रखिहै निज अधिकार॥५८॥

हिंदू-मुसलिम-सिक्ख-ईसाई, हरिजन मिलि इक समिति बनाई।
भारत कर सुभ सासन साजा, मनहु ऐक्य तहँ सतनु बिराजा॥
अभिनंदन-मंगल दिन आवा, हरख-प्रमोद चहूँ दिसि छावा।
ता छिन बात बिलच्छन देखी, रनसुतन्त्र-जय पाय बिसेखी॥
सेनापति मोहन गतमाना, जाय नवाखलि कीन ठिकाना।
मनुज महान करम निज करहीं, फल-आसा नहि मनमहँ धरहीं।
कंचन धूरि गनहिं इकरूपा, बिगतबिकार सुजन-हिय-भूपा।
गनहिं समान मान-अपमाना, बिजय-पराजय सम करि जाना॥

सतत लोकसेवा-निरत, बिगत-लोभ-मद-मान।
मनुजरतन जन-मन-हरन, सीतल इन्दु-समान॥५९॥

देस-बिभाजन कर परिनामा, भयो पंचनद-हित दुखधामा।
मनुज रूप धरि दनुजन केरा, मानहु कुटिल काल-कलि प्रेरा॥
करहिं नृसंस जुवकजनघाता, मारहिं जरठ-बाल-तियव्राता।
घोर करम तहँ करहिं पिसाचा, मानहु पाप नगन ह्वै नाचा॥

हरहिं सतीत्व सतीजन केरा, करहिं न कान दुखित-जन टेरा।
जारहिं गेह लूटि धनधाना, फिरहिं उच्छृंखल प्रेत-समाना॥
लहहिं सँतोस न हरि धन-धामा, लूटहिं दुस्ट धरम सुखधामा।
धरमधीर रमनी अरु बीरा, तजहिं देह नहिं सुधरम-हीरा॥

देह नासि अरु धरम थिर, अस बिचारि मन धीर।
समुद तजैं तनु धरम-हित, निदरि कालकृत पीर॥६०॥

बंग-बिभाजन अपि दुखदाई, भयो अमित रिपुजन-सुखदाई।
तासु हिये बिलसत अस आसा, भारत ग्रसित बिभाजन-पासा॥
होवहि मद-मत्सर कर डेरा, दीसहि प्रेम न कितहूँ हेरा।
भारतीय लरि मरहिं परस्पर, रहहिं सदा मदमत्सर-तत्पर॥
तासु बिरोध माहिं मम लाहू, अनहित लखि उर अमित उछाहू।
पै खल-हिय-अभिलास न पूजी, देखी बात तहाँ इक दूजी॥
सांति समस्त बंग महि छाई, प्रकटत सहज गांधि-प्रभुताई।
सफल प्रयास भयो तिस केरा, मुसलिम हिंदु अनुज-सम हेरा॥

ईद-महोच्छव मिलि कियो, तजि कै बैर-बिवाद।
हिंदू-मुसलिम मिलि कियो, जय भारत सुभनाद॥६१॥

गांधी तब देहलि महँ जाई, बिरलागृह महँ धूनि रमाई।
नियम-समेत करत सतसंगा, रामनाम-जप चलत अभंगा॥
देत पंजाबिन कहँ उपदेसा, तजहु कदापि न तुम निज देसा।
तजहु सुदेस न बरु मरि जाऊ, कादर मान लहत नहिं काऊ।
मानी मनुज सिंह-समतूला, तजत सुदेस नहिन सुखमूला।
पाकिस्तान-हिंद कर सासक, होहु उभय गड़बड़ कर नासक॥
रच्छा करउ अलप-मत केरी, मानहु मीत सुमति तुम मेरी।
पाकदेस महँ जाय अकेला, हौं अब करहुँ निवास सहेला॥

रामनाम सुभ टेक गहि, तजिकै मनुज-भरोस।
जो कोऊ मो को हनै, वा प्रति करहुँ न रोस॥६२॥
सब थल जाय प्रेम-संदेसू, देवहुँ सुभ करतब-उपदेसू।
जासों अलपमतन दुख हरहीं, प्रेमभाव आपुन चित धरहीं॥
जब लौं चलत द्वेस अरु घाता, तब लौं भाव न प्रेम-सुबाता।
संप्रदाय-बिस बिसम प्रभाऊ, गनहिं उभयदल हित नहिं काऊ॥
करहिं परस्पर घात-प्रघाता, सब तजि प्रेमभाव कर बाता।
अस लखि मोहन निसचै कीना, अनसन-ब्रत चहियत अब लीना॥
भारतजन जिमि बैर बिहाई, होवहिं प्रेम-पंथ-अनुयाई।
पाप-निचयहित कुलिस-समाना, अनसन मनरुज-भेसज जाना॥
ख्रिस्ट अब्द उन्नीस सत, अस्टाधिक चालीस।
तिथी त्रयोदस जनवरी, अनसन कीन यतीस॥६३॥
अनसन करत न करतब त्यागा, जनहित करत सदा बड़भागा।
तासु भाव लखि चिंतित लोकू, भये निमग्न जनु सागर-सोकू॥
*सांति-समय इक तुरत बनाई, बचन दीन रहिहैं जिमि भाई।
मुसलिमजन-जीवन-धन-धरमा, रखिहैं जानि परम सुभ करमा॥
हिन्दुन अस आस्वासन दीना, अनसन तजि तिन पारन कीना।
कतिपय दिवस गये इक मूढ़ा, धरम-अन्ध अघकर्दम-बूड़ा॥
बिरलाभवन जुबक इक आयो, तिन तहँ दारुन बंब चलायो।
ईसकृपा न भई कछु हानी, रहे अछत बैठे सब प्रानी॥
राजपुरुस बंदी कियो, जुबक धरम-मदमूढ़।
गांधी कहँ जोऊ कहत, मुसलिम-मीत निगूढ़॥६४॥

---

* Peace Pact—शान्ति का समझौता।

करुनामय उदार-चित गाँधी, तासु उधार-आस चित बाँधी।
कह्यो जुबक पथभ्रस्ट बिचारा, मो कहँ धरम-सत्रु निरधारा॥
भयो प्रवृत्त मोर बध माहीं, वा कर दोस गनहुँ कछु नाहीं।
अहहि जुवक नहिं निंदन जोगू, वा पै उचित न दंड-प्रजोगू॥
बंध-बिमोचन-हित तनु धारा, कैद करन नहिं करम हमारा।
उपमंत्री गांधी-पटचेला, नीति-कुसल सरदार पटेला॥
कहत बापु तव अरि दुखदाई, तनु-छति हेत रहे लिव लाई।
जो हौं राउर आयसु पाऊँ, राजपुरुस कछु नियत कराऊँ॥

आयुधकरगहिदिवसनिसि, करहिं सुरच्छन तोर।
देस-धरम-हित होय अरु, अभिमत उत्तम मोर॥६५॥

मोहन प्रेमसहित तिहि वारा, मम हित करहु न मीत बिचारा।
हौं कछु निज तनु सोच न राखी, सत्य कहौं माधव मम साखी॥
*जा कर होय राम रखवारा, ता कहँ कवन मिटावनहारा।
करम करहुँ निज तजि अभिमाना, मन महँ सुमिरि सदा भगवाना॥
†मो कहँ सुमनहार गर डारा, अथवा उरग उभय इक-सारा।
देस-धरम-जनता-हित लागी, हौं नित जिय-अरपन-अनुरागी॥
जौ लौं मम तनु कारज-जोगू, करतब सन नहिं होय बियोगू।
हिंदू-मुसलिम केर मिताई, जीवन-लच्छ अहहि मम भाई।

भारत-सेवा-जग्य महँ, आहुति करि निज देह।
मनुजमात्र कहँ दरसिहौं, जीवन कर फल एह॥६६॥

---

* 'जा को राखै साइयाँ, मारि सकै नहिं कोय।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय'॥ (कबीर)

† To me bouquets (सुमनगुच्छ, गुलदस्ता) & bullets (बंदूक की गोलियाँ) are alike—महात्मा गाँधी।

आरज-मुसलिम बैर-बिरोधा, करहिं गांधि-जीवन-उपरोधा।
मनुज-देह-घातक ब्रन जैसे, भावबिरोधि जाति-हित तैसे॥
जनवरि मास तिथी सटवीसा, सुमिरि सुतंत्रदिवस जन-ईसा।
मन महँ अस बिचार सुभधारा, करऊँ सबल अब प्रेमप्रचारा॥
जावहुँ नगर-नगर अरु ग्रामा, देवहुँ अस सँदेस सुखधामा।
ईस-कृपा लहि रुचिर सुराजू, करहु देस-उन्नति-हित काजू॥
तनमनबचन छाँड़ि सब बैरा, सतत मनावहु भारतखैरा।
स्रमिक करैं भारतहित काजू, तिनकर पोसन धनिक समाजू॥

कुटिल दसा सनि कर जथा, प्रकट होय अति खीस।
भारत-हित-नासन तथा, भई जनबरी तीस॥६७॥

निजसेवक कहँ प्रात पुकारी, गांधि कह्यो मम पत्र-पिटारी।
ल्यावहु उतरु देहुँ तिन केरा, कछु भरोस नहिं जीवन केरा॥
सुद्ध-हृदै मानुस जो कोऊ, घटना भावि लखै द्रुत सोऊ।
दर्पन महँ प्रतिबिंबित जैसे, होयँ पदारथ मुनिमन तैसे॥
दिन-छ्यकाल पंचघटि बीते, देवल प्रति जावहिं अघरीते।
हिंदु-जुबक तहँ तब इक आयो, आदर-मिस तिन मस्तक नायो॥
नाथूराम बिनायकरावा, अवसर लहि पिसतौल चलावा।
कठिनकुठारवार सहि जैसे, द्रुमवर गिरत गांधि तहँ तैसे॥

राम राम हे राम कहि, धरनि परे सुखधाम।
चकित भये नरनारि सब, मच्यो बिकट कुहराम॥६८॥

बैद्य-बिचच्छन जतन अनेका, करहिं गांधि-जिय-रच्छन-टेका।
पै सब होयँ बिफल तहँ कैसे, भाग्यबिहीन-मनोरथ जैसे॥
बापू सुरपुर जाय सिधारा, जब तिन दारुन बचन उचारा।
सोक-प्रवाह अमित तब बाढ़ा, धीरज-तरु सकिहै किमि ठाढ़ा॥

ढाहत नर-हिय-सरित-करारा, जलमय करि सुख-खेत अपारा।
सहसनयन बरसहिं जलधारा, उमड़त सोक-जलद हिय भारा॥
तड़ित-घोस इव हाहाकारा, छायो सोक-रूप तम भारा।
अस्नु भरे चंचल चख कैसे, चपला-चमक मेघ महँ जैसे॥

जनसमूह समवेत तहँ, धारयो दुरदिन-रूप।
नैन-बास्प बारिद मनौ, पवन उसास-सरूप॥६९॥

बिपिन-मध्य जिमि प्रसरत दावा, दारुन-बृत्त चतुर्दिक धावा।
देसप्रमुख नेता अकुलाये, तड़ितबेग देहलि प्रति धाये॥
देस-पिता कर निधन निहारी, रोवहिं सिसु-सम पंडित भारी।
सोक-बिकल जनता तहँ सारी, देवत दुस्ट नाथु कहँ गारी॥
सत्य-अहिंसा-धरम-पुजारी, प्रेम-सरूप जगत-हितकारी।
सकल जगत जाकर परिवारा, अहह दुस्ट! गांधी कत मारा॥
दीनबंधु हरिजन-कुल-पालक, दारिद-दुख-पातक-कुल-घालक।
राज बिदेसि-साप जिन टारा, अहह दुस्ट! गांधी कत मारा॥

देसपिता कहँ मारि कै, देस कियो दुखलीन।
कुलकलंक खल नाथु तुव, जीवन जग गुनहीन॥७०॥

सोक-बिकल नहरू मितबैना, बास्प-सरित-परिप्लावित-नैना।
सोक-उदधि-मज्जितहियवारा, स्रद्धा-मृदु तिन बचन उचारा॥
जीवन-दीप भयो निरबाना, भारत सोक-समुद्र समाना।
देसपिता सुरपुर किय गौना, भारत भयउ सोक कर भौना॥
अब अस उचित करैं कृत ऐसे, जीवत बापु किये सुभ जैसे।
सत्य-अहिंसा सन करि प्रेमा, देस-उधार-करम करि नेमा॥
अनुसरि गांधि-चरन-जलजाता, भारत-मनुज-मात्र गनि भ्राता।
सब सन करैं प्रेम-बिवहारा, बैर-बिरोध-भाव तजि सारा॥

बापू कर जीवन जदपि, भयो धरनि पै अन्त।
अमर तासु जस-आतमा, जीवहि काल अनन्त ॥७१॥
बापू जदपि अमर पुरबासी, होय हमार पंथ-परकासी।
भारत-हित तिन लीन सुराजू, उचित करन पूरन सुभ काजू॥
कहत पटेल सोक तजि भाई, चलहु गांधि-सासन चित लाई।
*अबुल प्रसाद राजगोपाला, सरधाजुत उद्‌गार निकाला॥
देसभगति - धुरधारन - सीला, चलत त्याग-पथ परमकटीला।
बापु समान न होवहि दूजा, करत सकल जासू जग पूजा॥
सत्य - अहिंसा - सुभब्रत - धारी, बिनु कारन मानव-हितकारी।
चरन-चिह्न अनुसरि सुभ तासू, लहहु मीत हिय परमहुलासू॥
सरधांजलि प्रेसित करी, देस - बिदेस - अधीस।
गांधि सुजस गावहिं सबै, उत्तम - मद्धम - खीस ॥७२॥
मनुजमात्र - संततहितकारी, गांधी सत्यमहाव्रतधारी।
बिस्वसांति कर अटल उपासक, जगत-पूज्य कह आंगल-सासक॥
†रास्ट्र-अधिप अमरीका केरा, ट्रुमन नाम सरधा सन प्रेरा।
भाखत गांधि मनुज-तनु-धारी, मानहु बिस्व-प्रेम सुखकारी॥
देसदेसान्तर नेता जेते, करहिं गांधि-गुन-गायन तेते।
कहत एक करुना-अवतारा, गौतम बहुरि मनुज-तनु धारा॥
भाखत अवर प्रेमवपुधारी, प्रकटे पुनि ईसा अघहारी।
तीजा कहत कृस्न भगवाना, गीतामृत पुनि आय पिलाना॥

---

* मौ० अबुलकलाम, बाबू राजेन्द्र प्रसाद तथा चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य।

† हेनरी ट्रुमन—अमरीकन जनतन्त्र-संघ के प्रधान।

महापुरुस जस गाय कै, पावहिं मोद सुजान।
मद-मत्सर-अभिमान-जुत, समुझहिं निज अपमान ॥७३॥
स्वारथ-रत मद-मोह-परीता, ईर्खाजुत उदारमतिरीता।
संप्रदाय-बिस-दूसितनैना, जीना कहत डाह-कटु बैना॥
गांधि रह्यो हिन्दुन कर नेता, समर-सुराज-प्रमुख-अभिनेता।
तासु निधन होवहि छतिकारी, हिन्दुन-हित निसचय अतिभारी॥
गुनगाहक मानव नहिं जोऊ, दोस-निरीछन-उत्सुक सोऊ।
करि गुनवान-निरादर मूढ़ा, दरसत निज अधमाइ-निगूढ़ा॥
नाहिन होत सुजन कर हानी, गुन सन सकल करत बस प्रानी।
†दिवस-काल नहिं पेचक पेखे, देवहि दोस कवन रवि-लेखे॥
बेतस नहिं फूलै फलै, बरसहिं अमिय पयोद।
खलजनमन सुधरै नहीं, साजन-बचन-बिनोद ॥७४॥
सुन्दर स्यंदन सुबिधि सँवारा, तिस पै खादि-खचित तनु धारा।
सादर सुमनहार छितराये, मानहु भूखन बिबिध सजाये॥
संग चलत सैनिक-गन बाजा, साजे सकल अनूपम साजा।
नेता सकल देस कर साथा, चलहिं कहत गांधीगुनगाथा॥
लखहु जलूस मोटर-गज-बाजी, मानहु नृप चतुरंगिनि साजी।
बिजय-बधू-ब्याहन-हित जाई, मनमोहन बारात सजाई॥

---

† 'नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्।' (भर्तृहरिः)
गर न बीनद बरोज शबपर्रा चश्म चश्मे आफताब रा चि गुनाह।'
(गुलिस्ताँ—शेख सादी)
यदि चमगादड़ की आँख दिन के समय नहीं देख सकती, तो इसमें सूर्य की आँख का क्या दोष।
'सूर्यालोकं यदि न सहते वाग्गुदः दृष्टिदोषात्।
तत्राक्षेपः त्रिभुवनगुरोः न्यस्यते केन भानोः। (वि० ध० म०)

भवनपीठ बैठे नरनारी, बरसहिं सुमन मनहु असुरारी।
ता छिन सोक-मगन नरलोका, मानहिं मोद अमित त्रिदिवोका॥
गांधि भयो वररूप तहँ, मीचु मनोहर नारि।
परिनै-हित ता के चल्यो, बिमल-चरित बृजिनारि॥७५॥
राजघाट जमुनातट जाई, बिधिबत सुन्दर सेज सजाई।
अगर-तगर-चंदन-बहुभारा, जोरि तहाँ पावन तनु धारा॥
बदन मनोहर मोहन केरा, अन्तिम बार प्रजाजन हेरा।
आगे बढ़ि सरधांजलि दीनी, धन्य धन्य सुमधुर धुनि कीनी॥
तदनन्तर करि मंत्रउचारा, बिप्रन पूत हुतास पजारा।
पावकदेव ज्वालतनुधारी, भौतिक-देह भसम करि डारी॥
अमर जीवहित स्यंदन साजा, मोहन कीन अमरपुर-राजा।
होय धरनितल हाहाकारा, अमरपुरी महँ जै-जैकारा॥
*बाम-अयन पुनि धवलपख, पावन संध्याकाल।
दिब्य-ज्योति-रथ पै चल्यो, सुरपुर दीनदयाल॥७६॥
मांटबटन प्रतिनिधि नृप केरा, राजन सुभ कांग्रसपति हेरा।
नह प्रमुखसचिवपदधारी, अबुलकलाम अमित गुनधारी॥
का जपडु सरदार पटेला, समरचतुर बलदेव सहेला।
अवर सचिव तिन सँग तहँ बैठे, भारत-हित चिंतन-सर पैठे॥
चक्रबरति तब राजगुपाला, बिस्वबिदित नयग्यान बिसाला।
प्रेमसहित तिन कहँ समुझावा, गांधि-निदेसतत्त्व बतरावा॥
कह्यो सकल तजि सोकबिचारू, तुरत सँभारहु करतबभारू।
महापुरुस नहिं सोचनजोगू, करतबनिरत सतत तजि भोगू॥

---

* उत्तरायण काल

बेदरहित भूसुर बुरो, नरपति नीति-बिहीन।
भोग-निरत जोगी तथा, गृही त्याग-पथ-लीन ॥७७॥

सोचिय पंडित चरित-बिहीना, तजि निजबोध बिसयरसलीना।
सोचनीय गुरु ग्यानबिहीना, चाहत सिस्य-बिभव सब छीना॥
सोचनीय बटु स्वारथ-लीना, गुरु प्रति सेवा-भाव-बिहीना।
सोचिय धनिक कृपन गुनहीना, पर-उपकारभाव बिनु दीना॥
सोचिय सैनिक बीरज-हीना, कादर समरपलायनलीना।
प्रमदा सोचिय पति-छतिकारी, भरता प्रेम-रहित बिभिचारी॥
सोचिय सुत पितुबचन न मानै, जनक तथैव न सुतहित जानै।
सोचनीय संतत महतारी, करत सुता नहिं सिच्छित नारी॥

जनसेवक सोचिय छली, स्वारथरत मतिपोच।
निजस्वारथ साधत सदा, तजि जनता-हित-सोच ॥७८॥

सत्यअहिंसापथ जिन सोधा, करतब करत लह्यो निजबोधा।
करमजोग कर तत्त्व प्रकासा, कीन भगति कर चरम बिकासा॥
ग्यानपंथगौरव दरसावा, सुभग समन्वय करि दिखरावा।
गीतारूप चरित निज कीना, सेवाहित निज जीवन दीना॥
सेवारत संतत सुखपावा, स्वारथभाव न मन महँ आवा।
धरमधुरन्धर तप - अनुरागी, संजमसील बिकार-बिरागी॥
सत्यसंध करुना - अवतारा, दीनदयाल बृजिन-रिपु भारा।
सोचनजोग अहहि किमि बापू, धरम सदेह हरन-जन-तापू॥

जदपि अमरपुर कीन अब, गाँधी पुन्नपयान।
भारत-सिर तउ बरद कर, वाकर कवचसमान ॥७९॥

सत्य-अहिंसा कर पथ जोऊ, बापू कीन प्रदरसित सोऊ।
मनक्रमबचन चलौ तिस ऊपर, छेमद पन्थ अवर नहिं भूपर॥

जा बिधि होय देस-हित-साधन, अपनावहु समुचित अस साधन।
मुसलिम कर टारहु भय सारे, हरिजन-ताप हरहु अति भारे॥
सुधरै - सासक - जन - ब्रिबहारा, करैं बनिक जन सुद्ध बिहारा।
करैं सकल भारत-हित काजू, होय सुखित जिमि लोक-समाजू॥
पावहिं उचित बसन-धन-धाना, जापन करहिं जियन सहमाना।
महिला-जन-उन्नति अति नीकी, उपचिति होय सिच्छासरनी की॥

परमपूज्य नेता भयो, बापू मनुज महान।
ताकर स्मारक पुन्न अस, करहु बन्धु निरमान॥८०॥

धरमधुरन्धर धीर, सत्य - अहिंसा - प्रेम-रत।
सततहरन - पर - पीर, करमवीर न्यायी परम॥८१॥

सत्याग्रह - करतार, देसभगत - नेता - प्रमुख।
द्वेसभाव - परिहार, सत्यप्रेम सन करतनित॥८२॥

बिकट - दासता - पास, भारत कर मोचित कियो।
हमहिं सदा तुव आस, जगमोहन गांधी अमर॥८३॥

भारतजन कहँ जोउ, सुभ सुराजथाती दई।
होय सुरच्छित सोउ, आसिस ऐसी दीजिये॥८४॥

बापू पावन तोर, ब्रिमलचरितकरिअनुसरन।
सकल - जाति - सिरमौर, होयँ भारती बिस्व महँ॥८५॥

———

अष्टम सोपान

सुमिरौं सुखसागर जगदीसा, दुखनासक मंगलगन - ईसा।
बिघन-बिनासक कुसलबिधायक, अघहर प्रभु मंगलमुददायक॥
धरमपाल सरनागतरच्छक, कालरूप दानव-कुल-भच्छक।
पापउरगहित गरुड़समाना, बिसमबृजिन-जुर-भेसज माना॥
दुस्टनिकंदन जनमनरंजन, खलमदगंजन भवभयभंजन।
मंगलमय प्रभु अखिल निरंजन, दीनदयाल सकल दुख-भंजन॥
त्रिबिधताप-टारन अखिलेसा, बृजिन - बृत्र - मारन-त्रिदिवेसा।
कलिमलहरन दलन दुखब्राता, भूसुर - सुरभि - संतजनत्राता॥
देव-दनुज-मानव सबै, लहि अनुसासन जासु।
सकल करैं निजनिज करम, बिनवौं रमा - विलासु॥१॥
अघहर जासु सकलसुखमूला, कृपाप्रसाद पाय अनुकूला।
प्रतिभारूप बिमल बर पाई, कविता करहिं मधुर कबिराई॥
गावहिं चरित महाजन केरा, पावन परम जोउ जग हेरा।
मरजादापुरुसोत्तम जोऊ, करम करै मानव-हित सोऊ॥
चरनचिह्न चलि मानव वा के, भेदहिं बिसमकोट सठता के।
देयँ पछारि कुटिल अघब्राता, जिमि नाहर मृगजूथ निपाता॥
बंदीकृत उत्तम गुन जेते, बंधनमुकत करहिं द्रुत तेते।
सरधा कर पुनि देय अहारा, तिन कर करहिं पोस अतिभारा।
चरित महाजन कर अहैं, ज्योतिथंभ समतूल।
ताके दिव्य-प्रकास पथ, लखैं मनुज सुखमूल॥२॥

जीवन-ज्योति पाय सुखमूला, तरु इव तोय पाय अनुकूला।
उन्नत होय मनुज जग माहीं, या महँ रञ्चक संसय नाहीं॥
तिमिर-तोम जस भानु-प्रकासा, छिन महँ पावत अवसि बिनासा।
तिमि लहि सुजनचरितआलोका, दुरगुननास मनुज गतसोका॥
जीवन-पथ चलि सरल सुचाला, पाय अमित सुख होय निहाला।
जग महँ लहि कीरति बहुमाना, इतरलोक पावत कलयाना॥
सुजनचरित जस रुचिर पियूखा, करत मधुर जीवन रस-रूखा।
सुजनचरित जस इन्दुप्रकासा, करत मनुज-हिय-कुमुद-बिकासा॥

सुजनचरितमानस-सलिल, क्रीड़हिं रसिकमराल।
तजैं दोस सैवालसम, गहि गुनमुक्ताजाल॥३॥

सुजनचरित जस सागर भारा, मानवमति किमि पावहि पारा।
गुरुप्रसाद-बोहित सुभ पाई, मनुज सुखेन वाहि तरि जाई।
जो गुरु होयँ आपु कनधारा, गोपदसम होवत अकुपारा।
गुरुप्रसाद कछु सनमति पाई, सुजनचरितमहिमा - सुघराई॥
अवगत करि लहि अमित हुलासू, मानस-मुद अरु चित्त-बिकासू।
सुजनचरित कछु कीन बखाना, गांधी सुजन-सिरोमनि जाना॥
गुन-गौरव ता कर कछु गाई, मानस मोर न मोद अघाई।
सुजनचरित खलु मंगल-मूला, हरत सकल मानवहियसूला॥

सुजनचरित - संजीवनी, पापगरल करि नास।
मोह - मूरछा टारि कै, देवत सुमति - बिकास॥४॥

सत्यसंध गांधी गुन गाये, सत्यप्रेम मानस थिति पाये।
पुनि बिचारि अहिंसाभावा, बिस्व-प्रेम मन माहिं समावा॥
ब्रह्मचरज-निसठा पुनि देखी, संजमप्रति रति होय बिसेखी।
लखि पुनि व्रत अपरिग्रह केरा, चकित-चित्त जग वा प्रति हेरा॥

स्तेयरहित पुनि निरखि सुभाऊ, सरधा महँ त्रुटि रहत न काऊ।
बहुरि बिलोकि सौचकर भावा, जा सन सुभ संतोस सुहावा॥
पावन तप निगमागम-पाठा, आतम-उन्नति कर सुभ ठाठा।
ईसभजन महँ रुचि दिनदूनी, होय सहज पातकगति ऊनी॥

गांधीगुनमकरंद सुभ, सुजनभ्रमर करि पान।
नवजीवन लहि वाहि सों, छेरहिं प्रेमसुतान॥५॥

जग महँ प्रेम अहहि सुखसारा, मानव - जीवन - मूलअधारा।
सत्य-अहिंसादिक गुन जोऊ, तासु सहाय बिदित जग सोऊ॥
जिमि ग्रहनखत रहहिं रवि घेरे, सद्गुन बसहिं प्रेम कर नेरे।
गांधिचरित कर अस उपदेसू, माननीय जिमि निगमनिदेसू॥
गांधि-चरित बरनन हौं कीना, पावन परम मधुर-रस-भीना।
घटना तासु कछुक सुखदाई, मेलि परस्पर सुबिधि सजाई॥
रतनमाल इक सुघर बनाई, रसिकजननग्रीवा पहिराई।
राखहिं मान सोउ अब मोरा, करि प्रमान इक तुच्छ निहोरा॥

ईस-कृपा सों पाय कै, कछु सनमति-लवलेस।
साररूप संग्रह करौं, गांधि - चरित - उपदेस॥६॥

जगपति कर गुन-करम-सुभाऊ, पावन पुनि प्रभु नाम-प्रभाऊ।
बिस्वबिदित निगमागमसारा, ब्रह्म सत्य अरु जगत असारा॥
भगत-हेत पुनि प्रभु-अवतारा, धरम-मरम सुभ स्रुति-निरधारा।
जमनिजमादि मनुज सुखसाधन, आस्रम-बरन-धरम-छति-बाधन॥
राजसमाज - धरम - धन - नीती, स्वारथरहित परस्पर प्रीती।
सिच्छा - सरनिसुधार - प्रसारा, भाखा - भाव - भेख-रुचिवारा॥
हरिजन-जन कर क्लेस-निवारन, रामराज्यथापन दुखटारन।
गांधीकृत अस बिबिध बिचारा, राखौं मेलि अमित सुखसारा॥

गांधिचरित सुभ सुरभिसम, पय इव तासु बिचार।
दोहन करि ता कर सुखद, लहैं सुमति स्रुतिसार ॥७॥
एक दिवस देहलि-समवेता, सकल प्रमुख कांग्रस कर नेता।
गावहिं रुचिर गांधि-गुनगाथा, सरधा-भगति-प्रेमनतमाथा ॥
कलिजुग धरममेड़ किन बाँधी, मोहनदास करमचंद गांधी।
कलिजुग कवन धरमअवतारा, धरम राखि कीनो अघ छारा ॥
पतित-उधार आस किन बाँधी, मोहनदास करमचंद गांधी।
बिस्व-प्रेम कर अटल उपासक, बैर-बिरोध द्वेस-बिसनासक ॥
प्रेमरसरि सब छिति किन बाँधी, मोहनदास करमचंद गांधी।
सत्य-अहिंसा-धरम-पुजारी, करमवीर गांधी अघहारी ॥
सत्याग्रह सुभ अस्त्र कर, करि कै कुसल प्रयोग।
निपट निबल मनुजन कियो, सबल-निपातन-जोग ॥८॥
समरसुराज-नेता-पदधारी, तन मन सों जनता-हितकारी।
ब्रिटिसराज-गौरव जिन छीना, मोहनदास नीति-परवीना ॥
हरिजनजनसुधार-अभिलासी, प्रेमसुधा-सुभसलिल-बिलासी।
गौरवमय पद तिन कहँ दीना, करि कै मोहन प्रेम-नवीना ॥
महिलाजन गौरव अधिकाई, जनता कर अति कीन भलाई।
नूतन सिच्छा-सरनि बनाई, छात्रजनन कर हरि कठिनाई ॥
रामभगत निसठाजुत पूरा, मन महँ धारि अभयव्रत रूरा।
प्रबल सत्रु सन एकल जूझा, मोहन-सम जोधा नहिं बूझा ॥
सत्य मनहु नररूप-धर, धरमनीति-अवतार।
गांधि भयो कलिकाल महँ, हरन धरा को भार ॥९॥
कलिजुग कलहकाल बिकराला, घर घर दहत द्वेस-दव-ज्वाला।
सुनु जनक-जननी सन खीझैं, सेवा तजि बनिता पै रीझैं ॥

भ्राता-भगिनि-जनक अरु ताता, लरहिं परस्पर दुहिता-माता।
प्रमदा पतिव्रतधरम बिसारी, पतिदैवत कहँ देवत गारी॥
पुत्रबधू तजि कुल-मरजादा, कहत ससुर कहँ धिग मनुजादा।
कहत सासु कहँ अहहु चुड़ैला, चलहु सदा कुलटा कर गैला॥
बेस्या कहत ताहि पुनि सासू, करकस गिर कहि लहत हुलासू।
घर-घर कलहदस्य अस दीसैं, लखिलखितिनहिंसुजनरदपीसैं॥

प्रेमभाव कर सृंखला, अस बिधि टूटी आय।
घर-घर सभा-समाज महँ, कलह-दस्य दिखराय॥१०॥

*चलहु मेल करि अस स्रुति-बानी, कस्ट हरन संतत सुखदानी।
'कथन करहु मिलि' मंत्र अनूपा, करत निबल-जन सुभट-सरूपा।
'करहु चित्त सम' अस कहि बेदा, करत प्रदरसित सँगठन-भेदा
कलि महँ करि स्रुतिबचनबिरोधा, मूढ़ जनावहिं आपुन बोधा।
करहिं नीच आपुन मनमानी, आपुन कहँ सुरगुरुसम जानी
मनु मुनीस अस मत निरधारा, बरु बुध एक न सहस गँवारा।
कलि महँ नर गनना-बल-मानी, नेता-रहित करहिं मनमानी
† स्रुतिस्मृतिबाकसुमतिजनबानी, करहिं न कान वोट-अभिमानी।

निज दल अलप बनाय कै, नेता स्वारथ-लीन।
भेदभाव उपजाय कै, करैं जाति-बल छीन॥११॥

कलि महँ निपट नीति-प्रतिकूला, करहिं सबल निज मन-अनुकूला
स्वारथ-जुत तजि धरम-बिचारा, निबलन पै करि अनरथ भारा
इत-उत द्वेसभाव उपजावैं, करत अनय नहिं कबहुँ लजावैं
सबल देस धनसंपति पाई, पासव-बल निज अधिक बढ़ाई॥

* 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥' (वेद)

† वोट—Vote, मताधिकार।

चाहत निबलन धन हथियावा, स्वारथ लहि लोभी मुद पावा।
लोभ सदा उपजावत बैरा, बैर सों होय कबहुँ नहिं खैरा॥
सबल करहिं निरबल धनहीना, क्रन्दन करहिं कस्ट लहि दीना।
अवर सबलजन तासु सहाया, करहिं प्रकट करि कृत्रिम दाया॥

अस स्वारथ सन उपजि कै, समर-ज्वाल बिकराल।
धन-धरनी अरु नरन कर, करै बिनास कराल॥१२॥

रन-प्रभाव प्रसरहिं बहु रोगा, अनयबीज कर कटु फल-भोगा।
रन सन नसहिं कला अरु धंधे, बिकल मनुज धन-संकट-बंधे॥
रन सन होय कृसी कर हानी, अन्न-अभाव लहैं दुख प्रानी।
रन सन होय अमित जन-नासा, बहुरि असीमित बिभव-बिनासा॥
जन-धन-नास प्रगति कर आसा, छनिक पयद महँ बिज्जु-बिलासा।
प्रगति-नास ध्रुव संस्कृति-हासा, बिनु संस्कृति नहिं मनुजबिकासा॥
बिनु बिकास मानव गुन-हीना, निपट निरंकुस पसुसम चीना।
†दैवभाव निज सकल बिहाई, होवत दीनन कहँ दुखदाई॥

धरमकरममरजाद सब, भई लोप कलिकाल।
अधरम-कुकरम-अनय कर, उन्नति भई बिसाल॥१३॥

§बेद-बिलास बिप्रजन त्यागी, होवहिं कोकपठन-अनुरागी।
जपतप-संजम-जोग-बिरागा, छाँड़ि करहिं बिसयन सन रागा।
करहिं कुकृत धनसंचय लागी, कपट-कुसल नयधरम-बिरागी।
*ब्राह्मन सो जो ब्रह्म पछानै, बिप्ररूप अस बेद बखानै॥

---

† गीता के १६ वें अध्याय में वर्णित दैवी संपत् अर्थात् अभय सत्वशुद्धि आदि उत्तम गुण।

§ कोक—कामशास्त्र सम्बन्धी प्रसिद्ध ग्रन्थ कोकशास्त्र।

* 'ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः'—

धरमाचरन करम निज मानै, स्वारथभाव न मन महँ आनै।
कलिमहँ तजि निगमागमग्याना, खोजहिं बिप्र धनिक जजमाना॥
तिन कर धरम-अरथ सब खोई, स्वारथ-सिद्धि करहिं निज सोई।
पुरखा जासु जगतगुरु-रूपा, लखियत सोउ परे अघकूपा॥
जथाकथंचित सीखि कै, स्तुति-अच्छर दो-चार।
बनिक-बृत्ति कहँ धारि कै, करैं धरम-ब्यापार॥१४॥
छत्रिय धरम-रच्छा कहँ त्यागी, होवहिं बिसयभोग-अनुरागी।
§छत्रिय सो जो छत सन राखै, महिमा अमित तासु स्तुति भाखै॥
छत्रिय जन सरनागतपाला, चाहत रनप्रांगन रिपु घाला।
बिजयबधूपरिनयहित सोऊ, जम सों भय मानत नहिं कोऊ॥
कलि महँ छत्रिय कादर भारी, सुनि रननाम देयँ असि डारी।
गाल बजावहिं तजि सब ब्रीड़ा, खेलहिं द्यूत बिसरि असि-क्रीड़ा॥
लखि कै निबल करहिं बहु रोखू, पेखि सबल कछु धरहिं न दोखू।
ससकहृदय नाहरसमरूपा, बीरबेस कादरजनभूपा॥
छत्रियजन कलिकाल महँ, तजि निज धरम-बिचार।
तजि कै पालन दीन कर, करैं अनय-आचार॥१५॥
बनिक सोउ जानिय बड़भागी, देस-बिभव-बरधन-अनुरागी।
करत अरथसंचय अति भारा, करि कै सतत शुद्धबिबहारा॥
धन-संग्रह करि देवत दाना, पर-उपकार करत बिधि नाना।
आपुन कहँ जनसेवक मानै, बित्त सकल जनता-धन जानै॥
दिवस-रैन निज आय बढ़ावै, पै नहिं लोभ-भाव मन आवै।
कलि महँ बनिक कृपन गुन-हीना, संतत धन-संचय महँ लीना॥

---

§ 'क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ़ः'।
(रघुवंश—कालिदास)

ईस-भजन-अर्चन सब त्यागी, होयँ अरथ-पूजा-अनुरागी।
अनुचित-लाभ माहिं चित देवैं, ब्याज बटोरि मातु सन लेवैं॥
धरम-करम-मरजाद तजि, अनुचित करि ब्यापार।
आपुन सिर संग्रह करै, बिपुल बृजिन कर भार॥१६॥
सेवा-धरम सूद्र कर रूरा, बेदपुरानबिहित फल-पूरा।
जपतप सन दुज कहँ फल जोऊ, सूद्र लहत सेवा सन सोऊ॥
बिप्र बढ़त करि ब्रह्म-बिचारा, छत्रिय पाय सुजस रन भारा।
बैस्य करत उत्तम बिबहारा, सूद्र बढ़त सेवाकृति-द्वारा॥
कलि महँ सूद्र धरम निज त्यागी, होवहिं सतत कलह-अनुरागी।
स्रम सन अलप-रासि धन पावैं, द्यूतमद्य महँ सकल गँवावैं॥
करहिं स्वामि सन नित्त लराई, बेतन मम देवहु अधिकाई।
†नतरु रोकि कारज तुव सारा, करिहैं अमित हानि-बिबहारा॥
सेवकजन अस तजि सकल, सेवा-धरम-बिचार।
निपट निरंकुस होय कै, करहिं कुटिल बिबहार॥१७॥
बरन-धरम अस भे बिपरीता, आस्रमदल तिमि सुधरम-रीता।
ब्रह्मचारि तजि स्रुति-अनुसीलन, करहिं धरमप्रति नयन-निमीलन॥
जपतपसंजम-मारग त्यागी, होवहिं भोग-पन्थ-अनुरागी।
तिमि गृहस्थ निज धरम बिसारी, होवहिं निपट निरंकुसचारी।
सुभसंतति-हितकरम बिसारी, होयँ बिसय-लंपट बिभिचारी॥
बानप्रस्थ तजि जपतपजागा, करहिं अरथ-संचय सन रागा॥
आस्रम-धरम छाँड़ि सन्यासी, होवहिं बिभव-संचय-अभ्यासी।
ईस-भजन-स्रुति-चिंतन त्यागी, होवहिं मठ-थापन-अनुरागी॥

---

† हड़ताल द्वारा काम-काज बंद करके।

कलिजुग महँ अस बिधि नसी, धरम - करम - मरजाद।
*कुलरमनी कुलटा भईं, पुरुस भये पिसिताद ॥१८॥
त्यागि सती सीता कर रेखा, पतिब्रत-धरम रूप सुबिसेखा।
गनिकाजन - पदपद्धति पालैं, धरमबित्त अनमोलक घालैं ॥
पति सन बोलहिं करकस बानी, पर-पुरुसन सन जनु मधुसानी।
गुननिधान निज कंत बिहाई, मोदहिं परनर अंग लगाई ॥
भरता पुनि संजमगुनहीना, होवहिं परतियबंचनलीना।
तजि तिय रूपसील-समवेता, जावहिं खल परनारि-निकेता ॥
‡दम्पतिजन तजि संजमभावा, करहिं प्रचंड रुद्ररिपुदावा।
ता महँ होमहिं तनमन सारा, करहिं देह-इन्द्रिय सब छारा ॥
संतति निरबल पाय कै, दहैं सदा दुखदाव।
संपति सकल नसायँ निज, परि बैद्यन के दाव ॥१९॥
परिमित आय अमित संताना, इच्छा-परिबर्धन करि नाना।
चहहिं अरथ-संचय बहु कीना, अतिस्रमसनकरिनिजतनुछीना ॥
होवहिं रोग-बिबस बलहीना, परहिं कालमुख असमय दीना।
जा संतति-हित पाप कमावैं, निज तनमनधनधरम गवावैं ॥
आवहि मरनकाल नहिं पासा, कहि कहि प्रेत जनावहि त्रासा।
तजि कै धरम सुमंगलमूला, मूरख रहत बिसयसुखभूला ॥
पयघृत - साककन्द - फलफूला, सात्त्विक-असन बुद्धि-बलमूला।
†तिन कहँ जड़मति सतत बिहाई, भखत मटन होटल महँ जाई ॥
कपिलापय तजि अमिय सम, मदिरा - सेवन - लीन।
सडरस भोजन छाँड़ि कै, खायँ अभागे मीन ॥२०॥

---

* पिसिताद—मांसाहारी। ‡ रुद्ररिपु—कामदेव।

† मटन—बकरी का मांस।

‡तजिकै मधुर मृदुल पकवाना, खायँ केक बिसकुट अरु नाना।
§पीयुस-सम पायस परित्यागी, होवहिं आमलेट - अनुरागी॥
अस करि तामस निन्द्य अहारा, करहिं मलिन निज भावबिहारा।
तजि कै निज देसी परिधाना, रूपबिदेसि बनावहिं नाना॥
धोती - उपरन - पाग बिहाई, धारैं कोट - पैण्ट - नकटाई।
पूत सिखा-उपबीत बिहाई, चसमा चख धरि साजि कलाई॥
पग महँ डटि डासन कर जूता, चलहिं अकरि कलिकाल कपूता।
धरम - करम - मरजाद बिसारी, पहिरि बिदेसि बिबिध रँग सारी॥
जायँ बिपनि महँ तासु तिय, निज तन-बदन सिंगारि।
प्रमदा-भूखन लाज तजि, ससिमुख फिरैं उघारि॥२१॥
दम्पति कर महँ कर गहि डोलैं, बानि बिलच्छन गिटमिट बोलैं।
मातपिता मञ्जुल मृदुनामा, तजि कै सारथ ललित-ललामा॥
*सिसुन सिखावहिं मूरख बामा, पापा जनक अहहुँ तुव मामा।
नकली साहिब बनि अरु मेमा, पूरन करि फैसन कर नेमा॥
आपुन खल उपहास करावैं, तजि मरजाद न मूल लजावैं।
निज भासा कर करि अपमाना, पर-गिर गहि मूरख अनजाना॥
कामधेनु तजि छेरि दुहावैं, उभयलोक निज मूढ़ गँवावैं।
पावन तजि कै वैदिक भावा, चाहहिं पर-साहित अपनावा॥
तजि गीता-बेदान्त अरु, उपनिसदन कर पाठ।
उपन्यास मूरख पढ़ैं, निसदिन जामों आठ॥२२॥

---

‡ नाना—नानखताई।

§ आमलेट—अण्डों की भुर्जी।

* पापा (papa)—पिता। मामा (mama)—माता।

*तजि कै निज इतिहास-पुराना, कविकुलगुरुकृत ग्रन्थ महाना।
†मिल्टन-सेक्सपियर-अनुसीलन, करहिं मूढ़ करि नैन-निमीलन॥
परकिय गहि तासन कछु भावा, परसंस्कृतिहित धरि हिय चावा।
देवभूमि भारत कहँ त्यागी, होवहिं आंगल-छिति अनुरागी॥
तजि निज बसन-भाव अरु भाखा, चाहत मूढ़ मान निज राखा।
सो जनु सोचि निंब कहँ दाखा, चाहत मधुर सुधारस चाखा॥
देसभगति सों मनुज बिहीना, होवहिं पर-अधीन अति दीना।
बिसठा-कृमि सम परम मलीना, जापहिं जग महँ जीवन दीना॥

पराधीन जा कर अहैं, भोजन - बसन - विचार।
मूढ़ नराधम जानिये, निपट धरा को भार॥२३॥

पराधीनजन सासक केरा, गुन तजि अवगुन गहि बिनु देरा।
करहिं अनृत-आलस सन प्रीती, बिसरि सकल आरजजनरीती॥
करहिं सकल निजकाजबिहारा, सासकजनकर कृपा-अधारा।
स्वावलंब तजि होय अपंगा, बिघन निरखि करि साहस भंगा॥
धन-कृसि-बनिज हेत सब काजू, छाँड़ि सकल उन्नति कर साजू।
सासकमुख प्रति तकि दिनरैना, कृत्रिम लहहिं भोग-सुख-चैना॥
सासक पै संकट जब आवै, निज-हित-काज देस तजि धावै।
पर-अधीन जन निर-अवलंबा, सुमिरहिं निज ताता अरु अम्बा॥

---

* कविकुलगुरु—कालिदास, रघुवंश आदि महाकाव्यों तथा शकुन्तला आदि प्रसिद्ध नाटकों का कर्त्ता।

† मिल्टन—प्रसिद्ध अंगरेज़ कवि—पैराडाइज़ लॉस्ट नामक महाकाव्य का लेखक।

शेक्सपियर—प्रसिद्ध अंगरेज़ नाटककार व कवि। हैमलेट, मैकबेथ आदि दुःखान्त व मर्चेण्ट आफ वैनिस आदि सुखान्त नाटकों का कर्त्ता।

अरथ-कृच्छ्र अनुभव करैं, अन्न-बसन कर हानि।
पर-अधीन जन नित सहैं, परमुख-ताकन-ग्लानि ॥२४॥
भारत-गौरव बेद-पुराना, बरनहिं बिबिध मधुर उपखाना।
जनमभूमि सुरसन्तन केरी, धरमभूमि पावन अति हेरी॥
करमभूमि आरजजन केरी, पुन्यभूमि ग्यानीजन केरी।
जवन-चीन-आंगल-जन ग्यानी, ग्यान-स्रोत कहि बहु सनमानी॥
बिस्व-प्रथित भारत बसुधारा, बहत जहाँ दधिपायसधारा।
देत जगत कहँ अन्न अपारा, बाँटत ग्यान-बिभव सुखसारा॥
कलि महँ धन-संपति सब नासी, लोप भई दधि-पायस-रासी।
अन्न-अभाव-कस्ट अति भारा, ग्यान-हेत कर सतत पसारा॥
*जगतगुरू भारत रह्यो, देय धरम-उपदेस।
तासु तनय संस्कृत पढ़ैं, सादर जाय बिदेस ॥२५॥
देखहु दारुन दैव-कलेसा, भारतसुत अब जाय बिदेसा।
निगमागम-इतिहास-पुराना, पढ़हिं बिदेसिन-सिस्य-समाना॥
बहत छीर जहँ सरितसमाना, तहँ अब तक्रहु दुर्लभ जाना।
अन्न-भंडार जासु भरपूरा, ता सुत असन न पावहिं पूरा॥
चक्रबरति जहँ भये नरेसा, सासन करत तहाँ मँडलेसा।
सुभट भीम-अरजुन जहँ भारी, कादर तहँ छत्रियपदधारी॥
भामासाह बनिक बहु-दानी, भयो देस गौरव-अभिमानी।
तहँ स्वारथरत कृपन महाना, अरथकीट सम बनिया जाना॥
दास भये हनुमंतसम, सेवाधरम-प्रवीन।
कलिमहँ अब सोऊ भये, सेवाधरम-बिहीन ॥२६॥

---

* एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ (मनुस्मृति)

प्रजापाल रघुनाथसमाना, जनरंजक माधव भगवाना।
प्रजा-हेत करि सरबस-दाना, आपद महँ संतत मुद माना॥
कलिमहँ लखहु तासु संताना, जन-पीड़न निज करतब जाना।
पीयुससम गनि भोगबिलासा, बिससम गुनि परमारथ-आसा॥
होयँ बिसयलंपट दिनराती, बृजिन-बंधु अरु धरम-अराती।
लाय लगान प्रजाजन-सोसन, करहिं कृपन इव निज तनपोसन॥
त्यागि प्रजाजन-न्याय-बिधाना, करहिं बिबिध सडजंत्र महाना।
*लोक-बचन चरितारथ जाना, प्रजा होय खलु भूप समाना॥

अस बिधि कलियुग महँ नसे, धरम नीति बिबहार।
फैले पुनि बिसबेलि सम, कुमति-अनय-बिभचार॥२८॥

भारत-दीनदसा तब पेखी, उपजी हरि-हिय दया बिसेखी।
करन हेतु ता कर उपचारा, जगतपिता उर निसचै धारा॥
बरन-धरम अरु नीति-बिहारा, आरजजन-समुचित-बिबहारा।
ता कर थापन महँ चित दीना, धरम-उधार-मनोरथ कीना॥
मोहन तब मोहन-तनु धारा, हरनहेतु भारत-दुख-भारा।
कलिकृत बिसम धरम कर हानी, टारन सुभ इच्छा मन आनी॥
धरमपाल निज बिरद सँभारा, चाहत ईस धरम-धुरधारा।
नासन-हित बृजिनासुर भारा, मधुसूदन मानव-तनु धारा॥

सतजुग प्रभु बामन भये, त्रेता महँ पुनि राम।
द्वापर महँ माधौ भये, कलि मोहन सुभनाम॥२८॥

बामन प्रभु बलिकर हरि माना, कीन सुथिर देवन-सनमाना।
लंकापति-बध करि रघुनाथा, कीन समुन्नत रघुकुलमाथा॥

---

* प्रजा......समाना = यथा राजा तथा प्रजा।

केसव करि कौरव-कुल-नासा , धरमभानु कर तेज प्रकासा ।
गांधी तिमि करि गौर अधीना , गौरव-पद भारत कहँ दीना ।।
राजन अस गांधी-गुनगाथा , सादर कहि नायो निज माथा ।
मोहन - भगत जवाहिरलाला , कहे बचन जनु मानिकमाला ।।
बापू - संग रहे बहुकाला , पेखत तासु चरित्र निराला ।
गौरव तदपि तासु नहिं जाना , चकित रहे लखि चरित महाना ।।

महाजनन कर होत है , देवनसम अनुभाव ।
छुद्र मनुज जानैं कहा , तासु अलौकिक भाव ।।२९।।

जिमि नभजोत भानु-परकासा , अनुभव-हित बिरथा करि आसा ।
होवत अंत निरास महाना , तिमि प्राकृतजन-उद्यम जाना ।।
फल जिमि मधुर उच्चतरुसाखा , लग्यो चहत बामननर चाखा ।
सफल होत नहिं तासु प्रयासा , अनुभव करत निदान निरासा ।।
तिमि प्राकृत-जनमन-अभिलाखा , सुजनचरितपीयुस चह चाखा ।
बिनु पर जिमि खग उड़न-प्रयासा , बिफलहोयतिमि तिनकरआसा ।।
गांधी-जस जस उदधि अपारा , मम मन पथिक निरास्रय भारा ।
तुव प्रसाद बोहित जदि पावै , सागर पार समुद करि जावै ।।

गांधिभाव-सागर अहै , अति गभीर गतथाह ।
मरजीवा तो सम कुसल , करै रतन-चय-चाह ।।३०।।

सुभ-बिचार-रतन कर माला , सुन्दर सुभग अनूप बिसाला ।
सुजनन - हियमंडन मनभावा , जौहरि बिरचि परम मुद पावा ।।
तासों रतन - सेस कछु मोही , देहु कृपा करि बिनवौं तोही ।
गांधिभगत सरदार पटेला , कीन समरथन तासु सहेला ।।
पुनि अजाद अनुमोदन कीना , गांधि-बिचार-मथन-रस-भीना ।
राजन कहहु मोर हित लागी , मम पर गांधिचरन-अनुरागी ।।

तासु बिनय सुनि राजन बाबू, राखि सकै नहिं निज मन काबू।
सुमिरि गाँधि गुनकरम सुभाऊ, पावन सुर-समान परभाऊ॥
बिस्व-प्रेम सुभ भावना, सत्यअहिंसा - प्रेम।
सठजन प्रति नित साधुता, अटल दया कर नेम॥३१॥
आपुन प्रति पुनि प्रेम अपारा, सोक-प्रवाह न सकहिं सँभारा।
देह पुलक भरि लोचन वारी, रुँधत कण्ठ अस बाक उचारी॥
मीत भये तुम सुरपुरबासी, भूतल तजि निजजस अविनासी।
मम हिय दहत बिरह-दुखदावा, रैन चैन नहिं दिन सुख पावा॥
सुमिरि तुमार अमित उपकारा, उमड़त मम हिय सोक अपारा।
मन महँ पुनि गुनि तव उपदेसू, धीरजराखन - हेत निदेसू॥
निज मानस कहँ ढाढ़स देई, धीरज-धरम सुखद सुभ सेई।
राखन-हित तुव भगतन-माना, चहहुँ कछुक तुव भाव बखाना॥
मो कहँ आसिस देउ अस, गूढ़ तोर सिद्धान्त।
समुझि परै मो कहँ जथा, कहौं तथा अभ्रान्त॥३२॥
पुनि निज बंधुन कहँ तिन भाखा, गांधि - बिचारसोमरस चाखा।
जो तुम चहहु देय अवधाना, सुनहु गांधिमत मंगलखाना॥
प्रथम कहौं जगदीस सरूपा, अज अबिकारि परम सिवरूपा।
सतचितआनँदरूप सुहावा, जासु सुजस स्तुति संतत गावा॥
सिरजत धारत नासत स्वामी, बिस्व-प्रपञ्च प्रभु अन्तरजामी।
सत्य सनातन बल-बुधि-धामा, अलख निरंजन हरि सुखधामा॥
धरम राखि अधरम सब घालै, संकट महँ सरनागत पालै।
बिप्रधेनु - सुरसन्त - सहाई, सतत भगतसंकर जगराई॥
सिरजन - धारन - नासकर, अमितरूप जगभूप।
हिम तुसार बरखा-उपल, नीर एक बहुरूप॥३३॥

कुंडल - कंकन - नूपुररूपा, भूसन बनहिं अनेक अनूपा।
मूल-अधार हेम तिन केरा, तिमि बहुरूप ईस जग हेरा ॥
धवलरूप दिनकर-आलोका, भाजनभेद विविध अवलोका।
जगपति तिमि गतसकलबिकारा, मायासबल रूप बहु धारा ॥
नाम विविध जगदीस्वर एका, गुन लखि करहिं मनीसि विवेका।
इन्द्र बरुन जम रुद्र गनेसा, ब्यापक ब्रह्म रमेस महेसा ॥
रामकृसन केसव जगदीसा, अहुरमजद खालिक बुध ईसा।
माधव मधुसूदन असुरारी, हृसीकेस अच्युत त्रिपुरारी ॥

जदपि नाम वा कर सकल, अभिमतप्रद अभिराम।
मोहन कहँ भावै परम, रुचिर नाम स्रीराम ॥३४॥

*कहत रकार धरमरति होवै, कढ़त अकार कुमति सब खोवै।
उचरि मकार लहै नर आसा, राम कहे ध्रुव पातकनासा ॥
धरमअरथ कामरु अपवरगा, जियत लोकसुख मरि सुभ सुरगा।
देवत रामनाम सुखदाई, निगम-पुरान कहहिं मुनिराई ॥
रामनाम संजीवन चारू, टारत पापगरल अति मारू।
रामनाम सुरसरि-पय रूरा, पातक-पंक पखारत पूरा ॥
रामनाम पीयुससम जानौ, भवरुज कर परमौसध मानौ।
रामनाम सुभ मंत्र प्रभाऊ, कलि-अहिगरल टरत सबकाऊ ॥

रामनाम महिमा अमित, जानै बिरला कोय।
जा कर पुन्नप्रताप सों, राम कृपाजुत होय ॥३५॥

निरगुन ब्रह्म कहि नेति बखाना, बेदव्यास-स्रुति-संत-पुराना।
मन बानी सन जाय न जाना, सूच्छम परम अलख तत माना ॥

---

* राम = र + अ + म; र = रमण, रति, प्रेमभक्ति। अ = नकारात्मक। म = लक्ष्मी, कल्याण, सफलता, सिद्धि।

सोउ सगुनतनधारनरागी, होय जगतपति जन हित-लागी
जब जब होय धरम कर हानी, बाढ़ँ असुर अधम अभिमानी
पावहिं कस्ट सन्तसुरधेनू, गनहिं ताहि दुरजन पद-रेनू
भ्रस्ट-अचार प्रजाजन होवैं, नय-बिचार सासकजन खोवैं।
तब तब जनम लहत जगदीसा, धरम-सरनि थापन-हित ईसा
सन्तसमाजरछनहित स्वामी, नासनहित दुरजन खलकामी।

धरमराज थापन करै, करि पातक - संहार।
मानव-लीला सुभग करि, हरत धरा को भार ॥३६।

राम धरममरजादासेतू, राम बिबुध-भूसुर-कुलकेतू।
राम निसाचरबंस - कृसानू, राम अहहि पातकतम-भानू।
निगमागम सब राम रचाये, नरहित धरम-पन्थ निरमाये।
ग्यान-भगति अरु करम-सरूपा, जासों मनुज तरहिं भवकूपा ॥
ग्यान सो जानहु तत्त्वबिबेका, मिथ्या जग साँचो हरि एका।
भगति मनुज-आतमहितसाधन, भाव-अनन्य-ईस-आराधन ॥
पापबन्ध - मोचनहित सोई, तीछनधार खडगसम होई।
तासु सहाय करम सुभ जानौ, सुखसंपतिसाधन जग मानौ ॥

ग्यान करम अरु भगति कर, सुभग समन्वय कीन।
गीता महँ स्रीकृस्न प्रभु, सतत धरम-पथ-लीन ॥३७॥

ग्यानी कहँ प्रभु गौरव दीना, तासु रूप आतमसम चीना।
पै अतिकठिन ग्यान-पथ माना, होय सुलभ नहिं निरगुन ग्याना ॥
करम-पन्थ पुनि कठिन बखाना, ता महँ होवहिं संसय नाना।
इस्टकरम - जपहोमविधाना, जासों होय मनुज कलयाना ॥
तासु करन महँ कस्ट अपारा, होय अरथछय अतिसय भारा।
सरबसुलभ पथ भगतन केरा, जा महँ चलत मनुज प्रभुप्रेरा।

ईससहाय पाय अति रूरा, आतमसुख पावत भरपूरा।
भाव-अनन्य भगति अति ऊँची, टारत हरिजन-बिपद समूची॥
*जोगछेम-साधन करैं, तासु आप जगदीस।
सुभ बिचार मन महँ धरैं, टारैं भाव खबीस॥३८॥
करमभगति अरु ध्यान सुमेला, उत्तम अहहि उपाय अकेला।
जग महँ मानव-उन्नति-हेतू, बिसम भवोदधि-तारन-सेतू॥
तिन कर सुभ निसकरस अनूपा, गीता करम-जोग-सुभ-रूपा।
बरनन कीन आपु भगवाना, भवरुजभेसज कृपानिधाना॥
†करम माहिं अधिकार तुमारा, फल पै नहिं किंचित निरधारा।
करम-बिपाक-हेतु जनि होवै, अकरमनिरत समय मत खोवै॥
अरजुन-मिस प्रभु कीन निदेसू, करमजोग-साधन-उपदेसू।
मानव करम करै निसकामा, फलअभिलाससकलतजिबामा॥
प्रभु-अरपित करि करम सब, तजि कै फल अभिलास।
करमजोग साधन करै, आतमभाव-बिकास॥३९॥
मानस जासु बसै संतोसा, पाय कस्ट नहिं मानत रोसा।
सुख-अभिलास करै नहिं कोऊ, बीतरागभय संतत जोऊ॥
संपद-बिपद एक सम जानै, हरख-बिसाद निकट नहिं आनै।
संजमजुत नित करै बिहारा, माटी-कंचन गनि इकसारा॥

---

* अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ (गीता)
योग=अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति।
क्षेम=प्राप्त वस्तु की रक्षा।

† 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥ (गीता)

लाभ-अलाभ मान-अपमाना, जस-अपजस पुनि जानि समाना।
मीत-अराति गनत सम जोऊ, सुमनहार-अहि भेद न कोऊ ॥
विप्र-धेनु-करि-कूकुर माहीं, भेद-द्रस्टि जाकर कछु नाहीं।
ईसभगत संतत मुद मानै, पर-उपकार करम निज जानै ॥

अभय-अहिंसा-दम-दया, सत्य-प्रेम-तप-दान।
धीरज-बल-सुचिता-छिमा, सांति-अलोभ-अमान ॥४०॥

उत्तम गुन अस धारत जोऊ, करम-जोग-रत होवत सोऊ।
नर-सुधार-हित करम अनेका, निगमागम बरने सबिबेका ॥
ब्रह्मचरज - असतेय - अलोभा, सत्य-अहिंसा गुनगन सोभा ॥
जम-गुन नाम तासु पहिचाना, निजम-समूह अवर पुनि जाना ॥
तप-संतोस-सौच अतिपावन, भजन-पाठ अतिसै मनभावन।
जो नर चाहत निज कल्याना, पर-उपकार करै सुभ नाना ॥
स्वारथ छाँड़ि करत उपकारा, मानव पाय सुजस-फल भारा।
†पर-उपकार धरम कर सारा, परपीड़न पातक अतिभारा ॥

धरमसार बरनन कियो, भारत ब्यास मुनीस।
आतमसम पर जानिकै, छाँड़ौ करम-खबीस ॥४१॥

कलि महँ लखिय धरमकृत भेदा, जासों उपजत कस्टरु खेदा।
मानव कहँ मानव रिपु बूझै, कूकुर सन जिमि कूकुर जूझै ॥
हृदय राखि स्वारथ अरु डाहा, चहहिं करन परस्वारथ दाहा।
बैरबिरोधअनल दुखमूला, जारत मनुजसमाज समूला ॥
भारत जिन गारत करि डारा, खंडनदुख दीनो अति भारा।
तिन कर धरम मूल नहिं भाई, जानहु संप्रदायसमुदाई ॥

---

† 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।'
(महाभारत)

धरम अहै संतत सुखमूला, संप्रदाय साजनहियसूला।
धरम-अधार प्रेम कर भावा, संप्रदाय स्वारथ उपजावा॥

संप्रदाय - सिच्छा अहै, आपुनग़ैर - बिचार।
धरम-सीख अस जानिये, सकल बिस्व परिबार॥४२॥

†धारन मूल धरम सुभ बरना, इह परलोक-समुन्नतिकरना।
§दस लच्छन ता कर सुखदाई, बिसद कहे मनुराज बताई॥
धीरज - समदम - साँच - अकोपा, सौच - छिमा - अगयानबिलोपा।
तस्करभावतजन सुखदाई, बुद्धि-बिबेकसमुन्नति पाई॥
स्रुति-स्मृति-सुजनअचारबिचारा, आतमहितकारज निरधारा।
*धरम चतुरबिध निरनै कीने, कारज सकल होयँ समिचीने॥
निगमागम - इतिहास - पुराना, धरमतत्त्व अस कीन बखाना।
ता कहँ भूलि मनुज अनजाना, भोगहिं निस दिन बिपद महाना॥

जोउ धरम-रच्छा करैं, निज करतब सुबिचार।
धरम तासु रच्छा करै, दुरित सकल करि छार॥४३॥

कहत जवाहिर पुनि मृदु बानी, सरधा - बिनयमधुररस - सानी।
गाँधि-तत्त्वविद्या तुम जानी, राजन बाबु सकलगुनखानी॥
धरमतत्त्व तुम बिसद बखाना, इक रहस्य अब चाहहुँ जाना।
बरनधरम - मरजादा जोऊ, बेदबिहित जानत सब कोऊ॥

---

†धारणात् धर्मः (निरुक्त)

§मनुस्मृति में धर्म के लक्षण:—

'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

* 'श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥' (मनु०)

ता महँ द्विज अरु सूद्र बिभेदा , उपजावहिं संतत बहुखेदा ।
करहि समाजदेसकर हानी , नहिं रसना सन जाय बखानी ॥
बापु भयो कलिजुग रिसितूला , जनताहितचिंतक सुखमूला ।
परम पुरातन संस्था जोऊ , तिन किमि कीन प्रमानित सोऊ ॥

प्रेमसहित राजन कह्यो , गाँधिप्रमानित जोय ।
बरनधरम पावन परम , बरनौं तुव हित सोय ॥४४॥

बरनास्रम करतव करि मानव , बस महँ करत प्रकृति निज दानव ।
धरम-करम महँ लगन बढ़ावै , चरित सुधारि परम सुख [illegible] ॥
सिरजनकाल ब्रह्म उपजाये , बरन चतुस्टय अति मन भाये ।
तिन कर कीन पृथक ब्रिवहारा , सहज-धरम-गुनगन-अनुहारा ॥
सौच-सरलता-सम-दम-ग्याना , दया - छिमा - ईस्वरप्रनिधाना ।
स्रुतिअनुसीलन-जप-तप-दाना , बिप्र-धरम अस बिसद बखाना ॥
धीरज - तेज - पराक्रमसीला , मरजादारच्छक नयसीला ।
करमकुसल दानी अरु सासक , छत्रिय सहज होय अघनासक ॥

गोपालन - खेती - बनिज , सहज बैस्य कर कर्म ।
अवर - बरन - सेवा - करन , सहज सूद्र कर धर्म ॥४५॥

द्विजसुत सहज पढ़त स्रुतिमंत्रा , छत्रियसुत साधत रनतंत्रा ।
बनिकपुत्र तिमि होय बिपारी , सूद्रतनय सेवाब्रतधारी ॥
निज निज सहजकरमअनुसारी , होवैं मनुजबरन जब चारी ।
तब समाज कर उन्नति रूरी , होवत बिस्वसुखी सुखभूरी ॥
करम कोउ नहिं जानिय मंदा , करताबस होवै सुभगंदा ।
करमनिरत रविदास चमारा , भयो सुजसभाजन जग भारा ॥
करमहीन बेनू नृप नीचू , लहि अपमान गही पुनि मीचू ।
सहजधरम गुनहीनहु नीका , अवर धरम गुनजुत तउ फीका ॥

उत्तम मरन बखानिये, रहि निज धरम मँझार।
अवर धरम भयजनक खलु, जदपि होय गुनसार ॥४६॥
आस्रम बेदबिहित पुनि चारी, गृही - तपी - दंडी - ब्रतचारी।
करम करहिं निज निज गुनकारी, होयँ समाज-हेत-हितकारी॥
बरन अवर जिहि कहत अछूता, गांधीमत सो मानव पूता।
हरिजन नाम वाहि सुखकारी, दीनो जनसमाजहितकारी॥
सौच नाम उत्तम गुन एका, नरसमाजजीवन कर टेका।
ता कहँ नर जोऊ अपनावै, सो किमि कहहु अछूत कहावै॥
उत्तम बरन पाप बहु कीना, दलितन कहँ दारुन दुख दीना॥
निजअपराध - निबारन कीजै, उचित स्वत्व हरिजन कहँ दीजै॥
हरिजन अहहिं समाज-पग, तिन बिनु सोय अपंग।
तासों तासु सुधार-हित, मानस धरौ उमंग ॥४७॥
अमृतकौर महिला गुनखानी, बोली सीलमृदुल तब बानी।
कहहु कृपा करि बापु - बिचारा, नारिसुधारहेतु निरधारा॥
जासों होय सबल गुनवारी, होवहिं देस - जातिहितकारी।
राजन तब बानी अस भाखी, जन-उन्नति जननीकर राखी।
महिला होयँ सुसिच्छित जोऊ, सिसुजन करत सुगुनजुत सोऊ।
तासु सुधारि अचार-बिचारा, करहिं देस-हितकारज भारा॥
सफल-गृहस्थ-रूप पुनि नारी, पति कर होय सहायक भारी।
असन-बसन-ब्ययचिंता टारी, गृह-कारज सब सुबिधि सँवारी॥
देसजाति-हित तासु हिय, उपजत प्रबल उमंग।
सेवा-हित परिकर कसै, ह्वै कै निपट निसंग ॥४८॥
पतिब्रत-धरम - रतन बहुमूला, जासु धरोहर अति सुखमूला।
तासु प्रभाव बिदित सुरदानव, हानि कहा करिहैं लघुमानव॥

*जान दसानन सीय-प्रभाऊ, सत्यवान-तिय कर जमराऊ।
होय जहाँ महिला-अपमाना, सो थल रौरवनरकसमाना ॥
†होय जहाँ महिलाजन-माना, सो थल सुखमय सुरगसमाना।
देसधरमप्रिय संजमसीला, परिजनहितमृदुगिरा सुसीला ॥
वीरजनक - भरता - सुतवारी, होयँ जगतपूजित वरनारी।
नारि सुसिच्छित जाति-बिभूसन, अनपढ़ फूहर देस-बिदूसन ॥
सीतासम महिला-रतन, होयँ सुघर जा देस।
सब बिधि उन्नति होय तहँ, नासैं सकल कलेस ॥४९॥
सबल अरोग सिसुजन जोऊ, जोबन पाय बीर नर सोऊ।
देसधरमहितकर करि काजू, करहिं अलंकृत मनुज-समाजू ॥
नारि सबल जननी तिन केरी, तासों देसभगत बिनु देरी।
‡मातृसदन थापित करि रूरे, सिच्छाहित साधन करि पूरे ॥
जाति - सुधारकरम अपनावैं, इह-परलोक सुजसफल पावैं।
§जीजा देय सुघर उपदेसू, कीन तनय सिवराज नरेसू ॥
संजय घर आयो रन हारी, धीरज-साहस-तेज बिसारी।
$बिदुला तासु बीर महतारी, भेज्यो रन महँ पुनि फटकारी ॥

---

* सत्यवानतिय = सावित्री, जिसने अपने सतीत्व के प्रभाव से यमराज को परास्त किया।

† 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। (मनुस्मृति)

‡ मातृमन्दिर अथवा Maternity Homes.

§ जीजा = शाहजी भोंसला की वीर पत्नी, शिवाजी की माता जीजाबाई।

$ बिदुला और उसके पुत्र संजय की कथा महाभारत में है। (उद्योग पर्व)

जाय बिजय पाई तहाँ, लरि अराति के संग।
बीरनारि-परभाव लखि, रहे सुभट सब दंग ॥५०॥
जगजीवन पुनि स्रमिकन नेता, बोल्यो बचन बिनय-समवेता।
कलिजुग महँ धनिस्रमिक बिभेदा, नरसमाज उपजावहिं खेदा॥
बापुकथित कछु तासु उपावा, सुनन हेत मो मन अति चावा।
राजन तब सुन्दर गिर बोली, देवहुँ भेद सकल द्रुत खोली॥
धनिक-स्रमी कर अनुचित रारा, करत समाजअहित अति भारा।
सहज उपाय तासु इक जाना, लाभ गहैं न धनिक मनमाना॥
देयँ स्रमिन कहँ समुचित भागा, होय परस्पर सुभ अनुरागा।
निज कहँ गनि समाज कर अंगा, करैं समाजहितकाज अभंगा॥
धनिक-स्रमीजन मेल करि, जेतो करहिं प्रयास।
अन्न-अरथकर देस महँ, तेती होवहि आस ॥५१॥
कृसि-प्रधान भारत-स्रम माना, गौन प्रकार अवर स्रम जाना।
तासों कृसि-सुधार सुखदाई, कीने होवहि देसभलाई॥
करि निज खंडितखेतसुमेला, बरति बिग्यानिक ढंग सहेला।
उत्तम खाद डारि बसुधा महँ, अन्न अधिक उपजावहिं वा महँ।
धेनु-बृसभकर जाति सुधारी, करैं कृसक धन-संग्रह भारी।
गोपालन सन दधिघृतछीरा, लहि कै होयँ बलिस्ट सरीरा।
करिकै स्रम धनधान्य बढ़ावैं, देसलाभहित हाथ बटावैं।
अन्न-कृच्छ्रदुख दूर हटावैं, भारत महँ सुखसंपति लावैं॥
कृसि-प्रधान भारत मही, जीवत कृसक-अधार।
तासु समुन्नतिमूल है, ग्रामोद्यान - सुधार ॥५२॥
करघा अरु चरखा सुखदाई, कृसकजनन कर चरम सहाई।
कृसक रहैं खटमास निकाजू, तिन सन लहैं सकल सुखसाजू॥

तिय-सिसु-जरठ कृसकपरिवारा, चरखा करि प्रयोग सुखसारा।
बसन स्वनिर्मित करैं प्रयोगू, पुनि समाजहित बस्त्रसंजोगू॥
बसनबिदेसि गरलसम जानो, भारतहितघातक खलु मानौ।
तासु निवारन सहज उपाऊ, चरखा तुम दिन-रैन चलाऊ॥
चरखा अहहि परम सुखसारा, देस-प्रगति कर मूल-अधारा।
कृसकजनन कर आय बढ़ावै, बसन-बिदेसिप्रभाव घटावै॥
अवर स्रमी-जन ग्राम महँ, तच्छक रजक लुहार।
तिनकर पुनि बिवसाय कर, जानहु उचित सुधार॥५३॥
भारतदेस - अधिकतरबासी, अहहिं बहुलतर ग्रामनिबासी।
राष्ट्र-अधार गाँव गनि तासों, करहु काज उन्नति लहि जासों॥
होवहिं सुखसमृद्धि सन पूरे, ग्रामीजनजीवन अति रूरे।
आयहेतु नगरन महँ जाई, प्राकृत धन निज अरुज गँवाई॥
तजि कै ऋजुसुभाव सुखसारा, होयँ कपटजुत पतित अचारा।
मदिरा-द्यूत-कलहरत दीना, रिन गहि करहिं जियन सुखहीना॥
उन्नत करि कछु ग्रामिक-धंधे, राखहु तिनहिं गाँव सन बँधे।
पठन-प्रसार करहु तिन माहीं, जाते दुरगुन-दोस पराहीं॥
कलह-द्यूत-मद्पान तजि, रिन अरु पतित अचार।
होयँ सुखी पुनि कछु करैं, कारज देस-सुधार॥५४॥
अबुलकलाम जोरि जुग-पानी, बोल्यो गिर मंजुल सुखदानी।
कहहु मीत तुम बिसद बखानी, सिच्छासरनि गांधि-मनमानी॥
राजन तब मृदु बाक उचारी, गांधि-बिचार सैली सुखकारी।
सुल्करहित सिच्छा सब पावैं, सुभ बिचार मन महँ उपजावैं॥
बिमल करैं आपुन बिबहारा, करैं देसहित समुचित कारा।
सीखैं धनसाधन कछु धंधा, असनबसन कर होय प्रबंधा॥

देसगिरा माध्यम करि रूरा, बिद्यालाभ उठावहिं पूरा।
होयसमयधनब्यय अति थोरा, ग्यान-लाभ पुनि होय न थोरा॥
निज भासा आधार पै, लगै न सिच्छा भार।
अलपकालस्रमवित्त सन, मिलै ग्यान सुखसार॥५५॥
जाकर माध्यम बाग बिदेसी, सिच्छासरनि सो होय भदेसी।
भरि भरि हृदय बिदेसि बिचारा, करत देस-हितनासन भारा॥
जुबक छाँड़ि निज धरम-अचारा, गहहिं बिदेसिन भाव-बिचारा।
रहन-सहन तिनकर अपनावैं, निज मरजाद न चित्त लगावैं॥
देस-गिरा सन होय बिरागा, तजि कै सकल देस-अनुरागा।
गिटपिट करि होवहिं अभिमानी, अलपबुद्धि अति ग्यान-गुमानी॥
बस्तु सुदेसिन सन करि बैरा, गनहिं जाति-बांधव निज गैरा।
परम सुभग निज संस्कृति त्यागी, होयँ कुमति परकिय-अनुरागी॥
तासों आपुन देस-गिर, सिच्छा-माध्यम धारि।
करैं जतन सुभ देसहित, देसभगत सुबिचारि॥५६॥
पढ़ि कै निज साहित निज भासा, करि कै बिमल बिबेकबिकासा।
लहि कै ग्यान-प्रभाकर भासा, करि कै बुद्धिसरोजबिकासा॥
निज संस्कृति सन करि अनुरागा, धारि धरमहित निज हिय रागा।
होवहिं देस - सभ्यता - प्रेमी, जुबक देस-सेवा-हितनेमी॥
भारत महँ भासा बहु पाई, कतिपय पथभूले मम भाई।
कहहिं आंग्ल-भासा अपनावौ, ता महँ निज बिचार पनपावौ॥
या बिधि भासाभेद मिटावौ, सुभ सुराज-पथ-उपल हटावौ।
पै नहिं जानत अस जन भोरे, बानिबिदेसिग्रहनगुन थोरे॥
बाग-बिदेसि ग्रहन सों, हानी होय अपार।
धरम - संस्कृति - सभ्यता, तिहुँ कर होय संहार॥५७॥

भासा प्रमुख भारत महँ एका, बोली बोलहिं जदपि अनेका।
भिन्न-भिन्न प्रांतन के बासी, सिक्ख मराठा अरु बंगबासी॥
राजपूत मैथिल अरु उड़िया, गुजराती तामिल अरु मुड़िया।
भासा प्रमुख अहहि इक हिंदी, भासासकलभाल कर बिंदी॥
तासु अहहिं जुग लेखनसैली, फारसि अरु नागरि अलबेली।
ता मधि तजि कै रार बिसैली, आपुन सक्ति सकल अत्र मेली॥
करहु तास उन्नतिहित काजू, बाढ़ैं जा बिधि देससमाजू।
जब लौं होय न भासा एका, करहि देस किमि उन्नति टेका॥

पढ़ि कै निज साहित्य अरु, निगमागम - इतिहास।
धरम - संस्कृति - सभ्यता, तिहुँ कर होय बिकास॥५८॥

बिद्या पढ़ि सिगरे नरनारी, होवहिं मानग्रहन अधिकारी॥
*मानव बिद्याबिरहित जोऊ, पुच्छबिसानहीन पसु सोऊ॥
बिद्यावर सुन्दर नर पाई, करि कै कछु सुभकरमकमाई।
मनुज-समाज मान बहु पावै, पाय सुजस पुनि अमर कहावै॥
नागर निज करतब पहिचानी, निजअधिकारमरम सब जानी।
आपुन करि कै चरित-सुधारा, सुघर बनाय सकल परिवारा॥
करैं देस उन्ननिहित काजू, जासों होय समृद्ध समाजू।
होय धरम-धन-संस्कृतिबाढ़ा, भ्रातृभाव होवै अति गाढ़ा॥

सिच्छासरनि सुधार सों, होय देसहितकाज।
सुधरै नरनारी - चरित, फूलै - फलै समाज॥५९॥

भाखत पुनि सरदार पटेला, देसभगत गांधी-पटचेला।
पूज्य प्रसाद कही समुझाई, सासनरीति बापु - मनभाई॥

---

* 'साहित्य-संगीत-कला-विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।'
(भर्तृहरिः)

धरम-अधार सासन कर काजू, करि किमि उन्नत होय समाजू।
राजनीति मारग अति टेढ़ा, तासु बिरोधि धरम कर मेढ़ा॥
तिनकर मेल साधि किमि गाँधी, धरमनीतिमरजादा बाँधी।
तब प्रसाद बोले मृदुबानी, धरमनीति अब कहौं बखानी॥
जा कहँ देसपिता अपनाई, ब्रिटिसराज सन कीन लराई।
सत्य-अहिंसापथ गहि रूरा, रिपु कर कीन पराभव पूरा॥

भ्रांतिमूल अस धारना, धरम नीति प्रतिकूल।
धरमनीति सुभ मेल सों, बढ़ै रास्ट्र सुखमूल॥६०॥

सत्यग्यान पुनि सत्यअचारा, ब्रतधारन उन्नति तप द्वारा।
अनुभवग्यान करम उपकारा, रास्ट्रभवन सटथंभ अधारा॥
ब्यक्ति अहै सासनगृहनींवा, ता बल थिर समाज सुखसींवा।
गठित समाज रास्ट्र-उतपादन, होय सुभग जनहित-संपादन॥
प्रजातंत्र सुभ सासन-सैली, ब्यक्ति-सुधारमूल अलबेली।
ब्यक्ति-संघ गनि मनुज-समाजा, कीजै सकल तासु हितकाजा॥
बढ़त समाज रास्ट्रबल बाढ़ै, उन्नतिपथ महँ निज सिर काढ़ै।
उन्नत रास्ट्र देसबलबृद्धि, होय सकल सुखसाधनसिद्धि॥

मानव रास्ट्र-अधार गनि, तिस कर करत सुधार।
धरममूल आचार अस, सासन धरम-अधार॥६१॥

धरममूल सासन जदि होवै, देसबिपद संतत सब खोवै।
करत सदा सुखसाधनबृद्धि, होय जथा अभिमत फल-सिद्धि॥
देस पाय धन-बिभव अपारा, न्याय-उचित साधन-चय द्वारा।
निरबल देसन देय सहारा, करै सतत सुखसांतिपसारा॥
कुटिलनीति छलकपट-अधारा, सासन होय निपट गतसारा।
स्वारथरत लोभी नर जोऊ, करहिं देसहित काज न कोऊ॥

बिनु स्वारथ तिनका नहिं तोड़ैं, स्वारथ लगि पितु सन मुख मोड़ैं।
स्वारथ लगि साजैं सब साजा, स्वारथ लागि करैं सब काजा॥
निज स्वारथ पूरन करैं, तजि सब न्याय-बिचार।
परस्वारथकारज गनैं, संतत निपट असार॥६२॥
तिन सों करन देसहित-आसा, होय जथा नभसुमन-बिकासा।
कारज करहिं सदा धन-आसा, चाहत भोगन बिबिध बिलासा॥
कामकीट तजि धरम-बिचारा, करत दिवसनिसि पतित बिहारा।
बाढ़ै तिनकर अनय-अचारा, फैलत देस माहिं बिभिचारा॥
*सासकजन जस कारज करहीं, सोय प्रजाजन खलु अनुसरहीं।
नासैं सकल धरममरजादा, होवहिं नर नृसंस मनुजादा॥
परकिय तिय-संपति-बसुधारा, गहहिं दुस्टगतधरमबिचारा।
पसुबल कर करि गरब अपारा, देवहिं दीनजनन दुख भारा॥
तनबिकार प्रकटैं जथा, ब्रन अथवा जुररूप।
नय-बिकार प्रकटैं तथा, भयकर क्रांतिसरूप॥६३॥
बिसमरोगहित भेसज भारा, बैद कहैं करि गहन बिचारा।
सासनजुर कर जनहितचिन्तक, गनैं राजबिप्लव सुभ अन्तक॥
जथा अगद सन देह अरोगा, पाय मनुज पावत सुखभोगा।
क्रांति-अनंतर तिमि सब लोका, होय सुखी सब बिधि गतसोका।
नीतिमूल सासन पुनि थापी, प्रकट होत इक रास्ट्र प्रतापी।
नयबिहीन जिमि ब्यक्ति बिसेसा, तजि कै धरम-बिचार असेसा॥
स्वारथरत परकाज बिगारैं, परधन अरु तिय पै कर डारैं।
सबल रास्ट्र तिमि धरम बिहाई, स्वारथनीति कुटिल अपनाई॥

---

* यथा राजा तथा प्रजा।

परधन-परछिति गहहिं खल, करि कै लोभ-प्रसार।
अनुचित आपुन लाभ हित, करैं अनीतिअचार ॥६४॥

लोभ करत परभाव पसारा, सृजत वैर परभाव अपारा।
वैरभाव संसय उपजावै, वैरभाव नर कुटिल बनावै ॥
अनुचितलाभरच्छनहित मानव, पसुबल निज बरधत जस दानव।
करत दिवस-निसि सस्त्रसंभारा, सेनाहित ब्यय करत अपारा ॥
असविधि सकल समरकर साधन, करि एकत्र करत आराधन।
रास्ट्र सबल रनदैवत केरा, तामहँ निज-हित मूढन हेरा ॥
लरहिं परस्पर जिमि गज माते, करि अपकार न चित्त अघाते।
उरझि समर महँ धनजन नासैं, डारैं निज परगर जमफाँसैं ॥

धन-धरनी अरु प्रान कर, होय समर सन नास।
धरम-सभ्यता-संस्कृति, तिहुँ कर रुकत बिकास ॥६५॥

पसरत चहुँ दिसि कस्ट अपारा, करहिं दीनजन करुन पुकारा।
अन्न-बसन कर होय अभावा, बढ़त रैन-दिन रोगप्रभावा ॥
दीन रुजारत त्राहि पुकारैं, बैद-सदन घृत-दीपक बारैं।
लोभ-बिबस सासक बलधारी, होयँ प्रजाजन-धन-अपहारी ॥
बिगरे सासक दंडअभावा, बाढ़त निसदिन अनयप्रभावा।
चोरचकार-छली-बटमारा, करहिं सहज परधन-अपहारा ॥
निसाकाल जिमि बन महँ स्वापद, करहिं उपद्रव होय निरापद।
दंड बिना तिमि सासक कूरा, करहिं प्रजाजन-सोसन पूरा ॥

अनुसासन नीतिग्यजन, कहैं राज कर नींव।
राज सबल नासै नसे, अनुसासन सुखसींव ॥६६॥

अनुसासन कर मूल-अधारा, होय सतत नयमूल-अचारा।
होयँ प्रजा अरु सासक दोऊ, नीतिपरायन संतत जोऊ ॥

होय देस-सासन अति रूरा, देसहु सुखसमृद्धिभरपूरा।
प्रजातंत्रसासन सुखमूला, होय सदा जनमतअनुकूला॥
सासक अरु सासित प्रिय भाई, करहिं परस्पर प्रेम-सगाई।
नीतिधरम - अनुकूल बिहारा, करहिं सदा स्वारथ तजि सारा॥
होयँ प्रजा कर प्रतिनिधि सासक, सतत प्रजाहितभावउपासक।
करहिं प्रजाहितसाधनजोगू, चहहिं देससुखसंपतिभोगू॥

सासकगन अरु प्रकृतिजन, करैं परस्पर मेल।
देस-दुरित सिगरे टरैं, यह सिद्धान्त अपेल॥६७॥

ग्राम ग्राम पंचायत थापैं, पंचन कर सुभचरितहि मापैं॥
धन कर नहिं कछु करैं बिचारा, देयँ तिन्हैं समुचित अधिकारा॥
जा बिधि करैं कलहनिपटारा, नीति - बिचार - धरमअनुसारा।
निज प्रतिनिधि चुनि ग्राम-समाजू, साजैं जनपद-पंचन साजू॥
जनपद-पंच पुनि करैं चुनावा, प्रांतसभा कर करैं बनावा।
प्रांतसभा पुनि करि निरबाचन, करैं देस-परिसदनिरमापन॥
देस-सभा पुनि चुनै प्रधाना, देसप्रमुख सासक सोउ जाना।
प्रांत-प्रमुख - सासक - निरधारन, तासु निरंकुसराजनिबारन॥

देस-प्रमुख कर अहहि अस, न्यायोचित अधिकार।
रास्ट्र - सभाकरतब अहै, न्याय - बिधान - सुधार॥६८॥

रास्ट्र-सभा महँ प्रतिनिधि जोऊ, मुखिया एक चुनैं निज सोऊ।
सोउ प्रधान-सचिव पद पावै, सचिव-सभा निज आपु सजावै।
सासन - करम सँभारत सोऊ, करत देस-हितकारज सोऊ।
प्रान्त-प्रमुख तिमि प्रांतन माहीं, सासनक्रम निज चारु चलाहीं॥
सकल देसहितकारज जोऊ, साधत देस-सासन सब कोऊ।
रेल-तार अरु डाकबिभागा, बहिरनीति - रच्छाभबिभागा॥

सकल देस - ब्यापारबिबर्धन, जंत्र-कलादिक कर संबर्धन।
सकल देसहित-अरथउपार्जन, सिच्छा-सरनि-दोषपरिमार्जन॥
अहहिं देस-सासन बिसय, एते सकल बिभाग।
सेस सकल थानिक बिसय, परैं प्रांत के भाग॥६९॥
भूप अनेक तथा रजवाड़े, ब्रिटिसराजपालित जस पाढ़े।
तिन कर नहिं सुराज महँ काजू, मलिन करहिं जनतन्त्रसमाजू॥
करहिं बिबिध बिध अनयअचारा, छीनहिं जनता कर अधिकारा।
बिलयन तासु उचित खलु तासों, जन अधिकार लहैं सम जासों॥
लिखित बिधान देस कर एका, होय सकल सासन कर टेका।
लखहु तासु पुनि मूल-अधारा, मौलिक जनता कर अधिकारा॥
*चार प्रकार तासु बुध जानैं, प्रथम भाव-स्वातन्त्र्य बखानैं।
बहुरि करम-भासनअधिकारा, धरम-बिहार इच्छा-अनुसारा॥
न्यायदस्टि महँ होयँ सब, मानव एक समान।
रावरंकअधिकार कर, रच्छा करै बिधान॥७०॥
अहहि सुराज सदा सुखसारा, जासु मूल सुभ न्यायबिचारा।
सत्य-अधार थिर सासन जोऊ, जनताहित सुखसाधन सोऊ॥
करहिं प्रजा-सासक सहयोगू, उभय छाँड़ि छलकपट-प्रयोगू।
सासक करहिं प्रजाहितकाजू, जनता पालत नियम-समाजू॥
सासन-हित देवहिं करदाना, सफल करन हित न्याय-बिधाना।
प्रजा तनय इव सासक पालैं, जनताहितघातक रिपु घालैं॥

---

* संयुक्तराष्ट्र अमरीका के भूतपूर्व प्रधान रूजवेल्ट द्वारा वर्णित ४ प्रकार की स्वाधीनता—१ विचार-स्वातन्त्र्य २ क्रिया-स्वातन्त्र्य ३ भाषण-स्वातन्त्र्य ४ धार्मिक विचार तथा व्यवहार की स्वतन्त्रता।

†गहहिं प्रजा सन करधन जोऊ, देवहिं तिनहिं सहसगुन सोऊ।
गहत धरा सन जल जिमि भानू, देय पलटि पुनि सहस-प्रमानू॥
करहिं प्रजाजन जनकसम, सासक-गन-सनमान।
बचन जानि हितकर अमित, सादर करहिं प्रमान॥७१॥
गाँधि नियम अस संतत राखा, सत्य-अधार चहत फल चाखा।
सतत सुराज-सुख-साधन केरा, साँच बिना निसफल सुख हेरा॥
‡साँच बिना नहिं चहहुँ सुराजू, साँच बिना निसफल सुखसाजू।
भावत नहिं मो कहँ परराजू, चहहुँ देसहित आपुनराजू॥
पै नहिं मोर अनृत सन काजू, साँच बिना बिसमय सुखसाजू।
हेमचसक महँ गरल समाना, अनृतमूल सुखसाधन जाना॥
साँच बिना निसफल सुरराजू, नाहिन मोर मुक्ति सन काजू।
भावत नहिं त्रिभुवन कर राजू, सहित सकल सुखसाधनसाजू॥
जियन लागि अस गाँधि कर, रही सदा सुभ टेकु।
सत्य-पन्थ सों टरहुँ नहिं, पाय प्रलोभन नेकु॥७२॥
धरमनीति कर मेल अनूपा, करि कै गाँधि सत्यप्रियभूपा।
सत्याग्रह-प्रयोग करि भारा, सकल बिस्व बिस्मित करि डारा॥
ब्रिटिसराजबल अमित अपारा, बिभव अमित आयुधचय भारा।
एकल गाँधि गहि सत्य-अधारा, सस्त्र अहिंसा कर कर धारा॥
समर-सुराज हेत तिन कीना, ब्रिटिसराज-मद चूरन कीना।
ऋतप्रभाव पुनि पाय सुराजू, थापनहित जनतन्त्रक-साजू॥

---

† 'प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥ (रघुवंश-कालिदास)

‡ 'सत्य के बिना स्वराज्य प्राप्त की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं'—(म० गांधी)

न्यायविधान कर कीन सुझावा, तासु मूल सुभ सत्य बनावा।
दृढ़-अधार भवन थिर जैसे, सत्य-मूल सासन थिर तैसे॥

धरमनीति सुभ मेल सन, थापित कीन सुराज।
धरमनीतिसन उचित अब, तासु प्रचालन काज॥७३॥

नीति-बिसारद राजगुपाला, भाखत पुनि मृदु गिर नयपाला।
बिस्वबिदित सुभ साँति-प्रसारक, गाँधि भयो सुभ प्रेम-प्रचारक॥
सत्यअहिंसापरक संदेसू, धरमकरनहित तासु निदेसू।
होय अवसि जगहित कर साधक, बृजिनबृद्धिमारग महँ बाधक॥
रामराज कर सुखद बिचारा, जासु प्रचार कियो तिन भारा।
राजन तासु सरूप बताई, करहु कृपा मो पै अति भाई॥
राजन तब बोले मृदु बानी, राजगुपाल सुनहु गुनखानी।
बरनहुँ रामराज कर सोभा, मानव-मन उपजावन लोभा॥

रामराज महँ सतत सुख, होय न दुख लवलेस।
मानव-तन-मन-आतमा, होवहिं बिगत-कलेस॥७४॥

प्रेमभाव-डंका सुभ बाजै, न्याय-भेरि-धुनि चहुँ दिसि गाजै।
सबल मनुज नहिं निबल सतावैं, प्रेम परस्पर अधिक जतावैं॥
बैठि परस्पर भेद मिटावैं, बैर-बिरोध न कहुँ उपजावैं।
बनिज-बिहार नीति-अनुकूला, करहिं न किंचित् नय-प्रतिकूला॥
करहिं कुटिलबिवहारनिसेधू, बैरभाव - मत्सरप्रतिसेधू।
मानव कहँ नहिं मानव मारै, दानव-भाव सकल तजि डारै॥
सांति-समीर बहै सब ओरा, समर-प्रभंजन करहि न सोरा।
जीवहिं प्रीति सहित सब लोका, पावहिं मोद सकल गतसोका॥

सांतिनीर सों समन करि, बैरबह्नि दुखमूल।
सुखी बसैं मानव सबै, पाय प्रेम सुखमूल॥७५॥

सुखद सदा जग बहैं समीरा, बरसैं पयद समय पै नीरा।
सस्य-स्यामला छिति नित सोहै, प्राकृत-सुखमा नर-मन मोहै॥
ऋतु-अनुकूल समय-अनुसारा, देवहिं अमित अन्नफलभारा।
घातक रोग न देखिय एकू, आधि-व्याधिसंकट नहिं नेकू॥
विधवा-दीन-अपाहिज जोऊ, कहुँ दुख-दाब दहैं नहिं सोऊ।
सासकजन तिन कर दुख टारैं, खलजनकृतपातक परिहारैं॥
सिच्छारहित मनुज नहिं कोऊ, निज स्रमलाभ लहहिं सब कोऊ।
सुखसन बसहिं रंक अरु राऊ,, अन्न-बसन-गृह-कस्ट न काऊ॥

सब नर निज-आजीविका, पाय बसैं सुखसंग।
भ्रातृभाव सन नित रहैं, न्हायें प्रेम-तरंग॥७६॥

बिकट बैरबाधा सब नासैं, प्रेमभाव चहुँधा परकासैं।
मधुर बचन बोलैं सब लोकू, हरहिं अवर मनुजन हिय-सोकू॥
स्वारथ तजहिं परारथ लागी, जनहित कस्ट सहहिं बड़भागी।
परमधरम मानहिं उपकारू, ता बिनु गनहिं जियन निजभारू॥
पर-अधिकार गहै नहिं कोऊ, धरम-बिहार करैं सब कोऊ।
चहुँ दिसि धरम-दुंदुभी बाजै, सदगुन-सहित साँच छिति साजै॥
बिस्वप्रेम कर भाव बिसाला, नासै सकल समरकृत ज्वाला।
रामराज-महिमा सरसावै, जन-समुदाय सतत सुख पावै॥

प्रजा बसहिं सुख सन सबै, न्यायसील नृप होयँ।
सासक-जन निज धरमरत, करमसील नित होयँ॥७७॥

सासक होयँ न्यायब्रतधारी, सबल सुघर जनताहितकारी।
निरबल कहँ न सतावहिं बीरा, करहिं सदैव हरन परपीरा॥
घूसखोर निरदय अभिमानी, सासक करहिं अमित जनहानी।
सासकजन जहँ न्यायपरीता, होय देस दुखदारिदरीता॥

राजदंडबस करि अपराधी, हरहिं सुजनजनकस्ट-उपाधी।
करहिं देसहित सतत बिचारा, बरधन-हित सुखसांति अपारा॥
सासनचक्र करहिं गतदूसन, होवहिं देसजाति कर भूसन।
तिनहिं सदा प्रिय न्याय-बिचारा, करम करहिं निज धरम-अधारा।

प्रचुर होयँ धनधान्य अरु, सुखसमृद्धि चहुँ ओर।
रामराज भारत लसै, सकल देस-सिरमौर॥७८॥

रामराज मद्यप नहिं कोऊ, अथवा होय कृपन नर जोऊ।
सकल देस महँ तस्कर नाहीं, धरमनिरत नरनारि लखाहीं॥
दीसै पुरुस न कहुँ बिभिचारी, किमि पुनि होवहि कुलटा नारी।
मनुज असिच्छित नहिं कहुँ कोऊ, अथवा होय दुखी जन जोऊ॥
वित्त प्रचुर देवहिं जन दानी, होवहिं नहिं किंचित अभिमानी।
समुचित करम करहिं सब नागर, कारज-कुसल सकल गुन-सागर॥
गतस्वारथ सेवाब्रतधारी, पर-उपकारनिरत नरनारी।
बनिता-बाल-जुबक गुनखाना, देस-धरमहित देवहिं प्राना॥

होयँ अरुज अरु सबल सब, जरठ-जुबक-तिय-बाल।
त्रिबिध ताप सों छूटि कै, सुख सन होयँ निहाल॥७९॥

ऊँच नीच कर नहिं कछु भेदा, करम करहिं सब जन गतखेदा।
स्वारथहीन सकल नरनारी, जनता प्रभु कर अटल पुजारी॥
कारज करहिं जगतसुखसाधक, कबहुँ न होयँ परस्पर बाधक।
ग्यानपियूख पियहिं सुखसारा, उन्नति सब बिधि करहिं अपारा॥
कृसि-बिपार अरु लाभद धंधे, जन अनुसरहिं सत्यब्रत बंधे।
प्रजापाल सासकजन न्यायी, खलघातक साजन सुखदायी॥
देसभगतजन धरमपरायन, पूजहिं देव दरिद्रनरायन।
घर घर होवहिं मोद महाना, क्रंदन-सुर कहुँ परत न काना॥

मानसहित जीवन सबै, निरभय करहिं बितीत ।
दुख-दारिद अनुभव सबै, दीसै सुपन अतीत ॥८०॥
हिन्दू-मुसलिम-सिक्ख-ईसाई, रहैं परस्पर सादर भाई ।
धरम-करम निज निज अनुसरहीं, अवर काज-बाधा नहिं करहीं ॥
संप्रदाय-झगरे सब नासैं, सत्य-प्रेम-आलोक प्रकासैं ।
होय अरथ-उन्नति अस भाँती, लखिय नहीं जाचक जन-पाँती ॥
मनुज-समाज सुसंस्कृत ऐसा, कंचन बिमल खोट बिनु जैसा ।
बिधवा अरु अनाथ नहिं आरत, सुखसंपति-परिपूरन भारत ॥
देस-मुकुटमनिरूप सुहावै, निज प्रभाव पावन जस पावै ।
आंगल-देस-रूस-अमरीका, भारत-जस गावहिं सब नीका ॥
दिनकर-सम भारत लसै, रहै न तमलवलेस ।
तस्कर-सम सिगरे नसैं, दारुन कस्ट-कलेस ॥८१॥
सांति-समेत रहैं सब लोका, सुख-संपति-पूरन गतसोका ।
बिप्र होयँ निगमागमप्रेमी, पूतचरित परकारजनेमी ॥
रच्छा करहिं दीन कर बीरा, हरहिं तुरत आरतजनपीरा ।
बनिक करहिं नित सुद्ध-बिहारा, सूद्रन कहँ सेवाब्रत प्यारा ॥
अहहिं छात्र बिद्या-अनुरागी, संजमसील कुभाव-बिरागी ।
अहहिं गृहस्थ धरमरत नीके, अनुयायी निज कुल-सरनी के ॥
तापस होयँ ईस-अनुरागी, भगतिपरायन बिसय-बिरागी ।
परिब्राजक जनता-हितकारी, स्वारथ तजि मानव-सुखकारी ॥
चार बरन अरु आसरम, निज-निज धरम बिचारि ।
करम करैं निज प्रेम सों, स्वारथ सकल बिसारि ॥८२॥
रामराजमहिमा दरसाई, सोकनिसा निज दूर हटाई ।
प्रेमप्रभाकर-तेज प्रकासा, सन्त-सुजन-हिय-नलिन बिकासा ॥

मंत्र-अहिंसा कर निज साधा, टारी बैर-उरगकृत बाधा।
नाहर-नाद सत्य कर कीना, बृजिन-निसाचर-हिय भय कीना॥
ईसभगति-आयुध गहि हाथा, समर कीन पातक-रिपु साथा।
सम-दम-प्रेम-कुलिस कर धारी, बृजिन-बरूथ समूल उपारी॥
धरमराज थापन जिन कीना, बिमल सुजस त्रिभुवन महँ लीना।
कलिजुग धरम-मेंड़ जिन बांधी, मोहनदास करमचंद गांधी॥

सुरकिन्नर नर गावहीं, जासु सुजस सबिनोद।
तासु चरित बरनन कियो, राजन बाबु समोद॥८३॥

अकनि गांधि-गुन-गौरव-गाथा, सादर कीन सवन नत माथा।
धन्यबाद राजन कर कीना, तासु अनुग्रह बहु मन चीना॥
कहहिं बापु नवजीवनदाता, भारतभाग - पुनरनिरमाता।
देसपिता अति पुन्न प्रभाऊ, जनता कर गुन-करम-सुभाऊ॥
परवर्तित जिन सब करि डारा, आतम-मानभाव भरि भारा।
देस-प्रेम सुभ जोत जगाई, कायरता सब दूर भगाई॥
सत्य - अहिंसापाठ पढ़ाई, बृजिन-रोध कर सक्ति बढ़ाई।
आंगल कहँ जिन दीन चुनौती, पूरन कीन सुराज-मनौती॥

असहयोग कर सस्त्र गहि, प्रेम-कवच सुभ धारि।
सबल बैर-रिपुवार सब, गांधि दिये निरवारि॥८४॥

ताकर गुन गावहु मिलि मीता, जिन रिपु सबल प्रेम सन जीता।
बिस्वप्रेम कर पाठ पढ़ावा, मनुजमात्र कहँ अस समुझावा॥
तजहु मीत सब समर-बिचारा, बैर-अगद नहिं सम-समसारा।
गौतम-सम अस कीन प्रचारा, बैर सों बैर टरै नहिं टारा॥
प्रकट कीन पुनि छिमा-प्रभाऊ, छाँड़त बैर-बीज नहिं काऊ।
देवत ताहि समूल उपारी, सीतल प्रेमतरु सुभ डारी॥

पसुबल-समन छिमा सन होवै, आतमबल ता कर मद खोवै।
असहयोग पातक सन कीना, बृजिन-बिजयसुख देय नवीना॥
तासु चरनरज सीस धरि, चित धरि चरित उदार।
मानस राखि बिचार सुभ, करहु बिमल बिबहार॥८५॥
ध्यानमगन सब छिन इक ठाढ़े, मानहुँ चित्रफलक पै काढ़े।
सुमिरि सुमिरि सुभ बापु बिचारा, देव-समान चरित्र उदारा॥
मनुजमात्र प्रति प्रेम अपारा, निज प्रति प्रनय-प्रदरसन भारा।
उर महँ उमड़ि नेहसरिधारा, नसे सकल हियदोसबिकारा॥
ताछिन बिसद भई नभबानी, धन्य धन्य गांधी गुनखानी।
दुरितदनुज कहँ राम-समाना, बैरसमन हित बुध-सम जाना॥
करमजोग महँ कृस्न-समाना, भगति-जोग महँ नानक जाना।
ईसा इव सुभ प्रेम-प्रकासी, मुहमद अटल ईस-बिसवासी॥
बहु बिधि स्लाघा अस करी, सुरगन गांधि सराहिं।
करहिं आरति प्रेम सन, नहिं गुन गाय अघाहिं॥८६॥
जय गांधि सकल कलि-तापहरं, अघताप भयावह सापहरं।
जय गांधि अहिंसासत्यपरं, बहुमान - मदादिकदोसहरं॥
जय गांधि धरमअवतारधरं, भ्रममूलमतादि - बिनासकरं।
जय गांधि सुराजअधारवरं, दुखदारिद - रोग - नितान्तहरं॥
जय गांधि समाज-सुधारकरं, बहुदीन - दलित - जन-कस्टहरं।
जय गांधि सुदरसनचक्रधरं, सुभ बस्तुसुदेसिप्रचारकरं॥
जय गांधि अविद्यातिमिरहरं, सुभ ग्यानप्रभाकरभासकरं।
जय गांधि समरअभिसापहरं, जय मोहन प्रेमप्रसारकरं॥
न्याय-दयाअवतार सुभ, हिंसा - अनयकुठार।
सत्यधरमपालक परम, कलि - किलबिखसंहार॥८७॥

तत्र प्रसाद अरु राजगुपाला, गांधी-भगत जवाहिरलाला।
अमृतकौर अरु अबुलकलामा, वल्लभभाई सकल गुनधामा॥
सुनि कै मृदुल सार-जुत बानी, मानहु मधुर अभियरससानी।
मानस महँ अतिसै मुद पायो, इस्टदेव कहँ मस्तक नायो॥
सरधासहित कीन ब्रतधारन, सरबस तजि भारत-हित कारन।
तनमनधन सन करि निज काजू, रखिहैं गांधि-दत्त थिर राजू॥
प्रजा-लाभ हित करि सुभकरमा, पूरन करि सासकजन-धरमा।
करिहैं पालन बापु-निदेसू, छाँड़ि सकल बाधा-अंदेसू॥

साजनजनमनसा सदा, पूरन करैं रमेस।
देसभगत-मन तोस करि, टारैं सकल कलेस॥८८॥
नासैं सकल कलेस, मुदमंगल होवै सदा।
कृपा करैं कमलेस, बृद्धि होय धन-धान्य कर॥८९॥
न्यायसील नृप होयँ, प्रजा बसहिं सुखसन सबै।
मान करैं सब कोय, गो-द्विज-सन्त-सुरादिकर॥९०॥

उपसंहार

सिव - संकरपरसाद ते, लहि सुजनन-आसीस।
गांधिचरित पूरन कियो, ईस - चरन - नतसीस ॥१॥
बिद्याधर मतिमन्द हौं, माँगौं बर जगदीस।
मम मानस सन्मति लसै, नसैं भाव सब खीस ॥२॥
सन्तचरितचरचा सदा, मम रसना सों होय।
सन्त - चरित - संजीवनी, बृजिन - मूरछा खोय ॥३॥
सन्तचरित परभाव सों, पापनास ह्वै जाय।
जिमि रवि-कर आलोक सों, तिमिर सकल बिनसाय ॥४॥
सन्तचरितपरभाव ते, धरमनीति सरसाय।
निसाकाल बिधु-उदय जिमि, कुमुदजाल बिगसाय ॥५॥
सन्तचरितपरभाव ते, सुख पावैं सब लोक।
जथा निरखि दिनकर-प्रभा, सुखित होयँ बहु कोक ॥६॥
सन्तचरित सुभ अगद सम, हरै सकल हिय-रोग।
जिमि तन-संकट द्रुत हरै, जीवनमूरि - प्रयोग ॥७॥
सन्तचरितआलोक सों, लखि मारग निज लोक।
चलहिं सहज सतपंथ तजि, पाप-तिमिरकृत सोक ॥८॥
सन्तचरित महिमा अगम, छीरतोयनिधि - तूल।
सज्जन मज्जन करि गहैं, भावसुधा सुखमूल ॥९॥
अमृत-मन्थन जस कियो, देवदनुज मिलि दोय।
सन्त-चरित सों पायँ तिमि, लाभ सुजन खल दोय ॥१०॥

सुजन सुधा अरु लच्छमी, गहै भावसुभरूप।
दोसगरल अरु बारुनी, गहैं कुटिल खल-भूप ॥११॥
सन्तचरित उपबन जथा, बिहरैं पाठक लोक।
भावसुमन-आमोद सों, पायँ मोद तजि सोक ॥१२॥
दुरजन गनिय क्रमेल सम, कंटक - खोजन - लीन।
सरसभाव मृदु छाँड़ि कै, गहत दोस रसहीन ॥१३॥
सन्तचरित - चिन्तामनी, हियदारिद करि नास।
सकल सुगुन सुभ बित्त कर, करिहै बिमल बिकास ॥१४॥
सन्तन कर मो पै कृपा, होय सदा जगदीस।
धरम-प्रेम मन महँ बढ़ै, देवहु सुखद असीस ॥१५॥
नितप्रति सन्त-प्रसाद ते, जगपति करुनाकन्द।
भगति - सुधा - मंदाकिनी, मम हिय बहै अमन्द ॥१६॥
ता महँ मज्जन करि सदा, परिहरि बिसय-बिकार।
सन्तचरितगाथा बिमल, गावहुँ मृदु सुखसार ॥१७॥
प्रभुवर पाय प्रसाद तुव, बिद्याधर मतिहीन।
गांधिचरित पावन परम, सुजन-तोस-हित कीन ॥१८॥
गांधी-जस-गाथा बिमल, जे पढ़िहैं चित लाय।
मन-प्रसाद - सुख - सौम्यता, पावैं मनुज अघाय ॥१९॥
रामभजन महँ रति अटल, सत्य - अहिंसाप्रेम।
परकारज सुभ भावना, देसभगति कर नेम ॥२०॥
बिस्वप्रेम सुभ भावना, प्रानिमात्र सों नेह।
देवालय सम जानना, पावन मानव देह ॥२१॥
ब्रह्मचरज ब्रत धारना, तासु सुरच्छन हेत।
कोप-मोह-मद त्यागना, राग-बिराग समेत ॥२२॥

जमनिजमादिक साधना, रखना पूत बिचार।
क्रियासील रहना सदा, उचित अहार-बिहार ॥२३॥
सत्व अभय करुना छिमा, आर्जव तप अरु दान।
सत्य अहिंसा तेज दम, सौच अलोभ अमान ॥२४॥
चंचलता निंदा तथा, क्रोधभाव - परित्याग।
लज्जा मृदुता प्रेम अरु, धीरज सम अनुराग ॥२५॥
ग्यानजोग अभ्यास अरु, जग्य बेद कर पाठ।
दैवी संपत के सकल, गीतागत सुभ ठाठ ॥२६॥
तिन का पालन सर्वदा, असुरभाव - परिहार।
सत्याग्रह सुभ भावना, रिपु सन प्रेम-बिहार ॥२७॥
रखना निज अधिकार नित, रिपु सन करि संघर्स।
धरमजुद्ध महँ स्वार्थ कर, करना त्याग सहर्स ॥२८॥
सत्य - अहिंसा - प्रेमहित, सरबस देना वार।
धन - धरनी - संसारसुख, देस - जाति - परिवार। २९॥
निज सासन सुभ मानना, होय जदपि त्रुटिपूर्न।
परसासन सुखसांतिजुत, गनिय त्याज्य खलु तूर्न ॥३०॥
गांधिचरित सों पाय कै, अस पावन उपदेस।
देयँ सुमति जन जगत कहँ, सुमतिपूर्न संदेस ॥३१॥
जनम बरन पद बिभव सों, लहै न मानव मान।
आदर समुचित पावहिं, जो नर सुभगुन खान ॥३२॥
हरपौड़ी हर ना बसै, मथुरा माधव नाहिं।
दरसन करि लै राम को, दीनन के घट माहिं ॥३३॥
मंदिर जानिय राम को, नर अपंग की देह।
गनिय धरम ता कर परम, सेवा सहित सनेह ॥३४॥

दीन-दुखी जन देखि कै, द्रवत नहिन जे लोक।
कुलिस कठिन तिनके हिये, किमि जानैं परलोक ॥३५॥
छल तजि नित सेवा करौ, दीनजनन की मीत।
ईसरदस कर अहहि अस, सुन्दर सहज सुरीत ॥३६॥
दीनन सों जे हित करैं, निज स्वारथ तजि सन्त।
दीनबंधु सम होयँ ते, पावैं मोद अनन्त ॥३७॥
स्वारथ बिनु सेवा अहै, ईस-भजन सुभ-रीत।
करहु काज नित दीन हित, जो चाहौ हरि-प्रीत ॥३८॥
जिन को ब्रत उपकार ध्रुव, सेवा करम पुनीत।
सदा साधना साँच की, ते नर बिरले मीत ॥३९॥
जिन के हिरदे हर बसै, करम बसै कर माहिं।
दिल महँ बसै दयालुता, जगभूसन ते आहिं ॥४०॥
सेवा धरम बखानिये, सकल धरम सिरमौर।
सेवा पग-तर राखिये, बिस्वधरम सब और ॥४१॥
सत्य अहिंसा प्रेम अरु, बिनयभाव तप सील।
दयाभाव इन सों मिलै, प्रभुवर करुनासील ॥४२॥
तीरथ तप उपवास जप, करमकांड बहुरूप।
बिस्व-प्रेम सुभ भाव बिनु, होयँ अफलतरुरूप ॥४३॥
मानव-सेवा-भाव बिनु, प्रभु - पूजा - संभार।
निसफल होवहिं प्रान बिनु, मनुज-देह जस छार ॥४४॥
बिमल होय मानस-मुकुर, बिसय-बिकार - बिहीन।
ता महँ प्रभु-झाँकी लहै, मनुज प्रेम - रसलीन ॥४५॥
जन-सेवा निसदिन करै, स्वारथ-भाव - बिहीन।
जग्यभाव मन धारि कै, सो नर भगति-प्रबीन ॥४६॥

धरम बसै नहिं करम महँ, नाहिन ग्यान - बिचार।
धरम बसै नहिं भगति महँ, बसै प्रेम सुखसार ॥४७॥
बिस्व - प्रेम - सोपानसम, मानवप्रति सुभ प्रेम।
बिस्व-प्रेम महँ जानिये, ईसप्रेम कर नेम ॥४८॥
दीनबंधु प्रभुवर बिरद, सरनागत - प्रतिपाल।
दीनन सों जे हित करैं, तिन कहँ करै निहाल ॥४९॥
सब ते बड़ो रसायनी, जानिय स्री भगवान।
करै भावलघु-लोह कहँ, उत्तम हेम समान ॥५०॥
ईस कृपा ते पाय कै, सुमति-बिभव भरपूर।
मनुज सुखी होवै जथा, पाय मीन पयपूर ॥५१॥
करनकरावनहार प्रभु, करैं राव कहँ रंक।
निरधन कहँ बैठावहीं, पुनि कमला के अंक ॥५२॥
सतत करौ पुरुसार्थ तुम, तजि कै फल की आस।
प्रभु प्रति अरपन करन सों, बिफल न होय प्रयास ॥५३॥
सत्ता मानव की अहै, परिमित पेखहु यार।
करै जोउ अभिमान सो, गिरै अवसि सिरभार ॥५४॥
पतन-मूल अभिमान है, सरिततीरतरु तूल।
बिनय अहै बीरुध मृदुल, सोभित दल फल-फूल ॥५५॥
चलत प्रभंजन छिति गिरैं, देवदारु अरु तार।
लघु बीरुध निज बिनय सन, रहै अछत तृनसार ॥५६॥
विद्या कर लच्छन बिमल, अहै चरित-निरमान।
गनैं विनय कहँ तासु पुनि, उत्तम चिह्न सुजान ॥५७॥
कला सोउ सुभ जानिये, सोधै मनुज-अचार।
अवर गनिय बीभत्स अति, चरित - नसावनहार ॥५८॥

ग्यान-कला-विद्या सबै, मानव - मंडनरूप।
परहित कर सुभ भावना, सकल सिरोमनिरूप ॥५९॥
धरा-राज चाहौ नहीं, नहीं नाक-निरबान।
दीनदुखी जनकर सदा, करौं कस्ट-परित्रान ॥६०॥
साजन-जन-अभिलास अस, कथापुरान प्रमान।
शिवि-दधीचि-सम प्रानपन, करैं दीन दुखत्रान ॥६१॥
भारत महँ बरनन कियो, बेदव्यास स्रुतिसार।
पुन्य-मूल उपकार अरु, पाप-मूल अपकार ॥६२॥
साजन सहज सुभाव अस, करै धाय उपकार।
इन्दुकला ते सहजजस, द्रवत सुधा-रस-धार ॥६३॥
निरधन वाको जानिये, जा हिय प्रेम-अभाव।
धनी मनुज जोऊ करै, जग निज प्रेम-प्रभाव ॥६४॥
गाँव जिला पुनि प्रांत अस, देस-बिस्व परिवार।
साजन कर होवै सदा, प्रेम बृच्छ बिसतार ॥६५॥
आपुन-पर अस भावना, करै मनुज अनुदार।
निखिल बिस्व परिवार सम, मानव गनैं उदार ॥६६॥
दूर करै सठता सदा, साजन प्रेमप्रभाव।
करैं प्रेम सन बस तपी, स्वापद हिंस्रसुभाव ॥६७॥
करिय प्रेम सन खडग तजि, जग महँ सांति-प्रसार।
सक्ति अवर नहिं प्रेम-सम, हृदय - मिलावनहार ॥६८॥
अधिकाधिक नर जातिकर, होय जथा उपकार।
करम सोऊ साजन गनैं, गौरवपूर्न उदार ॥६९॥
मानव जीवन कर अहै, सार बिस्व-उपकार।
स्वारथमय खलु जानिये, नर - जीवन गतसार ॥७०॥

वैर - समनसाधन अहै, उत्तम भाव उदार।
जीव एकता भावमय, पावन प्रेम - बिचार ॥७१॥
सत्य-अहिंसा जानिये, सकल सुगुन सिरमौर।
सत्य-अहिंसा सन लहै, मानव पूजा-ठौर ॥७२॥
सत्य-अहिंसा दोउ गुन, धरिय तुला इक संग।
पलड़ो भारो साँच कर, प्राकृतनियम अभंग ॥७३॥
भाव अहिंसा कर अहै, सत्य मूल आधार।
सत्य बिना उपकारहू, गनिय निपट गतसार ॥७४॥
सत्य बिना सब जानिये, जगत पदारथ हेय।
गुन-समाज कहँ साँच इक, सोभा अनुपम देय ॥७५॥
धरम साँच बिनु ढोंग सम, न्याय साँच बिनु दंभ।
करमकांड पाखंडसम, गेह जथा बिनु थंभ ॥७६॥
साँच बिना आचार छल, भगति साँच बिनु छीन।
जप तप संजम सील सब, होयँ सुगुन स्रीहीन ॥७७॥
करहु अनृतजय साँच सन, हिंसा करि उपकार।
करहु कोप बस प्रेम सन, अस साजन-बिबहार ॥७८॥
असहयोग सठ सन करौ, घृना करौ नहिं नेकु।
दुस्टभाव तजि दुस्ट सन, गहौ प्रेम सुभ टेकु ॥७९॥
गनहुँ परम लज्जाजनक, बात एक संसार।
साँच बिना दूसित परम, भासन - भाव - अचार ॥८०॥
सत्याग्रहब्रत धारि नर, होय सबन को मीत।
वैरभाव छाँड़ै सकल, करै न कोउ अनीत ॥८१॥
स्वारथ तजि सेवा करै, छाँड़ि मान - अपमान।
हानिलाभ परिभव-बिजय, सुख-दुख गनै समान ॥८२॥

सुख-दुख दोऊ जानि कै, बिस्वनाथ कर देन।
सत्यब्रती समभाव सों, सेवत उभय सुखेन ॥८३॥
करना निज आदर्स-हित, निज जीवन बलिदान।
सत्यब्रती कर जानिये, पावन धरम महान ॥८४॥
सत्यसंध नर बृजिन सों, करै सदा मुठभेड़।
सहै अमित संकट तऊ, तजै न सत्पथमेंड़ ॥८५॥
रहै अटल गिरि मेरु सम, सत्याग्रह सुभ टेकु।
प्रबल प्रलोभन जगत के, बिचलित करैं न नेकु ॥८६॥
सत्यब्रती प्रभुभगतवर, छाँड़ि तुपुक तरवारि।
पापचमू सों रन करै, ईस - कृपाआधार ॥८७॥
बिजय पाय फूलै नहीं, हारे तजै न आस।
प्रभु-अरपन सुभ बुद्धि सों, संतत करै प्रयास ॥८८॥
सुख पाछे दुख होत है, दुख पाछे सुख होय।
ऊँच नीच नरभाग-गति, चक्रनेमिसम जोय ॥८९॥
होयँ सफल मानव सदा, ईस - कृपाआधार।
मानव निसठा-नाव कर, ईस - कृपा पतवार ॥९०॥
मरै उच्च आदर्सहित, अहै बीर नर सोय।
जो जीवै आदर्सहित, मनुज बीरतर सोय ॥९१॥
नर गनिये आदर्स बिनु, नौका बिनु पतवार।
निराधार किमि सहि सकै, बिसयप्रभंजन - मार ॥९२॥
थापहु प्रतिमा ईस की, मनमंदिर करि सुद्ध।
करहु काज उत्तम सदा, धरमभाव अविरुद्ध ॥९३॥
जलकन मिलि सागर बनै, मनुज मेल सन देस।
तासों मनुज-सुधार सों, सुधरै सिगरो देस ॥९४॥

प्रजा अहै जा देस कर, निज करतब महँ लीन।
प्रेमभावभूसित सदा, बैर - बिरोधबिहीन ॥९५॥
तहाँ सकल सुख-संपदा, सकल सुगुन-भण्डार।
लहि बिकास निसि दिन बढ़ैं, होय सुरग सुखसार ॥९६॥
सासकजन होवैं सदा, न्यायकरम महँ लीन।
आरतजन रच्छा करैं, होयँ कृपनता-हीन ॥९७॥
प्रजातन्त्र कर जानिये, लच्छन बिसद सुजान।
अवसर उन्नति करन कर, सब कहँ एक समान ॥९८॥
करैं सबै निज पेट हित, जो स्रम नर तजि खेद।
देस-हानि कर द्रुत नसै, ऊँच नीच कर भेद ॥९९॥
सत्य-धरम अरु प्रगति कर, बाधक छूआछूत।
देस - कलेवरहानिकर, अहै छूत को भूत ॥१००॥
नरजीवन कर लच्छ सुभ, तन-मन-आत्मबिकास।
वा के साधन हित मनुज, करै धरम-अभ्यास ॥१०१॥
परम धरम आचार है, स्रुति-स्मृति-निसचितजोउ।
करै मनुज कल्यान सुभ, दुहुँ लोकन महँ सोउ ॥१०२॥
अहैं महाजन-लोक कर, मन क्रम बचन समान।
मन क्रम बानी भिन्न अस, दुरजन कर पहिचान ॥१०३॥
बिमलभाव आचार बिनु, अहैं सदा गतसार।
सुन्दर अगद प्रयोग बिनु, करै न रुज - परिहार ॥१०४॥
उत्तम जन आचार कर, जानहु मूल अभंग।
सेवन जमनिजमादि कर, बेदपाठ - सतसंग ॥१०५॥
नर-समाज अरु देस कर, उन्नति कर सुभमूल।
सुभ बिचारमूलक सदा, करम धरमअनुकूल ॥१०६॥

बहु बिगयानिक उन्नती, भौतिक धन - संभार।
धरम बिना सुखप्रद नहीं, अहैं निपट गतसार ॥१०७॥
करि बिलास-साधन प्रचुर, संग्रह नर अनजान।
होय धरम बिनु हास्यपद, भूसित कीस समान ॥१०८॥
मानव-तन प्रभुवर दियो, तजन हेत पसुभाव।
नीचभाव परित्याग करि, गहौ ईस-अनुभाव ॥१०९॥
करतब-पालन सों मनुज, पावै निज अधिकार।
वा कर पुनि रच्छन करै, धरम - निजमअनुसार ॥११०॥
बहुमत अरु तरवार सों, बल-संचय जो होय।
सरिततीरथितबिटप सम, थिर नहिं होवत सोय ॥१११॥
बल-संचय थिर होत है, जासु धरम आधार।
जासु नींव थिर होय सो, जानहु थिर दीवार ॥११२॥
गनौ राज सोई सुथिर, जासु धरम सुभ नींव।
राज-प्रजा सुभ मेल सन, होय सतत सुखसींव ॥११३॥
प्रजा गनिय सासक सदा, भूप प्रजा कर दास।
अस बिध सासन देस महँ, होय सदा सुखरास ॥११४॥
जो नृप बस नहिं करि सकै, मन तजि बिसय-बिकार।
कहौ वहन किमि करि सकै, सोऊ सासनभार ॥११५॥
सासक बल होवै सुथिर, धरम - न्याय - अनुकूल।
प्रजासक्ति होवै सुथिर, सदा निजन्त्रनमूल ॥११६॥
रास्ट्रबादलच्छन अहै, रच्छन निज अधिकार।
न्याय-धरमअनुकूल नित, परसोसन - परिहार ॥११७॥
न्यायमूल करि आचरन, बिस्व - प्रेम - आधार ॥
सकल रास्ट्र मिलि प्रेम सन, करैं समर - परिहार ॥११८॥

मनुजमात्र होवैं सुखी, तजि सब रोग-बिकार।
सकल जगत कर भद्र सुभ, होय सोक - परिहार ॥११९॥
गाँधिचरितउद्यान सों, संग्रह करि कछु फूल।
साजनहियमंडन कियो, सुमनहार सुखमूल ॥१२०॥
करैं प्रमानित सोउ जौ, साजन करुनाकन्द।
विद्याधर मतिमन्द तौ, पावै मोद अमन्द ॥१२१॥

* इति *

महात्मा गांधीजी के जीवन की मुख्य घटनायें

१८६९—२ अक्तूबर को पुरबन्दर में जन्म ।

१८७६—राजकोट में शिक्षारंभ ।

१८८३—कस्तूरबाई से विवाह ।

१८८५—पिता की मृत्यु ।

१८८८—४ सितम्बर को शिक्षा के लिए विलायत जाना।

१८९१—१० जून को बैरिस्टर हुए, ७ जुलाई को बंबई पहुँचे; माता की मृत्यु का समाचार ।

१८९२—राजकोट तथा बंबई में वकालत ।

१८९३—अप्रैल में दक्षिणी अफ्रीका को प्रस्थान ।

१८९४—अफ्रीका में मुकद्दमे का पंच-फैसला ।

१८९५—नेटाल भारतीय कांग्रेस का संगठन; (नेटाल सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट)

१८८६—छः मास के लिये भारत-आगमन; गोखले आदि नेताओं से भेंट; राजकोट में महामारी-सेवासमिति द्वारा सेवा; २८ नवम्बर को लौटे ।

१८९७—डर्बन लौटने पर विरोध-प्रदर्शन; जीवन में महान परिवर्तन ।

१८९९—बोअर-युद्ध में अंग्रेजों की सहायता ।

१९०१—भारत-आगमन, कलकत्ता-कांग्रेस ।

१९०२—जून में दक्षिणी अफ्रीका को प्रस्थान ।

१९०३—ट्रान्सवाल-ब्रिटिश-इंडियन-एसोसियेशन की स्थापना।

१९०४—'गीताध्ययन'; इंडियन ओपिनियन का संपादन; रस्किन के 'Unto The Last' नामक पुस्तक को पढ़ने से जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन; फिनिक्स आश्रम की स्थापना।

१९०६—जुलू विद्रोह-घायलों की सेवा-ब्रह्मचर्यव्रत; 'सत्याग्रह' शब्द का आविष्कार।

१९०७—खूनी कानून के विरुद्ध सत्याग्रह।

१९०८—अंतरिम समझौता; पठान द्वारा आक्रमण; सत्याग्रह पुनः प्रारंभ; गिरफ्तारी।

१९०९—टाल्स्टाय को पत्र—शिष्टमण्डल में इंगलैंड को प्रस्थान; 'हिंद-स्वराज्य' की रचना।

१९१०—जोहान्सबर्ग में टाल्स्टाय फार्म की स्थापना।

१९१२—गोखले की अफ्रीका यात्रा; 'नीतिधर्म' प्रकाशन।

१९१३—सत्याग्रह फिर आरंभ, गिरफ्तारी व रिहाई; सात दिन का उपवास।

१९१४—१४ दिन का उपवास, समझौता, सत्याग्रह की सफलता। १८ जुलाई को इंगलैंड गये। ४ अगस्त से महायुद्ध; सरोजिनी नायडू से परिचय।

१९१५—भारत लौटना; 'कैसरे हिंद मैडल' की प्राप्ति; भारत-भ्रमण; १९ फरवरी को गोखले की मृत्यु, २५ मई को आश्रम-स्थापना।

१९१६—काशी विश्वविद्यालय स्थापना; लखनऊ कांग्रेस; जवाहरलालजी से भेंट।

१९१७—राजेन्द्र बाबू से भेंट, १७ अप्रैल को चम्पारन सत्याग्रह, ३१ मई को गिरमिटिया कानून रद्द; ३० जून को दादाभाई नौरोजी की मृत्यु; आचार्य कृपलानी व महादेव देसाई से मिलाप।

१९१८—अहमदाबाद में मिल-मज़दूरों की हड़ताल; खेड़ा सत्याग्रह; चर्खे का पुनरुद्धार।

१९१९—रौलट कानून; ६ अप्रैल को प्रार्थना और उपवास दिवस; १३ अप्रैल जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड 'यंग इण्डिया', 'नवजीवन' का संपादन; खिलाफत, अमृतसर कांग्रेस।

१९२०—१ अगस्त तिलक की मृत्यु; असहयोग आंदोलन।

१९२१—राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना, प्रिंस आफ वेल्स के आगमन के कारण दंगा-अशांति; ५ दिन का उपवास; अहमदाबाद कांग्रेस।

१९२२—चौरीचौरा काण्ड; सत्याग्रह स्थगित; ५ दिन का उपवास; १० मार्च कारावास, ६ वर्ष का दण्ड।

१९२४—Appendicitis का आपरेशन; ५ फरवरी को रिहाई; बेलगाँव कांग्रेस के अध्यक्ष।

१९२५—हिंदू मुसलिम एकता के लिए २१ दिन का उपवास; १६ जून को देशबन्धु दास की मृत्यु; एक सप्ताह का उपवास; कानपुर कांग्रेस; अखिल भारतीय चर्खा-संघ की स्थापना।

१९२६—स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या।

१९२७—२९ दिसम्बर को हकीम अजमल खाँ की मृत्यु।

१९२८—सायमन कमीशन; बारदौली सत्याग्रह; १७ नवम्बर लाला लाजपतराय की मृत्यु; नेहरू रिपोर्ट; कलकत्ता कांग्रेस।

१९२९—लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव।

१९३०—२६ जनवरी को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा; १२ मार्च को नमक कानून तोड़ने के लिये डांडीयात्रा; गिरफ्तारी।

१९३१—२५ जनवरी को रिहाई।

१९३१—६ फरवरी को पण्डित मोतीलाल नेहरू की मृत्यु; कराची कांग्रेस; ४ मार्च को गांधी-अर्विन पैक्ट; २४ मार्च को भगतसिंह को फाँसी; २५ मार्च को गणेश-शंकर विद्यार्थी का बलिदान; दूसरी गोलमेज कान्फ्रेंस।

१९३२—सत्याग्रह फिर से आरंभ; कांग्रेस गैरकानूनी घोषित; ४ जनवरी को गिरफ्तारी; 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' बंद; २० सितम्बर को यरवडा पैक्ट; २६ सितम्बर को उपवास समाप्त।

१९३३—८ मई से २१ दिन का उपवास; 'हरिजन' पत्रों का प्रारम्भ; रिहाई, फिर गिरफ्तारी, एक वर्ष की सजा; १६ अगस्त को आमरण उपवास, जो एक सप्ताह चला; २३ अगस्त को रिहाई; २२ सितम्बर को विट्ठलभाई पटेल की मृत्यु; साबरमती आश्रम का त्याग; ७ नवंबर से हरिजन यात्रा।

१९३४—बिहार भूकंप; ७ अगस्त को सत्याग्रह स्थगित; ७ दिन का उपवास; बंबई कांग्रेस; २६ अक्तूबर को ग्रामोद्योग संघ की स्थापना।

१९३५—कांग्रेस की स्वर्णजयन्ती।

१९३६—सेवाग्राम आश्रम की स्थापना।

१९३७—जुलाई में कांग्रेस का पद-ग्रहण।

१९३९—राजकोट में आमरण अनशन—वायसराय के हस्तक्षेप से ४ दिन बाद बंद; त्रिपुरी कांग्रेस, सुभाष बाबू का कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र; ३ सितम्बर को द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ; ८ नवंबर को प्रान्तों में कांग्रेस सरकारों द्वारा पदत्याग।

१९४०—११ अक्तूबर से व्यक्तिगत सत्याग्रह। विनोबा प्रथम सत्याग्रही; 'हरिजन' पत्रों पर रोक।

१९४१—७ अगस्त को रवीन्द्रनाथ ठाकुर की मृत्यु; कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्ति।

१९४२—कांग्रेस का फिर से नेतृत्व; ११ फरवरी को सेठ जमनालाल बजाज की मृत्यु; क्रिप्स मिशन; ८ अगस्त को —'भारत छोड़ो' प्रस्ताव; नेताओं की गिरिफ्तारी; १५ अगस्त को महादेव भाई की मृत्यु।

१९४३—आगाखाँ महल में २१ दिन का उपवास।

१९४४—२२ फरवरी को कस्तूरबागांधी की मृत्यु; ६ मई को जेल से रिहाई; गांधी-जिन्ना वार्ता।

१९४५—पहली शिमला कान्फ्रेंस।

१९४६—कैबिनट मिशन; मुसलिम लीग द्वारा १६ अगस्त को 'सीधी कार्यवाही' दिन; देश भर में साम्प्रदायिक दंगे।

१९४७—नोआखाली की पैदल यात्रा; कलकत्ता में ७२ घंटे का उपवास।

१९४८—दिल्ली में आमरण उपवास, जो ५ दिन चला ; ३० जनवरी को महाप्रयाण ।

हे राम !

एकादश व्रतः—

अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसंग्रहः ।
शरीरश्रम अस्वादः सर्वत्रभयवर्जनम् ॥
सर्वधर्मसमानत्वं, स्वदेशी स्पर्शभावना ।
एकादश इमे भावाः सेवायां व्रतनिश्चये ॥

सत्य अहिंसा स्तेय-अभावा,
ब्रह्मचरज गतसंग्रहभावा ।
तनुस्रम स्वाद-त्याग भयवर्जन ॥
सरब धरममतभेद-विवर्जन ॥
सतत सुदेसी सन अनुरागा,
बहुरि अछूतभावपरित्यागा ।
सेवा कर अस व्रत सुखदाई,
मानव कर नित करहिं भलाई ॥